छन्द शास्त्र का अनुपमेय ग्रन्थ

भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकर

लेखकः—

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय ब्रह्मनिष्ठ निर्मलभेष भूषण श्री श्री

१०८ स्वामी मेहर सिंह जी महाराज

प्रकाशकः—

श्रीयुत महन्त वरयाम सिंह जी

ऋषि आश्रम जगरांव ज़ि० लुधियाना (पंजाब)

विषयानु क्रमणिका

भूमिका

वेद का पर्याय शब्द छन्द है, हमारी प्राचीन सभ्यता एवं ज्ञान विज्ञान के भण्डार सम्पूर्ण ग्रन्थ छंदो बद्ध हैं यहाँ तक कि आयुर्वेदिक तथा ज्योतिष शास्त्र (जिन में औषधियों के नाम तथा गणित का बाहुल्य है) भी छन्दों में हैं इस से छन्द की महत्ता प्रकट है। कई लोग कहते हैं कि छन्दों में भाव पूर्णतया प्रकट नहीं किए जा सकते यह बात हमें मान्य नहीं क्यों कि कवित्व शक्ति एक नैसर्गिक शक्ति है। कवि को पद्य निर्माण में कोई कठिनता का अनुभव नहीं होता। इसी लिये आज तक मुक्त कविता इतनी भाव पूर्ण नहीं हो पाई है जितनी पद्यमय। क्या काली दास एवं तुलसी दास जैसी भाव पूर्णता आधुनिक मुक्त कविता के अनुयायिओं में आ पाई है ? यदि नहीं तो उपरोक्त मत की सत्यता सन्दिग्ध है

दूसरी बात यह है:—पद्य में कविता के पढ़ने से ही वक्ता एवं श्रोता आनन्दानुभव कर सकते हैं। छंद एक प्रकार का संगीत है। संगीत की महत्ता छंद की महत्ता है

कण्ठस्थ करने के लिये भी छन्द अनुपम है। गद्य का कण्ठस्थ करना दुस्तर ही नहीं अपितु असम्भव है। पद्य मय सम्पूर्ण श्रीमद्भगवगीता कण्ठस्थ होना सरल है किन्तु गद्य में एक अध्याय भी असम्भव है। फिर यह कण्ठस्थ पद्य जहाँ समय पर आत्मोद्धार में सहायक हैं वहाँ वक्ता की वक्तृता के प्राण हैं।

इतने महत्व पूर्ण छन्द का ज्ञान न केवल रचना के लिए अपितु शुद्धोचारण द्वारा वास्तविक अर्थ लगाने के लिये भी आवश्यक है। संस्कृत भाषा में आचार्य पिङ्गल ने छन्द शास्त्र की रचना की किन्तु हिन्दी में जो भी छोटी मोटी पुस्तकें छंद शास्त्र की लिखी गईं उनमें पूर्ण विवरण नहीं यहाँ तक के बृत्तरत्नाकर आदि संस्कृत ग्रन्थों में इतने प्रत्ययों का उल्लेख भी नहीं जितनों का प्रस्तुत पुस्तक में सविस्तार विवरण है। इसके साथ साथ प्रान्तीय गजलादि के विवरण के समावेश करने से यह पुस्तक उपयोगिता की दृष्टि से अनन्वयालङ्कार का उदाहरण बन कर अनुपमेय है।

यह पुस्तक केवल लक्षण ग्रन्थ ही नहीं अपितु स्थान स्थान पर मार्मिक उपदेश देकर जिज्ञासु पुरुषों का पथ प्रदर्शन करती हुई साम्प्रदायिकता एवं संकीर्ण धार्मिकता के बन्धनों से मुक्त करके परमानन्द के साधन बता कर निज स्वरूप के समझने में सहायक होती है संकीर्ण धार्मिकता पर निम्न पद्य कितना आघात करता है।

कौन को हरन करे कौन की शरण परे
मत तक आवते करन कतलाम के पृ० ८

संसार की अनित्य एवं क्षण भङ्गुर वस्तुओं की चमक में फंसने वाले मनुष्य को सचेत करने के लिये, बीच बीच में सुन्दर पद्यों की रचना की गई है। जैसे:—

जरा दिल सोच ऐ गाफिल यह दुनिया छोड़ जानी है पृ० १५१

संस्कृत के विशेष विशेष छन्दों एवं अलङ्कारों को उद्धृत करके उनका अनुवाद कर के छन्द एवं अलङ्कार के आवश्यक सम्बन्ध को प्रमाणित कर दिया गया है। कुछ अलङ्कार श्री स्वामी द्वारा लिखित प्राप्त हो गये थे उन का भी समावेश कर दिया गया है।

इस पुस्तक की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इस में छंद का लक्षण ही उदाहरण है और वह भी चारों पदों में अन्य ग्रन्थों के एक पद्य में बताया जाता रहा है जैसे

संस्कृत (एक पाद में)

रसै रुद्रै श्छिन्ना यमनसभलागः शिखरणी

इस पुस्तक में (चार पादों में)

लखो आधं भूमी नगन सगना साम जिस में
पुना अन्ते देखो लघु गुरु परा ठीक इस में
पदं चारे देखो कविमन निवेस करषणी
सही भाषे रस विरत सुनिए सो सिखरणी

शब्द चयन में स रङ्ग शब्द की अनेकार्थता अलङ्कारों में केवल क अक्षर से छंद रचना, पद्म बन्ध में एक छन्द से ४८ छन्दों का निर्माण आदि विशेषताएँ हिन्दी में तो अपूर्व हैं ही संस्कृत में भी बहुत कम मिलती हैं।

इस पुस्तक की भाषा मिश्रित एवं सधुकड़ी है इस लिये जन साधारण भी थोड़े परिश्रम से इसे समझने में समर्थ हो सकता है।

मेरे विचार से इस पुस्तक का प्रकाशन बहुत से व्यक्तियों के लिये लाभप्रद होगा इसके लिये श्री परम पूज्य महन्त वरयामसिंह के साहस की सरहना करनी चाहिये और सभी को उन का आभारी होना चाहिये जिनकी प्रेरणा से यह पुस्तक छपने जा रही है क्योंकि यह पुस्तक श्रीयुत पूज्य ब्रह्म निष्ट स्वामी मेहरसिंह जी ने तो आज से ३०, ३५ वर्ष पूर्व बाल्य एवं यौवन के सन्धिकाल में लिखी थी उन की इच्छा छपवाने का भी नहीं थी किन्तु महन्त जी की प्रेरणा से उन्हों ने इस का छपवाना स्वीकार कर लिया जिस के परिणाम स्वरूप आज यह पुस्तक आपके हाथों में आ सकी।

यह पुस्तक छन्द शास्त्र के जिज्ञासुओ, भक्तों ज्ञानियों और विशेषतः विद्यार्थी महात्माओं के लिये विशेष लाभप्रद होगी ऐसा निश्चय है।

पानीपत

२६-१०-५६

विनीतः—

विष्णु शास्त्री

॥ श्री परमात्मने नमः ॥

अथ भाषा पिंगल प्रस्तार छन्द दिवाकर प्रारम्भ

प्रथम भाग

मङ्गला चरण

दोहा

ॐ सो मङ्गल करणहित हरण सर्व दुंख मूल ।
जां चिन्तन बिन होत नह देवन के अनुकूल ॥१॥
नमस्कार है देव को है देवन को देव ।
देव भेव जाने नहीं ॐ परमात्म देव ॥२॥
सत् चित आनन्द एक रस जास धरा अवतार ।
निज इच्छा अनुसार ते होत बहुत परकार ॥३॥
जैसी जिसकी भावना तैसा तिसको देव ।
देव सेव ते रीझहै जानत मन को भेव ॥४॥

॥ अनङ्ग शेखर छन्द ॥

नमस्कार नानकं वपुं धरे गोविन्द को,
सु हाथ जोड़ के करी कटे सुकाल फन्द को।
सतं चुगे ह्व वावने सुखी करा सुरिन्द को,
द्वार पाल है भयो पताल आ सुरिन्द को।
त्रिते हरि धरावतार नाम राम चन्द को,
सुनारि पावनी करि लगा पदारविन्द को।
जुगम् दुता यदुपती सती रखी दरोपदी,
*रती विना रतीक है रती दिओ कविन्द को ॥५॥

दोहा

भेद व्यक्ति के भय, नहि स्वरूप में भेद।
इस विधि अङ्ग जाने विना, पावत है जग खेद ॥६॥

सोरठा

पराचीन मरज़ाद देवी का मङ्गल करे।
बहुत ग्रन्थ के आदि सो कवि कीन विचार कछु ॥७॥

कवित

देव देवी रूप धर दैत्यन को मार कर,
धरा को उतार भार जानी है कहानी मैं।
हानि मैं न आपनी है इस विषे जानी कछु,
वर दानी जानी पढ़ जानी है पुरानी मैं।

---

*प्रीती

रानी में ते अम्बका भवानी में न भेद कछु,
और भी अनेक नामी वानी है पछानी में।
†छानी में न बात विदितानी है ज्ञानी जानी,
कवि वर दानी और मोख दानी जानी में।

प्रश्न ?

यदि देवी भगवती मोक्ष दातृ है तो पीपे भगत को मोक्ष क्यों न दिया ? उलटा काशी में स्वामी रामानन्द जी के पास भेजा तो इस शङ्का के उत्तर का एक सवैया कहते हैं।

सवैया

यद्यपि पीपे ने देवी की सेवन मोख लई यह जानत सारे
तद्यपि जानत हो बुद्धिमान मिले फल भावन के अनुसारे
सन्त से बात सुनी जब राति तो मोक्ष की आस भई* भिनुसारे
देवीने भेद की भावना पेख किया उपदेश तो काशी सिधारे

तात्पर्यः—भावना मय ही देवता है तो जीवों की भावना के अनुसार ही फल देता है। पहले पीपा जी की मुक्ति की इच्छा ही नहीं थी पीछे मुक्ति की उत्कृष्टता सुन कर मुक्ति की इच्छा अति तीव्रता से जाग उठी तब देवी के पास प्रार्थना की तो देवी ने कहा, "यदि मुक्ति की इच्छा है तो काशी में श्री स्वामी रामानन्द जी की सेवा करो"

---

†छिपी हुई

सवैया

वट्टे से लूण कुट्टे तिरलोचन,
सो भव मोचन जाट के होए।
नामेंको ठाकुर नाने को पाथर,
आखिर भावना देवसु जोए।
ठाकुर को चरणोदक जान,
करि विषपान अमी सम होय।
ज्यों कवि के मन में उपजी,
जो रुचि सु हुती इम नैन §अलोए

अर्थ स्पष्ट है भाव यह है:- ठाकुर वही था पर त्रिलोचन की भावना में पत्थर था और धन्ने केलिये ठाकुर। नामदेव का ठाकुर नाने वामदेव केलिये पत्थर था। भावना से ही मीरावाई ने चरणोदक जान ज़हर पान कर लिया सो अमृत हुआ ऐसा प्रसिद्ध है।

कवित

सारङ्ग[1] चरन[2] वारी[3] सारङ्ग[4] चरन[5] वारी
सारङ्ग[6] चरन[7] वारी सारङ्ग[8] वरन[9] की

---

§सभी देखते हैं १ कमल सम २ पाद ३ वाली ४ हाथी ५ चढ़ना ६ सिंह ७ चढ़ने वाली ८ उज्जल ९ रंग

सारङ्ग[10] वर्ण[11] वारी सारङ्ग[12] अरुन[13] वारी,
सारङ्ग[14] चरन[15] वारी सारङ्ग[16] धरन[17] की
सारङ्ग से[18] नैन वारी सारङ्ग से[19] बैन वारी
सारङ्ग[20] से चैन[21] वारी सारङ्ग[22] हरन की
सारङ्ग[23] वदन[24] वारी सारङ्ग[25] रदन[26] वारी
सारङ्ग[27] सदन[28] वारी लाज पै शरन की

पुनः कवित

कोई कोई कवि जब मङ्गल करत तब,
सब से अधिक वर[1] वाणी के उचारे हैं।
चारों हैं जो खान, ताकी खानी है बखानी
तीनों देव उपजानी जग जानी पारे[2] मारे हैं।

---

१० स्त्री के ११ रूप १२ वस्त्र १३ लाल १४ हाथी के
१५ सूण्ड से उत्कृष्ट १६ तलवार १७ धारण १८ ममोले से
१९ कोकिल से २० पृथ्वी सम २१ धीरज २२ सुन्दरता
२३ चन्द्रमा से २४ मुख २५ उजल २६ दान्तों
२७ पहाड़ों में २८ घर (भाव मन्दिर)
१. श्रेष्ठ २. पालना करती है

मारे हैं मरत जोई तारे हैं तरत सोई,
कोई न अपर[१] जोई आप को निवारे हैं।
वारे[२] हैं न उपमा यथार्थ उचारे वाक,
चेतन को शक्ति मुनीश कहे सारे हैं।

पुनः दोहा

शक्ति एक स्वरूप में कलपे नाम अनेक।
लच लखे विन वाद जिम सो हम कीन विवेक।

दृष्टान्त (कवित)

जैसे कृषिकार[३] के विचार विन चार पूत,
वार वार रार[४] करें दैत्य क्यों जिसन है।
गन्दम गोधूम गेहूं कणक कलप लीन,
कीन जो विचार फेरि शान्ति ज्यों विशन है।
तैसे ही विचार विन सार[५] न निहार कर,
रार से परसपर दुखी ज्यों पिसन[६] है।
राधे जो कृष्ण से रकार शक्ति निकार.
कवि कहे बाक़ी रहे आधे ही कृष्न है।

प्रश्न—यदि परमात्मा एक है तो संसार में अनेकता का सहारा लेकर इतना विवाद क्यों ?

---

१ और २ वाले ३ किसान ४ झगड़ा ५ रहस्य
६ चुगलखोर

उत्तर—एक कृषक के चार पुत्र थे जिन में से तीन बाल्यावस्था में ही विदेश चले गए थे पीछे कृषक की मृत्यु हो गई। जब सभी पुत्र लौटे तो विचार करने लगे कि अब भूमि में क्या बोना चाहिए पहला (संस्कृत जानने वाला) बोला गोधूम बोना चाहिए दूसरा (फारसी का विद्वान) बोला गन्दुम अच्छा है तीसरे ने गेहूं की राय दी चौथा कणक बोने के लिए हठ करने लगा। इस तरह अपनी अपनी बात मनवाने के लिये लड़ने लगे। एक विद्वान ने सभी को अपनी अपनी इच्छा के बीज लाने को कहा। बीज लाने पर उसकी एक रूपता को देख कर सारे लज्जित हुए और लड़ाई से विरत हो गये। इसी तरह अज्ञानी परमात्मा के वास्तविक स्वरूप से अपरिचित होने के कारण लड़ते रहते हैं। परमात्मा के अनेक नाम-हैं, उस की चेतन शक्ति के विना कार्य सिद्धि असम्भव है। जैसे राधा कृष्ण शब्द से रकार हटा देने से आधे कृष्ण रह जाता है इसी तरह माया विना कार्य सफल नहीं होता। उस चेतन शक्ति के नामों में विविधता होते हुए भी स्वरूप में एक रूपता है।

तोटक छन्द

शकती विन कारज होत नहीं, हंसना ती क्या पर रोत नहीं
शकती सब कारज कारण में, कछु भेद न नाम उचारण में

अर्थ स्पष्ट है भाव यह है:— यद्यपि चेतन समान रूप से सर्वत्र व्यापक है तो भी जिज्ञासु किसी एक मत को ग्रहण करे जिस में किसी अन्य मत की ग्लानी न हो उसी में प्रवृत्त पुरुष

इस तरह से संसार-समुद्र पार कर लेता है जैसे किसी एक नाव का आश्रय लेने वाला पुरुष भौतिक सागर को।

कवित

कौन को हरन[१] करे कौन की शरण परे,
मत तक[२] आवते करन कतलाम[३] को।
लाम[४] को करन सिख राम नाम कान सुन,
फते सुन दुखी हैं जपान हारे राम के।
राम को उचारे केड़ा फेर छुटकारा पावे,
दावेदार बैठे अजे राधे घनश्याम के।
शाम के कहन केहड़ा लैन है अराम देन,
हक्कदार बैठे बाकी दीन इसलाम के।

ऐसी अवस्था में स्वाभिप्राय को सूचन करते हैं

कवित

अल्ला लामुकाम सब आखदे मुसलमान,
हिन्दु आम राम नाम जाप करे हरी दा,
देवन के देव तेरा पांवदा न भेद कोई,
हमें न खबर कैसे जाप ताप करी दा
कली काल हाल अब हो गया खराब सब
कागज़ी हिसाब करें फेर नहीं तरीदा,

---

१ त्याग २ देख कर ३ मारने को ४ युद्ध

आगे वी मेहर सिंहा तारे वे शुमार,
एक अरज़ गुज़ारे ते न जम कोलों डरी दा।

इति कवि वर मेहर सिंहेन विरचिते भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे प्रथम भागे मङ्गला चरण निरुपणं नाम प्रथम प्रकाशः

॥ ॐ परमात्मने नमः ॥

अथ द्वितीय प्रकाश

सोरठा

पिङ्गल सिन्धु अपार कठिन रीति जल खार सम।
वादल गुरु मुख द्वार छन्द अमी सम होत है।

अथ अनुवन्ध चतुष्टय

दोहा

पराचीन की रीति यह, वहुत अचारज लोग।
कहित चार अनुवन्ध को, तां विन कहत अयोग।

पुनः चौपाई

अव हम कहित चार अनुवन्ध, अधिकारी अरु विपय सम्वन्ध
चतुरथ है परयोजन जान, चतुर नाम इम कहैं सुजान॥

कवित्त

छन्द निर्माण पहचान की जो इच्छा होय,
शुद्ध वुद्धि होय सो सुजान अधिकारी है।

कविता के अङ्ग प्रस्तार आदि विषय जामे,
छन्द बोध होत परयोजन विचारी है ।
ग्रन्थ और विषय का सम्बन्ध प्रतिपाद्य आदि,
और भी सम्बन्ध जो अनेक परकारी है
शङ्का समाधान ओर नहीं है ध्यान मोर
अन अपयोगी कहे मत न हमारी है ।

इति अनुबन्ध समाप्त

॥ अथ छन्द शास्त्रमें प्रत्यय विचार ॥

छन्द ग्रन्थों में नौ प्रत्यय कहे हैं। प्रत्यय उसे कहते हैं जिससे वृत प्रस्तारादिकों का ज्ञान हो, उसे वृत (छन्द) अङ्ग भी कहते हैं। प्रत्ययों के नाम यह हैं :— १] प्रस्तार २] संख्या ३] सूची ४] पाताल ५] नष्ट ६] उदिष्ट ७] मेरु ८] पताका ९] मर्कटी इनमें से भी कई लोग चार प्रत्यय मानते हैं अन्य पाश्व कई छः दूसरे सात तथा कई आठ प्रत्ययों को मानते हैं। कई खण्ड मेरु को भिन्न प्रत्यय मान कर दस प्रत्यय भी कहते हैं और दूसरे इस से भी अधिक मानते हैं अस्तु ! इस में आग्रह निर्मूल है। इति

अथ प्रस्तारादि प्रत्यय सामान्य निरुपणम्

कवित

वृत्त विस्तार है विचार प्रस्तार बीच,
भेद बीच वेद छन्द संख्या उचारी है।
सूची जो स्वरूपन में सूचन करत अङ्क
आदि और अन्त लघु दीरघ सिवारी है।
सारे लघु दीरघ का हाल तो पाताल कहे,
छिपे हुए रूप नष्ट करे उजियारी है।
संख्या जो रूप की अदृष्ट को स्पष्ट करे,
ताहि को उदिष्ट रहें कोविद विचारी है।

टीका

प्रथम प्रस्तार प्रत्यय छन्द के विस्तार का हेतु है, दूसरा संख्या प्रत्यय छन्दों के भेद का सूचक है, तीसरा सूची प्रत्यय छन्द के आदि अन्त में गुरु लघु का बोधक है, चौथा पाताल प्रत्यय सम्पूर्ण लघु और गुरुओं का बोधक है। जो लुप्त रूप को प्रकट करे उस को पञ्चम नष्ट प्रत्यय कहते हैं और जो प्रकट रूप की लुप्त संख्या को कहे उसे षष्टम उदिष्ट प्रत्यय कहते हैं। इति

पुनः कवित

जेते जेते लघु गुरु चाले हैं सरूप जेते
तेते ही समेट देखे मेरु ते नज़ारे हैं।

जगह जो सरूप की पताका ही बतावे ठीक,
लघु और दीरघ के भेद को उचारे हैं।
आदि अङ्क अन्त कला पिण्ड को निसङ्क कहे
मर्कटी समान देत सब को हुलारे हैं।
इतनों विचार कोई पश्च सात आठ कहे,
और भी अनेक प्रकार से उचारे हैं।

टीका

सारांशः—सप्तम मेरु प्रत्यय है जैसे पर्वत पर चढ़ कर दूर के पदार्थ भी समीप प्रतीत होते हैं वैसेही मेरु प्रत्यय से भी एक एक लघु गुरु वाले कितने रूप हैं और दो दो चार चार आदि लघु गुरु वाले कितने रूप हैं यह पता लग जाता है। जैसे ध्वजा के वस्त्र पर लिखा हुआ लेख साफ़ साफ़ नज़र आता है वैसेही अष्टम पताका प्रत्ययसे छन्दों के सरूपों के स्थान का ज्ञान होता है। नौवां मर्कटी प्रत्यय है। यहां मर्कटी पद श्लिष्ट है अर्थात् मर्कटी नाम मर्कटी प्रत्यय का भी है और वानरी का भी। जैसे वानरी वृक्ष पर चढ़ कर पत्ते पत्ते का पता करती है वैसे ही यह मर्कटी भी लघु गुरु आदि अन्त, सर्व अङ्क मात्रा और पिण्ड का पता देती है।

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे प्रथम भागे अनुबन्धचतुष्टयादि निरूपणम्नाम द्वितीय प्रकाशः

अथ प्रस्तार प्रत्यय का विशेष निरुपण

वह प्रस्तार, भेद से तीन प्रकार का है एक तो मात्रिक दूसरा वर्णिक, और तीसरा गण प्रस्तार है। प्रथम मात्रिक प्रस्तार भी सम विषम भेद करके दो प्रकार का है अब हम मात्रिक प्रस्तार करने की रीति कहते हैं यथाः- प्रथम जितनी मात्रा का प्रस्तार करना है तो वांछित मात्रा से अर्ध गुरु मात्रा लिखो जब विषम मात्रा हो तब अर्ध संख्यक गुरु मात्रा लिख कर बाँईं ओर एक लघु मात्रा लिखो फिर ऊपर से नीचे को प्रस्तार उतारो जैसे आदि गुरु के नीचे लघु धरकर दूसरे ऊपर के रूप ही उतारे फिर जितनी मात्रा प्रथम रूप में से घटें उतनी मात्रा बाँईं ओर धरो अर्थात् जब एक मात्रा कम हो तब एक लघु मात्रा धरकर पूरी करो और जब दो मात्रा कम हो तब एक गुरु मात्रा बांई ओर धरकर पूरी करो जब तीन मात्रा घटें तब एक गुरु और एक लघु मात्रा धरकर पूरी करे जब चार मात्रा घटें तब दो गुरु मात्रायों को धरकर पूरी करे और जब पाञ्च मात्रा हो तब दो गुरु एक लघु मात्रा को बांई ओर धरकर पूरी करे अब अधिक क्या कहूँ कि पहले रूप से जितनी भी मात्रा घटें तब सम मात्रा से तो अर्ध गुरु करके धरे और जब विषम मात्रा घटें तब दो दो लघुओं का एक एक गुरु करके धरे और यदि एक लघु मात्रा बचे उस को सर्व मात्रा के आदि में धर कर पूरी करे। ऐसी क्रिया तब पर्यन्त करते

जावो जब पर्यन्त सर्व लघु नहीं आ जायें सर्व लघु पर ही प्रस्तार की समाप्ति है।

अथवा

पूर्वोक्त मात्रा धरकर दांए से वांई ओर को ऊपर से नीचे को प्रस्तार उतारो और तो आदि में ऊपर के सर्व रूप ही उतारे परन्तु अन्तिम गुरु के नीचे एक लघु लिखो ऐसा करने से सम मात्रा के प्रस्तार में से एक मात्रा कम रहेगी। उसको वांई ओर अन्त में धरो यदि विषम मात्रिक प्रस्तार हो तब वांई ओर अन्त गुरु के अन्त में नीचे एक लघु धरे शेष बचे एक लघु जो मात्रा उस को अन्तिम लघु साथ मिलाकर गुरु करके अन्त में नीचे धरे ऐसे करते करते जब अन्तिम गुरु के अन्त में जितने सम लघु आ जायें उतने दो दो लघु मिलाकर एक एक गुरु हो जाता है परन्तु अन्तिम गुरु के आदि में सम विषम लघुओं के गुरु नहीं होते यह सङ्केत है ऐसे प्रस्तार करते २ अन्त सर्वलघु होने पर प्रस्तार की समाप्ति होती है।

अथवा पूर्वोक्त मात्रा धरकर वांए से दांई ओर ऊपर से नीचे को प्रस्तार का प्रारम्भ करो तो आदि गुरु के नीचे दो लघु धरो और परे ऊपर के रूप ही उतारो और जब आदि गुरु के आदि में एक लघु हो तब वह लघु आदि गुरु की एक लघु मात्रा के साथ मिलकर गुरु होकर नीचे उतरता है परे आदि गुरु का बचा एक लघु सो उसके नीचे उतरता है परे ऊपर के

रूप ही नीचे उतारो और वांई ओर आदि गुरु के आदि में जितने भी लघु हैं वे सर्व दो दो लघु का एक एक गुरु हो जाता है और जब आदि गुरु के आदि में सम लघु हो तब आदि में एक लघू रहेगा। शेष विषम लघू आदि गुरु के लघू साथ मिलकर सम होकर गुरु हो जाते हैं। एक लघू उस गुरू के नीचे रहेगा परन्तु आदि गुरू के दांई ओर के लघू गुरू नहीं हो सकते यह संकेत है। ऐसा करते करते अन्त में सर्व लघू होने पर प्रस्तार की समाप्ति होती है

छन्द शास्त्र के आचार्यों के मत में प्रस्तार करने की अनेक रीतियां हैं वे सभी ही मानने योग्य हैं परन्तु हमारी रीति यह है। जब दांएं से वांई ओर को ऊपर से नीचे को प्रस्तार करें तब और तो सभी ऊपर के ही रूप नीचे उतारें परन्तु अन्तिम गुरू के नीचे एक लघु रखकर शेष जितने लघु हों उन में दो दो का एक गुरू करके धरें। जब एक लघु शेष रहे तो उसको ही रखकर मात्रा पूरी करें। ऐसा करते २ जब सर्वलघु हो जायें तब प्रस्तार की समाप्ति जानो।

एक मात्रा से लेकर पांच मात्रा पर्यन्त साधारण तथा विपर्यय प्रस्तार का चित्र और रीति

साधारण

मात्रांक	१	२	३	४	५
रूपाङ्क१	I	S	IS	SS	ISS
२	१	II	SI	IIS	SIS
३		२	III	ISI	IIIS
४			३	SII	SSI
५				IIII	ISI
६				५	ISII
७					SIII
८					IIIII ८

विपर्यय

मात्रांक	१	२	३	४	५
रूपाङ्क१	I	S	SI	SS	SSI
२	१	II	IS	SII	SIS
३		२	III	ISI	SIII
४			३	IIS	ISS
५				IIII	ISII
६				५	IISI
७					IIIS
८					IIIII ८

साधारण:- इस प्रस्तार चित्र में ऊपर के अङ्क मात्रा सूचक, पहले कोष्टक में (ऊपर से नीचे) रूप संख्या और पहले कोष्टक के अतिरिक्त शेष सभी के अन्त के अंक कुल रूपों के द्योतक हैं

विपर्यय:- विपर्यय प्रस्तार में पहले प्रस्तार से केवल इतनी विलक्षणता है कि उस में वांए हाथ के गुरु के नीचे लघु रख कर प्रस्तार प्रारम्भ किया जाता है और इसमें दांएं हाथ के गुरु के नीचे लघु रखकर। शेष रूपों तथा रूप संख्या में कोई भेद नहीं।

आधे से ऊर्ध्व प्रस्तार चित्र

८					IIIII ८
७					SIII
६				५	ISII
५				IIII	IISI
४			३	SII	SSI
३		२	III	ISI	IIIS
२	१	II	SI	IIS	SIS
रूपाङ्क१	I	S	IS	SS	ISS
मात्रांक	१	२	३	४	५

आधे से ऊर्ध्व प्रस्तार करने की रीति

जब दांएं से वांईं ओर नीचे से ऊपर प्रस्तार करें तो नीचे के सभी रूप ही ऊपर रखते जावें परन्तु अन्तिम गुरु के सिर पर

एक लघु रखें अग्रिम लघुओं के दो दो लघु का एक एक गुरु करके रखें जब एक लघु बचे तब उस को लघु ही रखकर मात्रा पूरी करें। ऐसा करने करते जब सर्व लघु हो जायें तब प्रस्तार की समाप्ति जानो।

आधे से ऊर्ध्व विपर्यय प्रस्तार चित्र

८					IIIII = ८
७					IIIS
६				५	IISI
५				IIII	ISII
४			३	IIS	ISS
३		२	III	ISI	SIII
२	१	II	SI	IIS	SIS
रूपाङ्क१	I	S	SI	SS	SSI
मात्रांक	१	२	३	४	५

आधे से ऊर्ध्व विपर्यय प्रस्तार करने की रीति

पूर्वोक्त प्रस्तार से केवल इतना ही भेद है कि पूर्व प्रस्तार में तो बांई ओर गुरु रखते हैं और विपर्यय प्रस्तार में दाईं ओर। और सारो रीति समान है

संकेतः– प्रस्तार प्रकरण में जब बांई ओर से आरम्भ करें तो बांई ओर आदि तथा दाईं ओर अन्त एवं जब दाईं ओर से आरम्भ करें तो दाईं ओर आदि और बांई ओर अन्त जानो।

अथ प्रस्तारों की अनेक रूपता में समान रूपता

पूर्व प्रस्तार मात्रिक आदि भेद से चार प्रकार का कहा है कई आचार्य लघु मात्रा रख कर भी प्रस्तार की रीति कहते हैं वह भी भेद में चार प्रकार का है। कई चार प्रकार का खण्ड प्रस्तार भी कहते हैं। इस प्रकार से प्रस्तार करने की अनेक विधियां हैं। परन्तु सर्व प्रस्तारों में संख्या और रूपों की किञ्चित मात्र भी विलक्षणता नहीं हैं। विस्तार भय से हमने लिखे नहीं। इस से कुछ कार्य की विशेष सिद्धि नहीं है। किन्तु अनेक प्रकार के प्रस्तारों की प्रवृत्ति में कवि लोगों का विनोद ही मुख्य कारण है।

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे प्रथम भागे प्रथम मात्रिक प्रस्तार प्रत्यय निरुपणम् नाम तृतीय प्रकाशः

अथ चतुर्थ प्रकाशः

जब कोई पूछे कि इस मात्रिक प्रस्तार के भेद कितने हैं तब उस को निम्न रीति से उत्तर देवे। जितनी मात्रा का कोई प्रश्न करे तब उतनी लघु मात्रा लिख कर उस के शीश पर अङ्क धरे। जैसे प्रथम मात्रा के शीश पर एकाङ्क धरे। और दूसरी मात्रा के शीश पर पहली दो मात्राओं के शीषङ्कि जोड़ कर धरे। जैसे प्रथम मात्रा के शीर्षाङ्क का एकाङ्क और दूसरी मात्रा के शीर्षाङ्क दो इन दोनों अंकों को जोड़ कर तीन बने। ऐसे ही चौथी मात्रा के सिर पर इस से पूर्व की दो मात्राओं के

शीर्षांक जोड़ कर धरे। वह दो और तीन पांच हुए। ऐसे ही पञ्चम मात्रा के शीर्षांक पर ३+५=८ धरे ऐसे सर्वत्र पूर्व की दो दो मात्रा के शीर्षांक जोड़ कर आगे आगे रखते जावें।

विशेष ज्ञान के लिये नीचे (एक मात्रा से दस मात्रा पर्यन्त) संख्या चित्र है

संख्यांक	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
मात्रांक	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।

अथ मात्रिक समग्र संख्या प्रकार

जब कोई पूछे कि अमुक मात्रा से पूर्व सम्पूर्ण मात्रा की समग्र संख्या कितनी है उस के उत्तर की युक्ति यह है:- प्रश्न मात्रा की संख्या को दुगना करके उस से पूर्व मात्रा की संख्या को मिलावे योगफल में से दो घटा कर शेष उत्तर कहें। एक मात्रा से लेकर प्रश्न मात्रा पर्यन्त समग्र संख्या का उत्तर सही सही आवेगा विशेष ज्ञान के लिये चित्र देखें।

अब समग्र मात्रिक संख्या चित्र नीचे, "देखो" समग्र मात्रिक संख्या के चित्र चित्रण की रीति यह है।

१	प्रश्न मात्रा	२	३	४	५	६	प्रश्न मात्रा के अङ्क
२	संख्या	२	३	५	८	१३	संख्याङ्क
३	द्विगुणा	४	६	१०	१६	२६	शीर्षाङ्क के द्विगुने
४	पूर्व मात्रा	१	२	३	४	५	प्रश्नाङ्कों में से एक एक कम रखे
५	संख्या	१	२	३	५	८	पूर्व मात्राङ्कों की संखाङ्क रखे
६	कुल जोड	५	८	१३	२१	३४	तीसरी तथा पंचमी के कोष्टाङ्कों को जोडकर रखे
७	दो कम करके उत्तर	३	६	११	१९	३२	शीर्षाङ्कों में से दो कम कर रखे। वही उत्तर है

समग्र मात्रिक संख्या की दूसरी सुगम रीति यह है। जब कोई किसी मात्रा की समग्र संख्या पूछे तब उस मात्रा से दो मात्रा अधिक की संख्या निकाल कर दो घटा कर जो शेष बचे वही समग्र संख्या प्रश्न का उत्तर है। तथा ही नीचे चित्र,

समग्र मात्रिक संख्या के चित्र भरने की रीति यह है।

घरांक

१	प्रश्न मात्रा	२	३	४	५	६	प्रश्न मात्रा के अङ्क रखे
२	अधिक मात्रा	४	५	६	७	८	शीर्षाङ्कों में दो अङ्क और मिला कर रखे
३	संख्या	५	८	१३	२१	३४	शीर्षांक तथा मात्रांकों के सख्यांक रखे
४	दो कम करके उत्तर	३	६	११	१९	३२	शीर्षांकों में से दो कम कर दे

यही समग्र संख्या के प्रश्न का उत्तर है ऐसा और भी जान लेना। (घर नाम पंक्ति का है)

अथ गुप्त प्रश्नोत्तर विचार

यदि कोई पूछे कि मेरे मन में कितनी मात्रा के छन्द वनाने का विचार है तो उसे इस प्रकार उत्तर दिया जा सकता है। उससे उत्तर दाता कहे अपने मन की संख्या पर तीन का भाग देकर शेष वताओ। मानो उसके दिल में १० मात्रा का विचार है तो वह १०÷३=३। शेष १ उत्तर देवेगा) उस शेष को ७० से गुणा करके रख लेवें जैसे १×७०=७०। फिर उसी कल्पित संख्या पर पांच का भाग देने को कहे और जो शेष वचे उसे २१ से गुणा करे (जैसे १०÷५=२। शेष ०। ०×२१=० पुनः उसी कल्पित संख्या को ७ का भाग दिला कर शेष को १५ से गुणा करे (जैसे १०÷७=१। शेष ३ गुणा करने पर ३×१५=४५) गुणन फलों के तीनों उत्तरों

को जोड़कर उत्तर में से तब तक १०५ = १०५ घटाता जावे जब तक १०० के अन्दर अन्दर न आ जावे जैसे गुणनफलों का योग ७०+०+४५ = ११५। १०५ ऋण करने पर ११५-१०५ = १०) १०० के अन्तर का जो उत्तर अन्त में हो वही प्रश्नकर्ता के हृदय की संख्या है। जैसे पूर्व प्रश्न में १० यदि कल्पित संख्या ३, ५, ७ से कम हो और भाग न हो सके तो मूल संख्या को ही शेष मान कर गुणा कर दिया जाता है। जैसे १ पर भाग नहीं जाता तो १ ही शेष मानकर उसे क्रमशः ७०, २१, १५ से गुणा करे।

(अब निम्न गुप्त प्रश्नोत्तर चित्र)

प्रश्न	भाग	शेष	गुणा	जोड़	कुल जोड़	तजे	शेष उत्तर
१०	१०÷३	१	७०	७०			
	१०÷५	०	२१	०	११५	१०५	१०
	१०÷७	३	३५	४५			
प्रश्न	भाग	शेष	गुणा	जोड़	कुल जोड़	तजे	शेष उत्तर
११	११÷३	२	७०	१४०			
	११÷५	१	२१	२१	२२१	२१०	११
	११÷७	४	१५	६०			

ऐसे ही वर्णादिक प्रकरण में जानो। आदि से अभिप्राय द्रव्यादिक से है। द्रव्य विषयक प्रश्न में भी पूर्वोक्त रीति से हृदय में कल्पित संख्या बताई जा सकती है उसमें केवल इतना विशेषता है कि प्रश्नकर्ता से पूछा जावे कि कल्पित संख्या किस किस सैंकड़े की बीच की है। २०० से ३०० तक या ३०० से ४०० तक आदि। फिर पूर्वोक्त रीति से उत्तर निकाले यदि उत्तर की संख्या बताए हुए सैंकड़ों से कम हो तो तब तक १०५. १०५ जोड़ता जावे यदि अधिक हो तो तब तक १०५, १०५ घटाता जावे जब तक बताए हुए सैंकड़ों के बीच की संख्या न आवे। वही निश्चित सैंकड़ों के बीच की संख्या ही शुद्ध उत्तर है।

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे प्रथम भागे द्वितीय मात्रिक संख्या प्रत्यय निरूपणं नाम चतुर्थ प्रकाशः

अथ पंचम प्रकाशः

यदि कोई प्रश्न करे कि अमुक मात्रा के प्रस्तार में आदि लघु, अन्त लघु, आदि गुरु, अन्त गुरु, आद्यन्त गुरु और आद्यन्त लघु वाले कितने रूप हैं तो निम्न सूचि चित्र के अनुसार उत्तर देना चाहिये।

(सूची प्रत्यय प्रकरण)

सूची चित्र और रीति

मात्रांक	१	२	३	४	५	६	मात्रांक
संख्यांक	१	२	३	५	८	१३	भेदांक
आदि लघु	१	१	२	३	५	८	आदि में एक फिर शीर्षांक
अन्त लघु	१	१	२	३	५	८	इस में शीर्षांक
आदि गुरु	०	१	१	२	३	५	आदि में शून्य फेर शीर्षांक
अन्त गुरु	०	१	१	२	३	५	इस में शीर्षांक
आदि अन्त लघु	१	१	१	२	३	५	शून्य तले १ फिर शीर्षांक
आदि अन्त गुरु	०	१	०	१	१	२	आदि में ० फिर १ फिर ६ पङ्क्ति अंक

मात्रिक सूचि की सुगम रीति यह है :— जितनी मात्रा की सूचि देखनी हो उतनी लघु मात्रा लिखकर रेखा रूप से मात्रा के शीर्ष पर संख्या लिखे जो अन्तिम संख्या से पूर्व अंक हैं उसके सम तो आदि और अन्त लघु हैं और उस अन्तिम संख्या के तीसरे अङ्क सम आदि गुरु अरु अन्त गुरु तथा आदि अन्त लघु वाले रूप हैं और उस अन्तिम संख्या के पूर्व पञ्चम अङ्क समान आदि अन्त गुरुओं के रूप हैं जैसे नीचे लघु रेखा पर संख्या से स्पष्ट है

देखो

१	२	३	५	८	१३	२१
।	।	।	।	।	।	।

उस अन्तिम संख्या १३ से पूर्व ८ आदि लघु और अन्त लघु वाले रूप १३ से पूर्व तीसरा अङ्क ५ है उस के सम आदि गुरु, अन्त गुरु एवं आदि अन्त लघुओं वाले रूप हैं और उस अन्तिम १३ संख्या से पूर्व पञ्चम २ हैं उसके सम आद्यन्त गुरुओं वाले रूप हैं ऐसे और भी जान लेना

अथ मात्रिक समग्र सूची प्रकार निरूपणम्

जब कोई समग्र सूची पूछे अर्थात आदि से लेकर अमुक मात्रा के प्रस्तार पर्यन्त सम्पूर्ण आदि लघु, अन्त लघु, आदि गुरु, अन्त गुरू, आद्यन्त लघु और आद्यन्त गुरू वाले कितने रूप हैं, उस को इस प्रकार उत्तर देवे। जितनी मात्रा की तुम

ने समग्र सुचि पूछी है उस मात्रा की संख्या और उस से पूर्व मात्रा की संख्या को जोड़ कर उस में से एक घटाने पर जो शेष संख्या बचे उतने अथवा प्रश्न मात्रा से एक अधिक मात्रा की संख्या में से एक घटाने पर उस के समान आदि लघु एवं अन्त लघु वाले, प्रश्न संख्या से एक कम के समान आदि गुरू और अन्त गुरू वाले, प्रश्न संख्या के समान ही आद्यन्त लघु के और प्रश्न संख्या से पूर्व तीसरी मात्रा की संख्या के समान आद्यन्त गुरू वाले रूप हैं जैसे किसी ने षट मात्रा की समग्र सूची पूछी तो षट मात्रा की संख्या तो १३ हैं और उस से पूर्व मात्रा पञ्चमी है। उस की संख्या आठ है जब दोनों को जोड़ें तो २१ हुआ उस में से एक घटाया तो शेष २० रहे तब २० ही आदि लघु तथा अन्त लघु के रूप हैं। जब षट मात्रा से एक अधिक अर्थात् सात मात्रा की संख्या २१ में से १ घटायें तब भी २० ही रहेंगे। प्रश्न संख्या १३ में से १ घटाया तो १२ आदि गुरू और अन्त गुरू के रूप हैं। प्रश्न संख्या १३ ही आद्यन्त लघुओं के रूप हैं। और प्रश्न संख्या के पूर्व तीसरी मात्रा की संख्या पांच ही आद्यन्त गुरू वाले रूप हैं ऐसे और भी जान लेना।

आगे विशेष ज्ञान के लिये पांच मात्रा का समग्र सूची चित्र चित्रित किया है उसे देखकर उपरोक्त विवरण का पूर्ण ज्ञान सुगमता से हो जावेगा

पंच मात्रा की समग्र सूची चित्र

							भरने की रीति
१	मात्रा	१	२	३	४	५	मात्रांक रखें
२	संख्या	१	२	३	५	८	भेदांक रखें
३	समग्र संख्या	१	३	६	११	१९	एकांक फिर खाली घरके आदि अंक और शीर्षांक जड़कर रखें
४	आदि लघु	१	२	४	७	१२	खाली घर के आदि का खाली घरके शीर्षांक से निकाल कर रखे
५	अन्त लघु	१	२	४	७	१२	शीर्षांक रखे
६	आदि गुरु	०	१	२	४	७	शून्य शीर्षांक धरे
७	अन्त गुरु	०	१	२	४	७	शीर्षांक रखे
८	आद्यन्त लघु	१	२	३	५	८	भेदांक रखे
९	आद्यन्त गुरू	०	१	१	२	३	शून्य फिर शीर्षाङ्क में से नीचे का अङ्क निकाल कर रखें

जैसे एक के नीचे शून्य होने से १ रखा फिर शीर्ष के २ में से १ निकाल कर १ रखा। फिर शीर्ष के ३ में से १ निकाल कर २ रखे ऐसे और भी जान लेना।

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे प्रथम भागे तृतीय मात्रिक सूचि प्रत्यय निरुपणम् नाम पञ्चम प्रकाशः

(अथ शष्ठ प्रकाश;) मात्रिक पाताल यन्त्र (चतुर्थ प्रत्यय)

जब कोई पूछे कि अमुक मात्रा के प्रस्तार में से सर्व लघु वर्ण सर्व गुरु वर्ण सर्व लघु गुरु वर्ण, और सर्व मात्रा कितनी हैं तो ऐसे प्रष्टा को पाताल प्रत्यय से उत्तर दो।

॥ षट मात्रा के पाताल प्रत्यय का चित्र ॥

पंच मात्रा का पाताल प्रत्यय चित्र							चित्र चित्रण की रीति
१	मात्रा	१	२	३	४	५	प्रथम पांति में मात्राङ्क
२	संख्या	१	२	३	५	८	दूसरी ,, ,, भेदाङ्क
३	सर्व लघु	१	२	५	१०	२०	तीसरी में आदि में '१' फिर खाली घर से पहले दो घर और साथ वाले पहले घर का शीर्षाङ्क जोड़े
४	सर्व गुरु	०	१	२	५	१०	आदि में शून्य फिर पहले घर का शीर्षाङ्क
५	सर्वाङ्ग	१	३	७	१५	३०	इस पंक्ति में तीसरी व चौथी पांति को जोड़कर
६	सर्व मात्रा	१	४	६	२०	४०	,, चौथी व पांचवीं ,, ,,

॥ इति ॥

अथ मात्रिक समग्र पाताल प्रकाशः

॥ निरूपणम् ॥

जब कोई पूछे कि पूर्व समग्र प्रस्तार के सर्व लघु और गुरु और सर्व वर्ण तथा सर्व मात्रा कितने कितने हैं तब उसको समग्र पाताल प्रत्यय से उत्तर देवो यथाः—

१. वा खाली घर के सिरे के आदि का या कहने में कोई भेद नहीं केवल ज्ञातार्थ है ॥

अब निम्न षट मात्रा के समग्र पाताल प्रत्यय

॥ चित्र को देखो ॥

पंक्ति अङ्क

१	मात्रा	१	२	३	४		६
२	संख्या	१	२	३	५		१३
३	समग्र संख्या	१	३	६	११	१९	३२
४	समग्र सर्व लघु	१	३	८	१८	३८	७६
५	समग्र सर्व गुरु	०	१	३	८	१८	३८
६	समग्र सर्वाङ्क	१	४	११	२६	५६	११४
७	समग्र सर्व मात्रा	१	५	१४	३४	७४	१५२

अब हम समग्र पाताल प्रत्यय के भरने का प्रकार कथन करते हैं।

इसकी प्रथम पंक्ति में तो मात्रा अङ्क है और दूसरी पंक्ति में भेदांक है और तसरी पंक्ति में समग्र संख्यांक हैं उसके भरने की रीति यह है जो खाली घर के आदि का अङ्क और खाली घर के शीर्ष का अङ्क दोनों को जोड़ जोड़ कर धरे। और चौथी मंक्ति में आदि घर में एकांक पुनः द्वितीय घर में तीसरा अङ्क धरे पुनः तीसरे घर में एक अंक और तीसरा मिला के पुनः दुगणा करके ८ धरे। पुनः ८ में १ मिलाकर ९ के दुगणे करके १८ धरे। ऐसे ही आगे एक एक मिलाकर उसके दुगणे कर पंक्ति के सारे घर भरे। पंचम के आदि घर में शून्य आगे शीर्षांक धरे। छटी लाइन में पांचवीं और चौथी पंक्ति के अङ्क जोड़कर रखे। सातवीं पंक्ति में छटी और पांचवीं के अङ्क जोड़कर भरे ऐसे ही आगे भरकर पूर्ण करे। बांचने की रीति स्पष्ट है इसलिए हमने नहीं लिखी।

इति भाषा पिंगल प्रस्तार छन्द दिवाकरे प्रथम भागे मात्रिक चतुर्थ पाताल प्रत्यय निरूपणम् नाम षष्ठ प्रकाशः।

(अथ सप्तम प्रकाशः)

(मात्रिक पंचम नष्ट प्रत्यय प्रकरण)

जब कोई पूछे कि इतनी मात्रा के प्रस्तार में से अमुक रूप कौन सा है। तब उसको नष्ट रीति से उत्तर देवे। सो

रीति यह है जितनी मात्रा प्रश्नकर्ता ने कही है। उतनी लघु रेखा रूप लिखकर उसके सिर पर संख्या लिखे। अन्तिम संख्या में से प्रश्नांक घटाकर बचे अङ्कों को पूर्ण संख्यांकों के बराबर करे। १, २, ३, अथवा ४ आदि जितने अङ्क मिलाने से सम हो मिला दे। जो जो अङ्क सम हो उसके नीचे की मात्रा दाईं ओर की लघु मात्रा से मिलकर गुरु हो जाती है, और रूप स्पष्ट प्रकट हो जाता है। यदि ५ मात्रा के प्रस्तार में पंचम रूप जानना हो संख्या सहित लघु मात्रा लिखकर अन्तिम ८ संख्या में से प्रश्न संख्या ५ को घटाया तो शेष ३ बचे उसकी ३ के साथ समता हुई। वह अपने से अगली पंचम संख्या वाली चौथी मात्रा के साथ मिलकर गुरु हुआ तो यह रूप ।।ऽ। सिद्ध हुआ ऐसे आगे भी जान लेना।

(पंचम मात्रा के प्रस्तार में से पंचम रूपका चित्र)

साधारण

प्रश्न रूप	५
संख्या	१ २ ३ ५ ८
मात्रा	। । । । ।
घटे	८—५
शेष	३
सम अङ्क	३
	।
मिले	३—५—ऽ
	। ।
उत्तर	।।ऽ।

विपर्यय

प्रश्न रूप	७
संख्या	१ ३ ८ ५ ३ २ १
मात्रा	। । । । । । ।
घटे	१३—७
शेष	६
समाङ्क	५ १
	। ।
मिले	८ २
उत्तर	।ऽ।ऽ

अथ स्थान विपर्यय नष्ट प्रकार निरूपणम् ।। इसमें सीधे स्वस्थान प्रस्तार के नष्ट प्रकार से इतना ही भेद है जो इस स्थान विपर्यय नष्ट में संख्या दांए से बाईं ओर को लाए और रीति सर्व समान है ।

ऐसे और भी सर्वत्र जान लेना । और अधः से ऊर्ध्व प्रस्तार की नष्ट की रीति भी इस रीति से भिन्न नहीं केवल प्रस्तार का भेद है ।

ऐसे और भी सर्वत्र जान लेना । अधः से ऊर्ध्व विपर्यय की नष्ट रीति भी इस रीति से भिन्न नहीं है । जो कि हमने लिखी नहीं ।।

इति भ पा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे प्रथम भागे मात्रिक नष्ट पञ्चम प्रत्यय निरुपणम् नाम सप्तम प्रकाशः

अष्टम प्रकाश;

(उद्दिष्ट प्रत्यय प्रकार निरूपण)

यदि प्रस्तार में छन्द के किसी रूप को लिखकर कोई पूछे कि यह अमुक छन्द के प्रस्तार में कौनसा रूप है तब उसको उद्दिष्ट प्रत्यय द्वारा उत्तर देना चाहिए ।

" मात्रिक उद्दिष्ट प्रत्यय चित्र तथा रीति "

६ मात्रा	प्रश्न	उत्तर	प्रस्तार	अङ्क
			ऽ ऽ ऽ	१
संख्या	१ २ ५ १३		। । ऽ ऽ	२
रुप	। ऽ ऽ ।		। ऽ ऽ ।	३
संख्या	३ ८		। ऽ । ऽ	४
			ऽ । । ऽ	५
शुद्धाई	१३–(२+५)=	६	। । । । ऽ	६
—	— —		ऽ । ऽ ।	७
संख्या	१ ३ ५ ८		। । । ऽ ।	८
रुप	ऽ । । ऽ		ऽ ऽ । ।	९
			। । ऽ । ।	१०
संख्या	२ १३		। ऽ । । ।	११
शुद्धाई	१३–(१+८)=	४	ऽ । । । ।	१२
			। । । । ।	१३

सर्व प्रथम प्रश्न पर संख्या के अङ्क इस प्रकार लिखें कि लघु मात्रा के तो केवल ऊपर तथा गुरु मात्रा के ऊपर नीचे क्रम से अङ्क आवें। गुरु मात्रा के ऊपर के अङ्कों को जोड़ कर अंतिम संख्या से घटा लें। जो शेष बचे वही उत्तर है। जैसे सामने के चित्र में गुरु के सिरों की संख्या के योग २+८=१० को १३ से घटाया तो उत्तर ३ रहा।

१	२	५	८
।	ऽ	।	ऽ
	३		१३

स्थान विपर्यय उदिष्ट चित्र

६ मात्रा	प्रश्न	उत्तर	प्रस्तार	संख्या
			ऽ ऽ ऽ	१
संख्या	१३ ५ ३ १		ऽ ऽ । ।	२
रुप	। ऽ । ऽ		ऽ । ऽ ।	३
			ऽ । । ऽ	४
संख्या	८ २		ऽ । । । ।	५
हल	१३−(१+५)	७	। ऽ ऽ ।	६
			। ऽ । ऽ	७
संख्या	८ ५ २ १		। ऽ । । ।	८
रुप	ऽ । ऽ ।		। । ऽ ऽ	९
			। । ऽ । ।	१०
संख्या	१३ ३		। । । ऽ ।	११
हल	१३−(२+८)	३	। । । । ऽ	१२
			। । । । । ।	१३

मात्रिक स्थान विपर्यय उदिष्ट का पहले उदिष्ट से केवल इतना भेद है। पहले में बाएं से दाएं संख्या रखी जाती है और इस में दाएं से बाएं। इसी रीति से अधः से ऊर्ध्व स्थान विपर्यय के उदिष्ठ का ज्ञान भी होता है।

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे प्रथम भागे मात्रिक उदिष्ट प्रत्यय निरुपणं नाम अष्टम प्रकाशः।

नवम प्रकाशः मेरु प्रत्यय निरुपणम्

यदि कोई पूछे कि मात्रिक प्रस्तार में एक, एक, दो दो, तीन तीनादि लघुगुरु वाले रुपों की संख्या का ज्ञान कैसे हो तो उन्हें मेरु चित्र बना कर बतावे।

मेरु चित्र बनाने की रीति

पहले एक कोष्ट बनाए फिर दो पङक्तियां दो दो घर की फिर दो पङक्तियां ३, ३ घरों की फिर दो दो लाईनें चार चार घरों की तब तक बनाए जावे जब तए इतनी लाईनें न हो जावें जितनी मात्राओं का मेरु बनाना हो।

भरने की रीति

दाइं तरफ के हरेक अन्तिम घर में '१' अङ्क भरे। बाइं तरफ के हर पहले घर में सम पङिक्ति में '१' और विषम पङिक्ति में क्रम से १, २, ३, ४ आदि भरता जावे। अब जो खाली घर रह जावे उन्हें भरने की रीति यह है, कि दाएं तरफ के शीर्ष के शीर्षकों और बाएं तरफ के शीर्ष को जोड़ कर खाली घर भर देवे इसी तरह सारे भरे जावेंगे।

पढ़ने की रीति (बाएं से दाएं)

विषम पङिक्तियों में पहला घर १ लघुवाले रुपों को, दूसरा तीन लघुवाले, तीसरा ५ लघुवाले रुपों को बताता है इसी प्रकार आगे भी विषम संख्या को बताता जावेगा। जैसे चित्र में

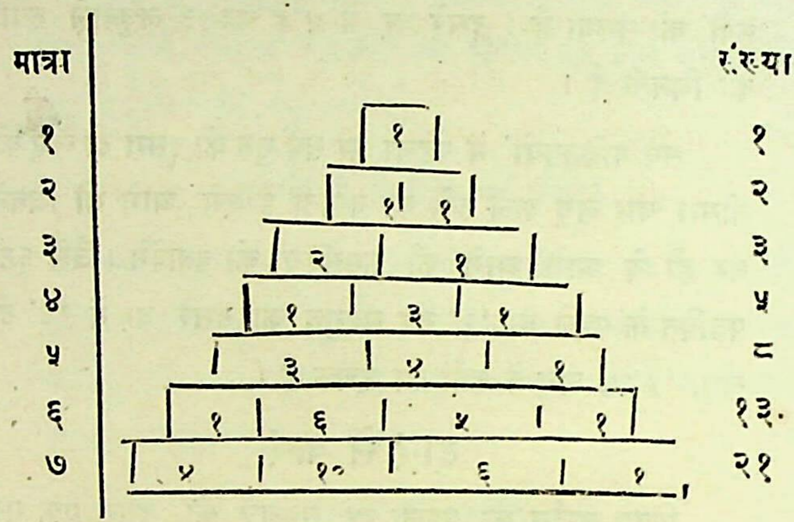
पांचवी पङक्ति में पहले घर में अङ्क '३' है तो यह १ लघुवाले रुपों की संख्या है। दूसरे घर में ४ है यह ३ लघुवाले रुपों की गिनती है।

सम पङिक्तयों में पहला घर सर्व गुरु को दूसरा दो लघु को तीसरा चार लघु वाले रुपों को वताता है ऐसे आगे भी जितने घर हों वे आगे आगे की समसंख्या को वतावेंगे। जैसे ६टी पङक्ति के पहले घर '१' रुप सर्वगुरु का दूसरे घर में '६' दो लघु, '५' ४ लघु के रुपों का सूचक है।

दाएं से बाएं

विषम लाईन का पहला घर सर्वलघु को, दूसरा एक गुरु को, तीसरा दो गुरु वाले रुपों को वताता है ऐसी ही आगे। सम पङ्क्ति में पहला वर सर्वगुरु दूसरा एक गुरु तीसरा दो गुरुवाले रुपों को इसी तरह आगे रुपों का वताता है।

सप्त मात्रिक मेरु चित्र



अथ मात्रिक मेरु सुगम प्रकार निरुपणम्

अब हम पाठकों को सुगमता से बोध हेतु शौन्ध मेरु को कहते है। और तो सर्व रीति——साङ्ग मेरु के समान हैं। परन्तु शौन्ध में सर्व खण्डों को ऊपर से नीचे की ओर भरे। पीछे खण्डों के अङ्कों का जोड़ कर के नीचे लिखे जो ठीक ठीक जान पड़े। पहले खण्ड का जोड़ है सो सर्व लघु का सूचक है जिसके आगे दूसरे खण्ड का नीचे जोड़ है सी एक गुरु का बोधक है। ————तीसरे खण्ड के नीचे जो जोड़ है वह दो गुरुओं का बोधक है ऐसे ही जो जो खण्डों के नीचे जोड़ हैं सो सो क्रम से तीन चारादिक गुरु मात्रा का सूचक है। इस सप्त मात्रा के शौन्ध मेरु से यह सिद्ध होता है कि जो शौन्ध मेरु के ऊँचे

खण्डों का जोड़ है सो सर्व लघु का सूचक है अर्थात सात लघु का इस से आगे एक एक गुरु के २१ रुप हैं। दो दो गुरु के २० रुप हैं, तीन तीन गुरुओं के ५ रुप हैं, सर्व जोड़ ५३ हैं। साङ्ग मेरु से इतनी ही विलक्षणता है जो ऊपर कही। लिखना वाचना सर्व साङ्ग मेरु के सम है। आगे शौन्ध मेरु का चित्र भी चित्रित है।

॥ इति ॥

सप्त मात्रा का शौन्ध मेरु का चित्र

मात्रा									संख्या
१				१	१				१
२			१	१	१	१			२
३			२	१	१	२			३
४		१	३	१	१	३	१		५
५		३	४	१	१	४	३		८
६	१	६	५	१	१	५	६	१	१३
७	४	१०	६	१	१	६	१०	४	२१
जोड़	५	२०	२१	७	७	२१	२०	५	जोड़

बाएं शौन्ध खण्डों का सम्पूर्ण जोड़ ५३

दाएं शौन्ध खण्डों का सम्पूर्ण जोड़ ५३ ॥

अथ खण्ड मेरु प्रकार

यदि मेरु की द्वितीय, तृतीय, व चतुर्थ, पञ्चमादि पंक्ति के अङ्क जानने की इच्छा हो तो साङ्ग मेरु और शौन्ध मेरु में उक्त प्रकार से गौरव है अतः लाघव के लिए खण्ड मेरु को कहते हैं—जितनी मेरु की सम पंक्ति जानने की इच्छा हो उससे अर्ध अङ्क धर कर एक एक अङ्क अधिक रखे। जब विषम पांति को जानना हो तो एक मात्रा त्यागकर उससे आधे अंक धरे एक १ अधिक रखे। पुनः दाईं से बाईं ओर अंकों को मिलाता जाए। जैसे दाएं का एक बाएं एके के साथ मिलकर २ हुआ पुनः २ अग्रिम १ के अंक साथ मिलकर ३ हुए। ऐसे ही अपने बाएं अंक से मिलकर अधिक होता है पर मिलने वाला अंक नष्ट न होकर स्वस्थान पर स्थित रहता है। इसमें इतना भेद है कि जो सम मात्रिक का प्रश्न हो तो अन्तिम का एका नहीं मिलता यदि विषम मात्रा का प्रश्न हो तो एका एक बार मिलेगा। जब अन्त का अंक दो बार मिल जाए तब उसे शुद्ध जाने फिर न मिलावे उसे छोड़ देवे ऐसे सबको शोधे तब खंड मेरु की पांति सही २ अंक बतलादेगी।

षट मात्रा का खण्ड मेरु चित्र

१	१	१	१
१	३	२	१
१	६	३	१
१	६	४	१
१	६	५	१

यह षष्ट मात्रा का प्रश्न है उनका अर्ध ३ एके हुए एक अधिक करने से चार हुए जो ऊपर की पांति में सही है सो अपने से बाए २ मिलने से ऐसे १, ३, २, १, रूप हुए पुनः मिलाने से ऐसे १, ६, ३, १, रूप हुए। षष्ट दो बार मिलने से शुद्ध हुआ पुनः मिलाए तो ऐसे १, ६, ४, १, पुनः मिलाए तो ३ दो बार मिलने से सही रूप ऐसे १, ६, ५, १, हुआ। इति सप पांति मेरु खण्ड ॥

जो विषम सप्त मात्रा का किसी ने प्रश्न करा तो सात मात्रा में से एक तज के शेष षट का अर्ध ३ में एक और मिलाया तो ४ हुए सारे ऐसे १ १ १ १ सो पूर्वोक्त मिलने से रूप ऐसे ४, ३, २, १ हुए। बाएं का एका दो बार मिलने से शुद्ध हुआ। पुनः मिलाने से ४, ६, ३, १, ऐसे रूप हुए। पुनः मिलाने से रूप ऐसे ४, १०, ४, १, हुए। तिस में से दो बार

मिलने से दश शुद्ध हुआ ४, १०, ५, १, पुनः मिलाए तो सही रूप ऐसे हुए ४, १०, ६, १,

अब खण्ड मेरु विषम चक्र देखो

१	१	१	१
४	३	२	१
४	६	३	१
४	१०	४	१
४	१०	५	१
४	१०	६	१

ऐसे एक मात्रा मेरू से लेकर चालीस मात्रा पर्यन्त जो भी मात्रिक मेरू की पान्ति देखनी हो सो सम खन्ड मेरू से देखो गुरू लघु देखने की रीति अति सुगम है। इसलिए हमने लिखी नहीं।

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे मात्रिक सप्तम मेरू प्रत्यय प्रकार निरूपणं नाम नवम प्रकाशः ॥

दशम प्रकाशः

(पताका प्रत्यय प्रकार निरूपणम्)

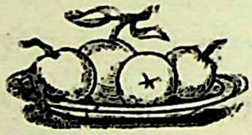
जब कोई पूछे कि मेरू में कहे जो लघु गुरू के रूपों के भेदों के स्थान कौन २ से हैं। सो तब लघु गुरु के रूपों के उत्तर भूत उन स्थानों को द्योतन करने के लिए—अब हमें

पताका रचना प्रकार कहते हैं यथा प्रथम बाएं दाएं को तीन पंक्ति रेखा रूप खींचे। जितनी—मात्रा की पताका रचनी होवे पंक्ति में उतने ही घर (रेखा खींचकर) करें। पुनः प्रथम पंक्ति के दाएं प्रथम घर में शून्य धर के पुनः एक एक घर त्याग कर एक दो तीनादिक अङ्क धरें। सो अङ्क गुरु रूप के सूचक हैं पुनः द्वितीय पंक्ति में जितनी मात्रा की पताका करनी होवे उतनी मात्रा की मेरु की पंक्ति खंड मेरु द्वारा निकाल कर धरो एक एक घर त्याग कर सो मेरु के अङ्क नीचे पताका के घरों के सूचक हैं। तीसरी पंक्ति में बाएं से दाएं ओर को संख्या के अङ्क धरो सो पाताका के घर भरने के लिए हैं इन तीनों पंक्तियों के नीचे मेरु पंक्ति के समान पताका के घर बना कर इस प्रकार से भरे।

जो संख्या पंक्ति में अन्तिम संख्या है तिस में से एक २ अङ्क घटा कर बाकी बचे अङ्क पाताका के एक गुरु वाले एक खण्ड में नीचे से ऊपर को भरता चले। पुनः दो दो अङ्क घटा कर दो गुरु वाले द्वितीए खण्ड में नीचे से ऊपर को भरता चले ऐसे तीसरादि खण्ड भी भरे। इसमें इतना भेद है कि जो अङ्क एक बार आ जावे सो पुनः नहीं आ सकता। तथा ही नीचे षट मात्रा के पाताका चित्र रचना करने की रीति देखो षष्ठ मात्रा की अन्तिम संख्या १३ में से १ घटाया तो बचे १२ सो षष्ठ मात्रा के प्रस्तार में से एक गुरु वाला १२ वां रूप हैं सो षष्ठ मात्रा की पाताका के एक गुरु वाले और मेरु के पञ्चम

घर वाले खण्ड के नीचे रखा पुनः १३ में से २ घटे तो शेष बचे ११ ॥ पुनः १३ में से ३ घटे तो बाकी शेष बचे १० धरें पुनः १३ में से ५ घटे तो ८ धरे ॥ पुनः १३ में से ८ घटे तो बाकी बचे ५ धरें। एक गुरु वाला खण्ड पूरा हुआ। अब द्वितीय खण्ड को भी दो दो अङ्क घटा २ के भरे। १३ में से १+३=४ घटे तो शेष ९ धरे। पुनः १३ में से (१+५)=६ घटे तो शेष बचें ७ धरें।

फिर १२-(२+५)=७ रखे फिर ११ में से १ से ९ नौ घटे शेष ४ रखे फिर १३ में से २ से ९ दस घटे शेष ३ रखे फिर १३ में से ३ से ९ ग्यारहां घटे शेष २ रखे खण्ड पूरा हुवा। अब तीसरे खण्ड में से १३ में से १ से ३ से ९ मिलकर १२ घटे तो शेष १ धरिया तो पताका प्रत्यय पूरा हुआ।



(षट मात्रा का पताका चित्र)

गुरुसूचक	३	२		१		०
पताकाघर	१	६	०	५	०	१
संख्याङ्क	१	२	३	५	८	१३
	१	२		५		
		३		८		
		४		१०		
		६		११		
		७		१२		
		९				

प्रस्तार	अङ्क
ऽ ऽ ऽ	१
। । ऽ ऽ	२
। ऽ । ऽ	३
ऽ । । ऽ	४
। । । । ऽ	५
। ऽ ऽ ।	६
ऽ । ऽ ।	७
। । । ऽ ।	८
ऽ ऽ । ।	९
। । ऽ । ।	१०
। ऽ । । ।	११
ऽ । । । ।	१२
। । । । । ।	१३

अब इस पताका प्रत्यय के वाचने की रीति यह है:—

यदि इस सम मात्रा की पताका को दाएं से बाएं को पढ़े तो प्रथम खण्ड छोड़ कर दूसरा खंड एक गुरु को तीसरा खंड दो दो गुरु को तथा चौथा खंड तीन गुरुओं को कहता है। ऐसे आगे एक एक गुरु अधिक अधिक होता जायगा और यदि बाएं से दाईं ओर को पढ़ो तब प्रथम खंड छोड़कर दूसरा खंड दो दो लघुओं को तीसरा खंड चार चार लघु तथा चौथा खंड ६-६ लघु को कहता है। ऐसे और भी जान लेने। तात्पर्य यह है कि यदि सम मात्रा की पताका होगी तो दाएं

ओर से बाईं ओर को वाचने से प्रथम खंड छोड़ के प्रत्येक खंड में १, २, ३, ४ आदिक गुरु को कहेगी। और वाऐं से दाईं ओर वाचने से प्रथम खंड छोड़ कर प्रत्येक खंड में सम लघु अर्थात् दो चार षटादिक लघुओं को कहेगी। और विषम मात्रिक पताका दाएं ओर से वाएं ओर को वाचने से गुरुओं को अनुक्रम से अर्थात् एक दो तीन चारादिक को ही कहेगी। परन्तु वाएं से दाएं ओर को वाचने से वह पताका विषम अर्थात् एक तीन पंचादिक को कहेगी अन्य को नहीं।

अब निम्न विषम सप्त मात्रिक पताका चित्र को हम चित्रित करते हैं। चित्रित करने की रीति पूर्वोक्त पताका के समान है इसलिए हमने भिन्न नहीं लिखी और अङ्क भरने की रीति भी पूर्व कही है जो अन्तिम संख्या से आदि संख्या के अङ्क घटा घटा कर भरने की रीति हमने स्पष्ट करके कही है।

(सप्त मात्रा का पताका चित्र)

मेरू	३		२		१		गुरू
सख्या	४	०	१०	०	६	०	१
	१	२	३	५	८	१३	२१
	१		३		८		
	२		५		१३		
	४		६		१६		
	६		७		१९		
			१०		१९		
			११		२०		
			१२				
			१४				
			१५				
			१७				

तथा वाचने की रीति भी हमने स्पष्ट करके कही है।

(इति पताका प्रत्यय निरूपणम् नाम दशम प्रकाशः)

१ अथ भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे प्रथम भागे मात्रिक नवम मर्कटी प्रत्यय प्रकार निरूपणं नाम एकादश प्रकाशः।

अब हम मर्कटी के अर्थ को कहते हैं मर्कटी नाम वानरी का है जैसे वानरी वन बाग में प्रविष्ट होकर बड़े और छोटे वृक्षों पर चढ़कर शाखा प्रशाखा और पत्तों और फूल फलों को ज्ञात करती है वैसे (ही यह—मर्कटी प्रत्यय भी इस छन्द शास्त्र रूपी बाग में प्रस्तार रूपी वृक्ष पर चढ़कर गुरु लघु रूप पत्र और वर्ण मात्रा समुदाय रूप शाखा प्रशाखा, छन्द फूल तथा पूर्ण छन्द फल आदिक सर्व का पता देता है इसलिए इसे मर्कटी कहा है) इसमें गुरु लघु मात्रा पिंड आदिक सर्व का ज्ञान होता है। इसलिए अब हम मर्कटी चित्र चित्रित करके उसके भरने और वाचने की रीति को कहते हैं।

१ यहाँ छन्द स्वरूप शब्द से प्रस्तार से निकले छन्द के एक चरण का ग्रहण है।

अब निम्न मात्रिक महा मर्कटी चित्र प्रकार "देखो" मर्कटी में अङ्क भरने की रीति यथा;-

१	मात्रा		१	२	३	४	५	६
२	भेद	रूप	१	२	३	५	८	१३
३	आदि लघु	।०	१	१	२	३	५	८
४	अन्त लघु	०।	१	१	२	३	५	८
५	आदि गुरू	S०	०	१	१	२	३	५
६	अन्त गुरु	०S	०	१	१	२	३	५
७	आदिगुरू अन्तलघु	S०।	०	०	१	१	२	३
८	आदिलघु अन्तगुरू	।०S	०	०	१	१	२	३
९	आदि अन्त गुरू	S०S	०	१	०	१	१	२
१०	आदि अन्त लघु	।०।	१	१	१	२	३	५
११	सर्व लघु		१	२	५	१०	२०	३८
१२	सर्व गुरू		०	१	२	५	१०	२०
१३	सर्व वर्ण		१	३	७	१५	३०	५८
१४	सर्व मात्रा		१	४	९	२०	४०	७८
१५			॥	२	४॥	१०	२०	३९

पिंड । चिन्ह=।।।।पौनोपिंड=।।। अर्धापंड=।। चतुर्थअंश=।

इस मर्कटी के बाचने की रीति अति सुगम होने के कारण हमने लिखी नहीं ।

महां मर्कटी चित्र की रीति;—

प्रथम पंक्ति में मात्रा सूच काङ्क, दूसरी में भेदाङ्क, तीसरी में आदि में '१' तत्पश्चात शीर्षाङ्क एवं चौथी पंक्ति में शीर्षाङ्क लिखे। पांचवी पंक्ति में आदि में शून्य तत्पश्चात शीर्षाङ्क, छटी में शीर्षाङ्क, सातवीं में आदि में शून्य तदनन्तर शीर्षाङ्क, आठवीं में शीर्षांक, नवीं में आदि में ०, १, ० १, तदनन्तर भेदांक दसवीं में शुरू में '१' तत्पश्चात चौथी पंक्ति के अंक, ग्यारहवीं में शुरू में १, २, आगे ऊपरी पंक्तियों के दो कोष्टों के विकटांक, १२ वीं में आदि में शून्य आगे शीर्षांक, १३ वीं में '१' आगे ऊपर के दो अंक, १४ वीं में बारहवीं तेरहवीं पंक्ति के अंक तथा १५ वीं में मात्रांक के आधे रखे। समग्रमहा मर्कटी की रीति। प्रथम पंक्ति में मात्रांक दूसरी में भेदांक तीसरी में समग्र संख्या वा मात्रांक+शीर्षांक, चौथी में खाली घर के शीर्षांक—खाली घर के आदि अंक, पांचवीं में शीर्षांक, छटी में शून्य तदनन्तर शीर्षांक, सातवीं में शीर्षांक, आठवीं में शून्य आगे शीर्षांक, नवीं में शीर्षांक, दसवीं में आदि में १, ०, आगे अनुक्रम से भेदांक, ग्यारहवीं में अनुक्रम से भेदांक, १२ वीं में खाली घर के आदि के दो अंक और दो शीर्षांक, १३ वीं में शून्य तदनन्तर शीर्षांक, १४ वीं में ११ वीं तथा १२ वीं पंक्ति का योग, १५ वीं में १३ वीं+१४ वीं पंक्ति के अंक और १६ वीं में मात्रांक के आधे रखें।

अब षट मात्रा की समग्र महां मर्कटी चित्र व रीति

१	मात्रा		१	२	३	४	५	६
२	भेद	रूप	१	२	३	५	८	१३
३	संख्या		१	३	५	११	१९	३२
४	आदि लघु	।०	१	२	४	७	१२	२०
५	अन्त लघु	०।	१	२	४	७	१२	२०
६	आदि गुरू	S०	०	१	२	४	७	१२
७	अन्त गुरू	०S	०	१	२	४	७	१२
८	आदिगुरू अन्तलघु	S०।	०	०	१	२	४	७
९	आदिलघु अन्तगुरू	।०S	०	०	१	२	४	७
१०	आदि अन्त गुरू	S०S	०	०	१	२	३	५
११	आदि अन्त लघु		१	२	३	५	८	१३
१२	सर्व लघु		१	३	८	१८	३८	७६
१३	सर्व गुरू		०	१	३	८	१८	३८
१४	सर्व वर्ण		१	४	११	२६	५६	११४
१५	सर्व मात्रा		१	५	१४	३४	७६	१५२
१६	सर्व पिंड		॥	२॥	७	१७	३७	७६

(१ समग्र पट की योजना आदि लघु आदि पट के आदि में करनी चाहिए)

इस मात्रिक समग्र महां मर्कटी में विशेष विचारणीय यह है कि इसकी प्रथम मात्रा से लेकर अन्तिम मात्रा पर्यन्त आदि लघु आदिक रूप सम्पूर्ण ज्ञात होते हैं। अर्थात जैसे प्रथम मात्रा में आदि लघु वाला एक रूप है वहां एका ही लगाया। और दूसरी मात्रा के प्रस्तार में भी आदि लघु वाला रूप एक ही है अतः दोनों मात्राओं में एक लघु वाले दो रूप होने से दो का अङ्क लगा। एवं तीसरी के प्रस्तार में आदि लघु वाले दो रूप होने से प्रथमे दो और मिलाकर चार हुए तो अंक चार का चिन्ह लगाया। ऐसे भी सर्वत्र और जान लेना रीति सुगम है।

इति कविवर मेहरसिंहेन विरचिते भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे प्रथम भागे मात्रिक मर्कटी प्रत्यय प्रकरण निरूणम नाम एकादशः प्रकाशः।

इति प्रथम भाग;

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः

अथ कविवर मेहर सिंहेन विरचिते भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे द्वितीय भागे वर्ण प्रस्तारादि प्रत्यय प्रकरण निरुपणं नाम प्रथम प्रकाशः

॥ मंगला चरणम् ॥

अब हम प्रथम श्री रामचन्द्र जी का सगुण वस्तु निरदेश रुप मङ्गल कहते हैं !

दोहा

निर्गुण सरगुण एक हैं किञ्चत मात्र भेद ।
भेद गुरु बिन न लखे पावे निशदिन खेद ॥ १ ॥

पुनः सवैया

सारङ्ग (१) के वर से उपजे, कुल सारङ्ग (२) में सुत सारङ्ग (३) चारे ।
सारङ्ग (४) को जिन सारङ्ग (५) तोर, दियो वह सारङ्ग (६) को अवतारे ।
सारङ्ग (७) की दुहिता (८) वर के, कुछु सारङ्ग (९) है घर माहि गुजारे ।
सारङ्ग (१०) से बिन सारङ्ग (११) लेकर, सारङ्ग (१२) में धर सारङ्ग (१३) मारे ।

---

१ अग्नि देवते के वर से, २ सूरज, ३ श्रेष्ठ, ४ शिवजी का ५ धनुष, ६ विष्णु का, ७ धरती की, ८ पुत्री सीता, ९ दिन, १० भ्राता लक्ष्मण, ११ तीर, १२ धनुष में, १३ मृग मारीच

दोहा

श्री गुरु नानक वन्द पद, पुन गुरु गोविन्द सिंह।
सिंह शरण संकट कटे, जिम जम्बुक[१] को सिंह ॥ ३ ॥

कवित

कोमल कमल पर कंटक हैं बीच वांके,
तातें न पदारविन्द के समान माने हैं।
माने हैं मुख र विन्द के समान चन्द पूर,
दूर जे कलङ्क न वियोगी दुख दाने हैं।
दाने[२] हैं जो कवि सारे उपमा निहारे,
हार के पुकारे गुरु ही गुरु समाने हैं।
माने हैं जो दास विनय करे न निराश जिने
दास काज रास को जाने विना जाने हैं ॥४॥

॥ कबित ॥

दशमेश नाथ के विराज हाथ वाज शीश,
केस भेश वेख को न चीत में लुभाने हैं।

---

१ गिदड़   २ दनाह

भाने[1] हैं धर्म ताको जाने हैमरम मारे,
पियारे हैं धर्म धारे कृपाने जाने हैं।
जाने हैं अकाल होर छोड़ के खियाल दास,
दस्खत कीनो दीनो मोश परवाने[2] हैं।
बाने हैं कमान चीच नीचन के मारने को,
दासन के तारने को हाथ मोच दाने हैं ॥५॥

इति कवि वर मेहरसिंहेन विरचिते भाषा पिंगल प्रस्तार छन्द दिवाकरे द्वितीय भागे मङ्गलाचरण निरूपणं नाम प्रथम प्रकाशः ॥

अथ भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे द्वितीय भागे वर्णिक प्रथम प्रत्यय प्रस्तार निरुपणं नाम द्वितीय प्रकाशः ॥

(वर्णिक प्रथम प्रस्तार प्रत्यय निरुपणम्)

जितने वर्णों का प्रस्तार करना है, उतने ही वर्ण गुरु रेखा धर कर आदि गुरु के तले लघु धरे। आगे जैसे ऊपर की रेखा वर्णों की हो वैसे ही नीचे उतारे। जब संख्या पूरी नहीं हो तब बाई ओर गुरु रेखा रुप वर्ण धरकर पूरी करें। ऐसे ही सर्व लघु पर्यन्त क्रिया करने से प्रस्तार की समाप्ति होती है! वर्णों के प्रस्तार करने की दूसरी रीति यह है। पूर्वोकत गुरु वर्ण रेखा रुप

---

१ तोड़ देते हैं २ पर्चे

धर कर जब दाएँ से बांई ओर ऊपर से नीचे को प्रस्तार करें तो आदि में ऊपर के रुप हीं उतारे। अन्त गुरु पर्यन्त और अन्त गुरु के तले लघु धरें तिस अन्त गुरु से आगे के लघु गुरु हो जाते हैं यह नियम है। सर्व लघु पर्यन्त प्रस्तार की समाप्ति।

तीसरी सुगम रीति यह है। पूर्वोक्त रीति से वर्ण धर कर जब बाएँ से दाई ओर ऊपर से तले को प्रस्तार करे तो आदि गुरु के तले तो लघु रखे परे ऊपर के ही रुप उतारे। परन्तु आदि गुरु से आदि के सर्व लघु गुरु हो जाते हैं यह संकेत है। ऐसे ही प्रस्तार करते करते जब सर्व लघु हो जाएँ तब प्रस्तार की समाप्ति होती है। ॥ इति ॥

आगे एक वर्ण से लेकर तीन वर्ण पर्यन्त प्रस्तार चित्र लिखा है।

चित्र देखो

१	२	३	वर्णांक रुपांक
ऽ	ऽऽ	ऽऽऽ	१
।	।ऽ	।ऽऽ	२
२	ऽ।	ऽ।ऽ	३
	।।	।।ऽ	४
	४	ऽऽ।	५
		।ऽ।	६
		ऽ।।	७
		।।।	८
		८	

जहां प्रस्तार प्रारम्भ हो वह आदि और जहां समाप्त हो वह अन्त। बाएँ ओर लघुवर्ण रख कर प्रस्तार करें तब उसको स्थान विपर्यय, नीचे से ऊपर करें तब उसको अधः से ऊर्ध्व, जब अधः ऊर्ध्व प्रस्तार को ही बाएँ ओर लघुवर्ण रखकर करें तब उसको अधः से ऊर्ध्व स्थान विपर्यय कहते है। पूर्वोक्त प्रस्तार से उतना ही भेद है जो उसके गुरु नीचे लघु रखे हैं। और इसके गुरु वर्ण के सिर पर लघु हों और रीति समान है।

निम्न वार्णिक अधः से उर्ध्वा विपर्यय प्रस्तार चित्र

विपर्यय प्रस्तार चित्र

		।।।	८
		।।ऽ	७
		।ऽ।	६
		।ऽऽ	५
	।।	ऽ।।	४
	।ऽ	ऽ।ऽ	३
।	ऽ।	ऽऽ।	२
ऽ	ऽऽ	ऽऽऽ	रुपांक१
१	२	३	वर्णांक

यहां एक से लेकर चतुर्थ वर्ण पर्यन्त अधः से ऊर्ध्व प्रस्तार हैं और अन्तिम चार वर्ण का अधः से ऊर्ध्व स्थान विपर्यय प्रस्तार कहते हैं।

अब प्रस्तारों की अनेक रुपता में सर्व की समान रुपता वर्णिक प्रस्तार ऊर्ध्व अधः आदि भेद से चार प्रकार के हैं और किसी के मत में लघुवर्ण धर करके भी प्रस्तार करने की रीति है। वह भी उक्त भेद से चार प्रकार के हैं और कोई खण्ड प्रस्तार भी कहते है सो भी पूर्वोक्त भेद से चार प्रकार का है। इस तरह से प्रस्तार के अनेक प्रकार हैं तथा करने की रीतियाँ भी अनेक हैं। परन्तु सर्व प्रस्तारों में संख्या और रुपों की किञ्चत मात्र भी विलक्षणता नहीं, इसलिए हमने लिखे नहीं यदि कोइ कवि लिखे तो विनोद मात्र है।

अथ भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे द्वितीय भागे प्रथम वर्णिक प्रस्तार प्रत्यय निरूपणं नाम। (द्वतीयप्रकरशः)

तृतीय प्रकाशः

यदि कोई किसी वर्णों के प्रस्तार के रुपों की संख्या पूछे तो उतने ही रेखा रुप गुरू वर्ण लिख कर उन वर्णों के शीश पर संख्या के अङ्क रखे जो प्रथम पर दो दूसरे पर चार तीसरे पर आठ चौथे पर षोड़स अङ्क रखे अर्थात द्विगुणी धरना जावे अन्त रेखा पर्यन्त। जैसे कोई प्रश्न करे कि पञ्च वर्णों के प्रस्तार में कितने रूप आते हैं उसे उतर देवे जैसे कि रेखा रुप गुरु अङ्क लिखकर उसके सिर पर संख्या अङ्क निम्न रीति से लिखे यथा चित्र देखो।

देखो

वर्ण अङ्क	१	२	३	४	५
संख्या अङ्क	२	४	८	१६	३२
रेखा रुप	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अथ प्रकट वर्ण लुप्त संख्या निरुपणम्

जब कोई वर्ण विशेष की संख्या का प्रश्न करे अर्थात चतुर्थ का पञ्चादिक किसी एक वर्ण की संख्या पूछे तब प्रश्न कर्ता की प्रश्न गत संख्या को चार का भाग देवें तब लब्धि को एक एक अङ्क के १६, १६ करें तब उन १६ को परस्पर गुणा करें भाव तब उस गुणन फल के जोड़ को अलग लिखो। फिर शेष बचे अङ्क को एक एक के दो दो करके उसके साथ भी गुणा करे। सब को जोड़ कर उत्तर कहे परन्तु यह भी ज्ञात रहे कि प्रश्न कर्ता चार वर्ण से अधिक वर्णों का प्रश्न करे तब उत्तर-दाता की सफलता होती है। चार वर्णों से कम वर्ण के प्रश्न का उत्तर अति सुगम है : जैसे किसी ने ९ वर्ण और दश वर्ण की संख्या जानने का प्रश्न किया उसके समाधान का प्रकार :

निम्न प्रकट वर्ण लुप्त संख्या का चित्र

प्रश्नाङ्क ९	९	उत्तर	प्रश्नाङ्क	१०	उत्तर
भाग	४		भाग	४	
लब्धि	२		लब्धि	२	
सोलह-षोड़स	१६×१६		सोलह×सोलह	१६×१६	
गुणन फल	२५६		गुणन फल	२५६	
शेष	१		शेष	२	
जाने	२		जाने	४	
गुणासे	५१२	५१२	गुणासे	१०२४	१०२४

यहां ९ वर्ण की संख्या जानने का प्रश्न है। जब ९ को ४ का भाग दिया तो लब्धि २ आए फिर दो के दो पोड़स किये १६-१६ उसको परस्पर गुणे तब गुणनफल २५६ और पूर्व ९ को चार का भाग करते समय शेष १ बचा उसको दो मानकर पूर्व गुणन फल २५६ के साथ गुणा करने पर ५१२ आया वही उत्तर है। ऐसे ही एकादश वर्ण के प्रश्न में भी क्रिया करनी योग्य है।

अथ लुप्त वर्ण प्रकट संख्या

जब कोई वर्णों को तो गुप्त रखे और संख्या को प्रकट करके

प्रश्न करे कि अमुक संख्या कितने वर्णों की है तब उसको निम्न रीति से उत्तर देवे सो रीति यह है कि प्रश्न संख्या को दो का भाग करे लब्धि को फिर दो पर भाग करो। ऐसे ही इतने पर्यन्त दो पर भाग करता रहे जब पर्यन्त संख्या की समाप्ति नहीं हो और उत्तर इसका यही है जो जितने वार भाग करें उतने ही वर्णों की ही यह संख्या है !

अथ लुप्त वर्ण प्रकट संख्या निम्न चित्र देखो

प्रश्न संख्या	१२८ =	६४ =	३२ =	१६ =	८ =	४ =	२		उत्तर
भाग	२	२	२	२	२	२	२	०	७

ऐसे और भी जान लेना रीति सुगम है।

उभय लुप्त प्रश्नोत्तर मात्रा को संख्या प्रत्यय से जान लेना।

॥ अथ समग्र संख्या प्रकार निरुपणम् ॥

जब कोई एक वर्ण से लेकर वांछित वर्ण पर्यन्त सम्पूर्ण संख्या पूछे उसका समाधान यह है कि, प्रश्न कृत संख्या को द्विगुणी करके बीच में से दो घटा कर शेष समग्र संख्या है। जैसे किसी ने पञ्च वर्णों के प्रस्तार की समग्र संख्या पूछी उसको उत्तर देवे कि पञ्च वर्णों की अन्तिम संख्या ३२ को दो साथ गुणा करके दो घटाए अर्थात ३२ दुगुणा ६४ उसमें से दो घटाए शेष ६२ बचे सोई उस प्रश्न का उत्तर है।

तथा ही नीचे वार्णिक समग्र संख्या चित्र देखो

वर्णाङ्क	५	उत्तर	वर्णांक	६	उत्तर
संख्या	३२		संख्या	६४	
द्विगुणी	६४		द्विगुणी	१२८	
त्याग कर	६२	६२	त्याग कर	१२६	१२६

ऐसे और भी जान लेना रीति सुगम है।

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे द्वितीय भागे द्वितीय वार्णिक संख्या प्रत्यय निरुपणंनाम तृतीय प्रकाशः।

चतुर्थ प्रकाशः

वर्ण सूची '३' प्रत्यय निरुपणम्

जब कोई पूछे कि किअमुक वर्णों के प्रस्तार में से आदि लघु, अन्त लघु, आदि गुरु, अन्त गुरु. आदि अन्त गुरु तथा आदि लघु अन्त लघुओं के कितने रुप हैं! इस प्रश्न के उत्तर का निम्न चित्र देखो।

तथा ही

संख्या	२	४	८	१६	३२
वर्ण	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

यहां यह विचारणीय है कि जितने वर्णों का सूची प्रश्न हो उतने वर्णों को रेखा रुप लिखकर उसके शीर्ष पर संख्या अङ्क धरे वहां जो अन्तिम संख्या से पूर्व संख्याङ्क हैं उनके सम ही आदि लघु अन्त लघु तथा आदि गुरुवाले रुप हैं और अन्तिम संख्या से पूर्व तीसरी संख्या के अङ्क सम आदि अन्त गुरुओं के तथा आदि अन्त लघुओं के रुप हैं जैसे ऊपर लिखे पञ्च वर्णों के अङ्क हैं। यहां अन्तिम संख्या से पूर्व संख्या १६ है वही आदि लघु अन्त लघु तथा आदि गुरु अन्त गुरु के रुप हैं और और अन्तिम से पूर्व तीसरे स्थान पर ८ अङ्क हैं उस सम ही आदि अन्त लघु तथा आदि अन्त गुरुओं के रुप हैं ! ऐसे और भी जान लेना। तथा ही निम्न पञ्च वर्ण सूची चित्र।

देखो

पंक्तिअङ्क						
१	वर्ण	१	२	३	४	५
२	संख्या	२	४	८	१६	३२
३	आदि लघु	१	२	४	८	१६
४	अन्त लघु	१	२	४	८	१६
५	आदि गुरु	१	२	४	८	१६
६	अन्त गुरु	१	२	४	८	१६
७	आदयन्त लघु	१	१	२	४	८
८	आदयन्त गुरु	१	१	२	४	८

अब हम वर्णों की सूची चित्र चित्रण का प्रकार कहते हैं—इसकी प्रथम पंक्ति में वर्णाङ्क दूसरी पंक्ति में संख्या अङ्क तीसरी में शीर्षांक अर्ध करके चौथी में शीर्षांक पञ्चमी में शीर्षांक छठी पंक्ति में शीर्षांक सप्तम पंक्ति में आदि में एका भर कर फिर अनुक्रम से शीर्षांक तथा आठवी पंक्ति में शीर्षांक धरें।

यहां सुगम रीति यह है कि जितने वर्णों की सूची ज्ञात करनी होवे उतने वर्णों की संख्या से अर्ध तो आदि लघु, अन्त लघु, आदि गुरु तथा अन्त गुरुओं के रुप होते हैं। और तांते अर्ध आदयन्त लघु के तथा आदयन्त गुरुओं के रुप होते हैं। परन्तु प्रथम अङ्क को समान ही समझे। रीति स्पष्ट है जो ऊपर चित्र में दिखाई है।

॥ अथ वार्णिक समग्र सूची प्रकार ॥

समग्र सूची जानने की युक्ति यह है कि एक वर्ण से लेकर जितने वर्ण पर्यन्त लघु गुरु आदि रूपों की सूची ज्ञान करनी हो तब अन्तिम वर्ण की संख्या में से एक घटाए शेष जो बचे वह उतने ही रूप आदि लघु अन्त लघु तथा आदि गुरु अन्त गुरु के हैं और अन्तिम संख्या से पूर्व की संख्या समान आदि अन्त लघु तथा आदि अन्त गुरुओं के रूप हैं। जैसे दो वर्णों की संख्या चार होती है उन में से एक कम किया तो शेष रहे तीन। वह तीन २ ही आदि लघु अन्त लघु तथा आदि गुरू अन्त गुरू होंगे। चार से पूर्व संख्या दो है वह दो रूप आदि अन्त लघु के दो ही आदि अन्त गुरू के होंगे। ऐसे और

भी सर्वत्र जानो :

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे द्वितीय भागे वार्णिक समग्र सूची प्रकरणम् नाम चतुर्थ प्रकाशः।

पाताल प्रत्यय निरुपणम्

जब कोई प्रस्तार में सर्व लघु, सर्व गुरु, तथा सर्व वर्ण का पता पूछे तो पाताल यन्त्र से उत्तर दो।

वार्णिक पाताल चित्र तथा रीति

वर्ण	१	२	३	४	५	वर्णांक
संख्या	२	४	८	१६	३२	संख्याङ्क
सर्व लघु	१	४	१२	३२	८०	छन्दाङ्क के आधे×वर्णांक
सर्व गुरु	१	४	१२	३२	८०	शीर्षाङ्क
सर्व अङ्क	२	८	२४	६४	१६०	शीर्षाङ्क × २

वर्ण समग्र पाताल प्रत्यय चित्र

१	वर्णांक	१	२	३	४	५	वर्णांक
२	भेद	२	४	८	१६	३२	भेदांक
३	समग्र भेद	२	६	१४	३०	६२	प्रथमघरमें '२' आगेखालीघर काशीर्पांक + पहलेघरकाऽङ्क
४	लघु, गुरु	१	४	१२	३२	८०	आधे छन्दांक×वर्णांक
५	समग्रलघु	१	५	१७	४९	१२८	प्रथमघरमें '१' आगेखालीघर के आदि + शीर्षांक
६	सर्वाङ्क	२	८	२४	६४	१६०	चौथी पङक्ति के दुगणे
७	समग्रांङ्क	२	१०	३४	९८	२५६	पांचवी पङक्ति की तरह

इति द्वितीय भागे पाताल प्रत्यय निरुपणम् नाम पंचम प्रकाशः

अथ वर्णिक पंचम नष्ट प्रत्यय प्रकार निरूपणाम नाम पंचम प्रकाशः

जब कोई पूछे कि अमुक वर्णों के प्रस्तार में से अमुक रूप कौन सा है उस प्रष्टा को इस नष्ट रीति से उत्तर दो। जितने वर्णों के प्रस्तार में से प्रश्न हो वे उतने ही लघु अङ्क रेखा रूप से रखकर उसके ऊपर संख्या इस रीति से रखे जो प्रथम ऊपर एकांक फिर दुगुणी २ अनुक्रमता से। अन्तिम संख्या का दुगुणी करके बिना अङ्क रेखा रूप कर रखे उसमें से प्रश्न अङ्क घटा कर शेष को संख्या अङ्क साथ सम करे जो सम होवे सो संख्या के नीचे का अङ्क गुरु हो जाता है तब रूप यथार्थ सिद्ध हो जायगा जैसे किसी ने पूछा कि पंच वर्णों के प्रस्तार में से सप्तम रूप कौन सा है उसको इस प्रकार से उत्तर दिया कि लघु वर्ण रेखा रूप ऊपर संख्या ऐसे रखे। अन्तिम संख्या

१ २ ४ ८ १६

। । । । । ०३२

३२ से ७ अङ्क न्यून करे तब शेष बचे २५ उसके साथ १६ से ८ और १ सम हुए तब वह गुरु होकर यह ऽ।।ऽऽ रूप सिद्ध हुआ यही उत्तर है।

यथा पांच वर्ण प्रस्तार में सप्तम रूप कौन सा है तथा निम्न चित्र देखो

संख्या	१	२	४	८	१६	
वर्ण	।	।	।	।	।	०३२
प्रश्नांक			७			
घटाए			३२−७=२५			
शेष			४			
समांङ्क			१ ८ १६			
सहीरूप			ऽ।।ऽऽ			
उत्तर			ऽ।।ऽऽ			

ऐसे और भी जान लेना, यहां रीति मात्र जनाई है और दूसरी सुगम रीति यह है कि जब कोई पूछे कि अमुक वर्णों के प्रस्तार में से अमुक रूप कौन सा है तब विचारणीय है जो प्रश्न विषम वर्ण का हो तो गुरु रेखा रूप वर्ण लिखे और यदि प्रश्न सम वर्ण का हो तब लघु रेखा रूप वर्ण लिखे फिर उस प्रश्न अङ्क संख्या को आधा २ कर के विचारें यदि विषम हो तो गुरु लिखे यदि सम हो तो लघु लिखे। और जहां अर्ध विषम हो तहां एक और मिला के आधा करे। ऐसे करते करते जब वर्णों की संख्या पूरी हो तब समाप्ति करे जैसे किसी ने पूछा कि पंच वर्णों के प्रस्तार में से ११ वां रूप कैसे है तब उस प्रश्न को विषम होने से गुरु रेखा रूप ऽ धरे फिर उसमें एक और मिला के १२ करे फिर अर्ध करने से सम ६ आए फिर

लघु वर्ण रेखा रूप लिखा फिर ६ को अर्ध करने से ३ विषम रूप आए फिर एक गुरु रेखा रूप ऽ वर्ण लिखा फिर ३ विषम में एक और मिलाया तो चार हुए उस का अर्ध करने पर तो दो सम आए तो लघु वर्ण रेखा रूप लिखो फिर दो का अर्ध करने से एक विषम आया तो एक गुरु वर्ण लिखने से यह =ऽ। ऽ। ऽ स्वरूप सिद्ध हुआ। और ज़हां प्रश्न संख्या अल्प होवे और स्वरूप वर्ण अधिक होवे जैसे किसी ने पूछा कि पंच वर्णों के प्रस्तार में से तृतीय रूप कैसे है उस के प्रश्न के वर्ण के तीन अल्प हैं और पंच वर्ण प्रस्तार वाले अधिक हैं यद्यपि तीन विषम होने से एक गुरु वर्ण रेखा रूप ऐसा ऽ लिखे फिर इसमें एक और मिलाकर चार करके अर्ध करे तव दो सम होने से एक लघु '।' लिखा फिर दो को अर्ध किया तव एक विषम आने से एक गुरु लिखा यद्यपि प्रश्न संख्या समाप्त हो चुकी है तथापि जव पर्यन्त प्रश्न कृत रूप सिद्ध नहीं होवे उतने पर्यन्त वही वर्ण धर्ता रहे जिस पर प्रश्न कृत संख्या समाप्त हुई है। जैसे पूर्वोक्त प्रश्न की संख्या एक विषम से समाप्ति होने से दो गुरु वर्ण और लगाए अव यह ऽ। ऽ ऽ ऽ रूप सिद्ध हुआ। और अधः से ऊर्ध्व प्रस्तार का नष्ट प्रकार भी इस से भिन्न नहीं है।

अथ वार्णिक स्थान विपर्यय नष्ट प्रकार निरूपणम् इस पूर्वोक्त नष्ट प्रकार से इस स्थान विपर्यय नष्ट प्रकार का इतना ही भेद है जो पूर्वोक्त नष्ट प्रकार में तो संख्या अङ्क बांए से

दाए ओर को लगाए थे। और इस स्थान विपर्यय नष्ट प्रकार के संख्यांक दाए से बांए ओर को लगाए जाते हैं और सर्व रीति समान है।

तथा ही नीचे पंच वर्णों के प्रस्तार में सप्तम रूप प्रश्न चित्र देखो

संख्या	१६ ८ ४ २ १
वर्ण	३२ । । । । ।
प्रश्नांक	७
घटाए	३२—७
शेष	२५
समांङ्क	१६ ८ १
सहीरूप	ऽ ऽ । । ऽ उत्तर

और वर्ण अधः से ऊर्ध्वस्थान विपर्यय नष्ट प्रकार भी इस नष्ट प्रकार से किंचत मात्र भिन्न नहीं है। इसलिए हमने भिन्न प्रकार लिखी नहीं।

इति वार्णिक पंचम नष्ट प्रत्यय प्रकार निरूपणम् नाम पंचम प्रकाशः।

अथ वर्णिक षष्ट उदिष्ट प्रत्यय प्रकार निरूपणम् नाम षष्ट प्रकाशः

जब कोई प्रकट रूप को लिखकर पूछे कि यह रूप कितना है। तब उदि्ष्ट रीति से उत्तर देवे यथा प्रष्टा ने जो रूप लिखा है उसके सिर पर एक दो चार आदिक संख्या अङ्क धर के पुनः लघु शीर्षांक जोड़ कर एक और मिला कर उत्तर देवे।

(चार वर्णों के प्रस्तार में से नीचे वर्णं उदि्ष्ट चित्र)

प्रश्न	ऽ ऽ । ऽ	उत्तर
संख्या	१ २ ४ ८	
वर्ण	ऽ ऽ । ऽ	
जोड़	४+१	५

पनः दूसरी रीति यह है –कि जो पूर्वोक्त प्रश्न पर संख्या के अंक लिखे परन्तु इसमें इतना भेद है—जो कि इसमें गुरुओं के शीर्षांक जोड़ कर अन्तिम पूर्ण संख्या में से घटा कर शेष बचे सोई उत्तर है जैसे चार वर्णों के प्रस्तार में से यह ऽ ऽ ऽ। रूप कितना है अब उसका उत्तर यह है कि इसके सिरे पर

१ २ ४ ८

संख्या यह ऽ ऽ ऽ । ० १६ है और अन्त में १६ पूर्ण संख्या धरी है इसमें गुरु शीर्षांक १ २ ४ मिल के ७ हुए उसको अन्तिम पूर्ण संख्या १६ में से निकाले तो बचे ९ है सोई उत्तर है।

(चार वर्णों के प्रस्तार का वर्ण उदिष्ट चित्र)

अङ्क	प्रस्तार
१	ऽ ऽ ऽ ऽ
२	। ऽ ऽ ऽ
३	ऽ । ऽ ऽ
४	। । ऽ ऽ
५	ऽ ऽ । ऽ
६	। ऽ । ऽ
७	ऽ । । ऽ
८	। । । ऽ
९	ऽ ऽ ऽ ।
१०	। ऽ ऽ ।
११	ऽ । ऽ ।
१२	। । ऽ ।
१३	ऽ ऽ । ।
१४	। ऽ । ।
१५	ऽ । । ।
१६	। । । ।

प्रश्न	ऽ ऽ ऽ ।	उत्तर
संख्या	१ २ ४ ८	
रूप	ऽ ऽ ऽ । १६	
जोड़	१ + २ + ४ = ७	
घटे	१६ — ७	
शेष	९	९

वर्णोंदिष्ट चित्र तीसरा प्रकार

प्रश्न	ऽ	।	ऽ	।	उत्तर
संख्या	११	६	३	२	
रूप	ऽ	।	ऽ	।	११
प्रश्न	।	ऽ	।	ऽ	उत्तर
संख्या	६	३	२		
रूप	।	ऽ	।	ऽ	६

पुनः वर्ण उदिष्ट की तृतीय प्रकार। जब प्रश्न करत प्रकट रूप लिख कर पूछे तब अन्त लघु से संख्या धरनी आरम्भ करे सो लघु शीप पर दो अङ्क धरे आगे दुगणी दुगणी करके धरे परन्तु गुरु के सिर से दुगुणी में से एक त्याग के धरे ऐसे करते करते अन्तिम संख्या जो है वही उत्तर है तथा ही ऊपर वर्णोंदिष्ट चित्र।

यह यहां विचार है जिस प्रश्न का यह = ऽ । ऽ ।
रूप है उसके सिर पर ऐसे ११ ६ ३ २
संख्या +ऽ । ऽ ।
लाई है जो अन्तिम लघु के सिर पर २ धर के फिर दो दूने चार करे आगे गुरु रूप होने से चारों में से एक घटाकर तो बाकी ३ धरे फिर तीन दुगणी ६ करे सो आगे लघु अंक होने से घटे नही सोई धरिया फिर ६ दुगणी १२ आगे गुरु अङ्क देख कर एक घटा के बाकी ११ धरे और प्रस्तार का रूप समाप्त होने से सोई ११ वां रूप ही उत्तर है। ऐसे और भी जान लेना।

और वर्णिक अधः से उर्ध्व प्रस्तार का उदिष्ट भी इस पूर्वोक्त उदिष्ट से भिन्न नहीं है।

अथ वार्णिक स्थान विपर्यय उदिष्ट प्रत्यय प्रकार निरूपणम्

पूर्वोक्त उदिष्ट से स्थान विपर्यय उदिष्ट में केवल इतना ही भेद है जो इसके अङ्क दाएं से बाएं ओर को लगाए हैं और लघु सिर के अङ्क जोड़ कर एक और मिलाके वही उत्तर आवेगा। तथा ही नीचे चित्र देखो

		उत्तर
प्रश्न	ऽ । ऽ ।	
संख्या	८ ४ २ १	
रूप	ऽ । ऽ ।	
जोड़	४+१+१	६

ऐसे ही द्वितीय प्रकार के उदिष्ट को भी जान लेना। जो दाए' से बाए' ओर को अङ्क धरने की रीति है। वृद्धि भय वशते हमने चित्र नहीं लिखा रीति भी अति सुगम है। और तीसरे उदिष्ट का प्रकार भी किंचित विलक्षण है जो इसके संख्या अङ्क भी पूर्वोक्त उदिष्ट से किंचित मात्र भिन्न है। केवल बाए' से दाए' ओर को अङ्क धरने की विशेषता है। शेष रीति समान है। इसलिए हमने उदिष्ट चित्र नहीं लिखा।

इति वर्णिक षष्ट उदिष्ट प्रत्यय प्रकार निरूपणम् नाम षष्ट प्रकाशः।

अथ वर्णिक सप्तम मेरु प्रत्यय प्रकार निरूपणम् नाम सप्तम प्रकाशः

इसकी प्रथम पंक्ति में दो घर करे फिर तिसके नीचे एक घर प्रत्येक पंक्ति में बढ़ावे जितने वर्णों का मेरु करना हो उतने ही घर करे उनके दोनों ओर कोने करे मात्रिक साङ्ग मेरु के समान तिसमें अङ्क भरने की यह रीति है जो कि प्रथम मेरु के दोनों ओर एके अंक लिखे फिर मध्य के शून्य घर शीर्श के दो दो अंक जोड़ जोड़ के नीचे को भरता चले परन्तु एक एक पूर्व का अंक भी साथ मिलाता जाए तिरछे ढङ्ग से सो जब तक मेरु के शून्य घर सारे नहीं भर जाते तब पर्यन्त पूर्वोक्त रीति करे अर्थात् = ऊपर से भर भर के फिर पंक्ति दो का जोड़ जोड़ के नीचे लिखे सो जोड़ के अंक अपनी अपनी पंक्ति के सम वर्णक प्रस्तार में सम्पूर्ण भेद के सूचक जानो जैसे आगे चित्र भी लिखा है।

अथ निम्न अष्ट वार्णिक मेरु चित्र देखो

वर्ण										संख्या
१	१	१								२
२	१	२	१							४
३	१	३	३	१						८
४	१	४	६	४	१					१६
५	१	५	१०	१०	५	१				३२
६	१	६	१५	२०	१५	६	१			६४
७	१	७	२१	३५	३५	२१	७	१		१२८
८	१	८	२८	५६	७०	५६	२८	८	१	२५६

अब वर्णिक मेरु बाचने की रीति यह है

जितने वर्णों का प्रस्तार हो उतने ही गुरुओं का प्रथम रूप होता है। और पुनः एक लघु प्रत्येक घर में अधिक होता जाएगा सारी पंक्ति में अन्त पर्यन्त यही संकेत है जैसे एक वर्ण के प्रस्तार में से एक गुरु का १ रूप है और एक लघु वाला भी एक ही रूप है। और दो वर्णों के प्रस्तार में से दो गुरु का एक रूप है एक २ लघु वाले दो रूप हैं सारे चार

रूप हैं। और तीन वर्णों के प्रस्तार में से दो गुरु का एक रूप है। एक एक लघु वाले तीन रूप हैं, दो दो लघु वाले भी तीन रूप हैं। और तीन लघु वाला एक रूप है सारे मिल के ८ रूप हुए। और चार वर्णों के प्रस्तार में से चार गुरुओं वाला एक रूप है, एक एक लघु वाले चार रूप हैं, दो दो लघु वाले ६ रूप हैं, और तीन तीन लघु वाले चार रूप हैं। चार लघु वाला एक रूप है सारे ज़ोड़ के १६ रूप हैं। ऐसे ही आगे भी जान लेना और दूसरी रीति वाचने की यह है।

कि जितने वर्णों का प्रस्तार हो उतने ही लघु वर्णों का प्रथम रूप होता है और पुनः एक एक गुरु प्रत्येक घर में अधिक अधिक होता जायगा सारी पंक्ति में अन्त पर्यन्त यही नियम है जैसे कि एक वर्ण के प्रस्तार में से एक लघु का एक रूप है और एक गुरु वाला भी एक रूप है सारे मिलके दो हुए। दो वर्णों के प्रस्तार में से दो लघु वाला एक रूप हैं, एक एक गुरु वाले दो रूप हैं दो गुरु वाला एक रूप है सारे मिलके चार रूप हुए। तीन वर्णों के प्रस्तार में से तीन लघु वाला एक रूप है और एक एक गुरु वाले तीन रूप हैं। दो दो गुरु वाले भी तीन रूप हैं तीन गुरु वाला एक रूप है सारे मिलके ८ रूप हुए। चार वर्णों के प्रस्तार में से चार लघु वाला एक रूप हैं। एक एक गुरु वाले चार रूप हैं, दो दो गुरु वाले छः रूप हैं, तीन तीन गुरु वाले चार रूप हैं चार गुरु वाला एक

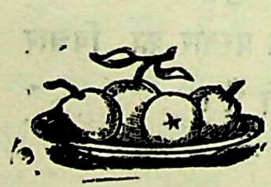
रूप हैं सारे मिलके १६ रूप हुए। ऐसे और भी सारे मेरु में जान लेना। और दाएं से बाएं बाचने की रीति समान हैं।

अथ शौन्ध मेरु चित्र विचार

पहले शौन्ध मेरु चित्र का विचार सुनिए शौन्ध मेरु भासाङ्ग मेरु के समान ही है कुछ भेद हैं जो कि इसके नीचे एक तरफ हैं और भरने की रीति भी भिन्न है जो पहले ऊपर से नीचें को एके अङ्क नीचे को मिला मिला के धरे पुनः वही अङ्क पुनः पुनः मिला के एक अन्त का अङ्क—छोड़ कर सभी को भरे पुनः नीचे सभी को जोड़ कर के धरे जैसे आगे मेरु को शौन्ध में नीचे लिखा है अष्ट वर्ण के शौन्ध मेरु के प्रथम खण्ड का जोड़ ८ लघु का सूचक है और दूसरे खण्ड का जोड़ ३६ रूप एक एक गुरु के सूचक हैं तीसरे खण्ड का जोड़ ८४ रूप दो दो गुरु के और चौथे खण्ड का जोड़ १२६ रूप चार चार गुरु का है। षष्ट खण्ड का जोड़ ८४ पांच पांच गुरु का पुनः ३६ रूप ६-६ गुरु का है पुनः सात सात गुरु का पुनः एक रूप सर्व गुरु का जानो भाव यह है कि ८ गुरु का यह अष्ट वर्ण के प्रस्तार का विचार है अब हम शौन्ध मेरु का चित्र लिखते हैं।

॥ अथ शौन्ध मेरु चित्र प्रदर्शन ॥

वाएं शौंध जोड़ २								१	१
जोड़ ४							१	२	१
८						१	३	३	१
१६					१	४	६	४	१
३२				१	५	१०	१०	५	१
६४			१	६	१५	२०	१५	६	१
१२८		१	७	२१	३५	३५	२१	७	१
२५६	१	८	२८	५६	७०	५६	२८	८	१
नीचे जो :—	१	९	३६	८४	१२६	१२६	८४	३६	८



॥ अथ दाई ओर का शौन्ध मेरु चित्र प्रदर्शन ॥

यथा=

									जोड़
१	१								२
१	२	१							४
१	३	३	१						८
१	४	६	४	१					१६
१	५	१०	१०	५	१				३२
१	६	१५	२०	१५	६	१			६४
१	७	२१	३५	३५	२१	७	१		१२८
१	८	२८	५६	७०	५६	२८	८	१	२५६
८	३६	८४	१२६	१२६	८४	३६	९	१	नीचे जोड़

यह शौन्ध मेरू साङ्ग मेरू की तरह भी बाच सकते है। और बोध भी उसके समान होता है, जो साफ ओर का आदि घर सर्व लघु का सूचक है और द्वितीय आदि घर एकादिक गुरु के सूचक हैं। और विषम ओर का आदि घर तो सर्व गुरु का सूचक है और द्वितीय आदि घर एकादिक लघु के सूचक हैं।

॥ शौन्ध मेरू समाप्तम् ॥

॥ अथ खंड मेरु कथनम् ॥

अब हम पाठकों के लाघव के लिए खण्ड मेरु को कहते हैं:--जितने वर्णों की पान्ती देखनी हो उतने वर्णों से एक अधिक वर्ण रखे पुनः अन्तिम वर्ण को आदि के वर्ण साथ मिलाते हुये नीचे लिखते रहो। पर शुरु का वर्ण नहीं मिलावे। और एक एक बार मिलाकर छोड़ देवे तिसको शुद्ध जाने सो प्रश्न की पान्ति बन जावेगी।

१	१	१	१	१	१
१.	५.	४	३	२	१
१.	५.	१०.	१	३	१
.१	५.	१०.	१०.	४	१
१.	५.	१०.	१०.	५.	१

जैसे किसी ने मेरु की पञ्चम पान्ति पूछी तब छः एके अंक धरे सो ऐसे होवें--पुनः जोड़े तो दूसरी पांति की तरह हैं, पुनः मिलाए तब तीसरी सय, पुनः मिलाए तब चौथी सम और पुनः शोधे तब पांचवी सम हुए। इस प्रकार शोधने से मेरु खण्ड की पान्ति बन जाती है। नुक्तों के अर्थात अनुस्वारों के निशान शुद्ध हुए के हैं।

ऐसे ही जितने वर्णों के खण्ड मेरु की इच्छा हो उतने ही वर्णों का निकालकर देखो रीति सुगम है। इसलिए हमने विस्तार पूर्वक नहीं लिखी।

इति मेरु प्रत्यय निरुपणं नाम सप्तम प्रकाशः

अथ वार्णिक अष्ठम पताका प्रत्यय प्रकार निरुपणम्

नाम अष्टम प्रकाशः

पाताका नाम ध्वजा का है जैसे कि वस्त्र पर की हुई चित्रकारी सब के दृष्टिगोचर होती हैं—तैसे ही यह—पताका भी मेरु में कहे जो एक दो दो व तीन तीन गुरु लघु के स्थानों के दृष्टि गोचर कराती है। इसके रचना करने की रीति यह है:——

जो प्रथम तीन पंक्ति करके उनमें घर करे जितने वर्णों की पताका करनी हो उसमें एक घर अधिक करे तिसकी प्रथम पान्ति में बाईं ओर को क्रमशः अङ्क धरे प्रथम घर में तो शून्य पुनः एकादिक धरे जितने वर्णों की रचना करनी हो। और दूसरी पान्ति में मेरु की पान्ति के अङ्क धरे और तीसरी पान्ति में एक दो चारादिक संख्या अंक धरे। नीचे मेरु की पान्ति के अंकों समान धर कर के मात्रिक पाताका के समान भरे अर्थात अन्तिम संख्या में से एक २ अंक घटा के मेरु की पंक्ति के नीचे के प्रथम घर भरे। पुनः दो दो घटा के द्वितीयादि भरे। मात्रिक पाताका में हमने खोलकर लिखा है वहां से जान लेना।

निम्न पंच वर्ण पताका चित्र देखो

५	४	३	२	१	०
१	५	१०	१०	५	१
१	२	४	८	१६	३२
	२	४	८	१६	
१	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	२८	
	९	१०	१५	३०	
	११	११	२०	३१	
		१३	२२		
		१८	२३		
		१९	२६		
		२१	२७		
		२५	२९		

इस पताका के नीचे घरों में जो अंक हैं वह वर्ण प्रस्तार के रुपों के स्थानों के बोधक हैं।

और पाताका के वाचने का प्रकार यह है:--

आदि घर को छोड़कर अग्रिम गृहावली के घरों के अंक एक २ गुरु के बोधक हैं और द्वितीय गृहावली के घरों के अंक

दो दो गुरु स्थानों के सूचक है ऐसे ही तीसरी चौथी आदि गृहा-वली के घरों के अङ्क तीन २ चार ३ गुरु आदि के बोधक है । और एक एक गुरु अधिक होता जायगा और जब बाएँ से दाएँ ओर को पढ़े तब आदि घर को छोड़ प्रत्येक गृहावली एक दो तीन चारादिक लघु वर्णों की सूचक हैं । और गृहावलियों के अङ्क प्रस्तारों के स्थानों के सूचक है ।

इति वार्णिक पताका अष्टम प्रत्यय प्रकार निरुपणम् नाम
अष्टम प्रकाशः

अथ नवम् मर्कटी प्रकार निरुपणम् नाम नवम् प्रकाशः

इस मर्कटी द्वारा ही वर्णों के छन्द भेद और लघु गुरु आदि अन्त रुप और कला पिण्डादिक सर्व का ज्ञान होता है ।

अब नीचे पंच वर्ण साधारण मर्कटी चित्र देखो

पान्त्याङ्क							
१	वर्ण		१	२	३	४	५
२	भेद	रुप	२	४	८	१६	३२
३	आदि गुरु	ऽ०	१	२	४	८	१६
४	आदि लघु	।०	१	७	४	८	१६
५	अन्त गुरु	०ऽ	१	२	४	८	१६
६	अन्त लघु	०।	१	२	४	८	१६
७	आदि अन्त गुरु	ऽ०ऽ	१	१	२	४	८
८	आदि अन्त लघु	।०।	१	१	२	४	८
९	आदि गुरु अन्त लघु	ऽ०।	०	१	२	४	८
१०	आदि लघु अन्त गुरु	।०ऽ	०	१	२	४	८
११	सर्व गुरु रुप	ऽ	१	१	१	१	१
१२	सर्व लघु रुप	।	१	१	१	१	१

अब पञ्च वर्ण साधारण मर्कटी चित्र चित्रण प्रकार देखो इस मर्कटी की प्रथम पान्ति में वर्णांक धरे। द्वितीय पान्ति में भेदाङ्क धरे। तृतीय पान्ति में शीर्षांक को आधा करके धरे। चौथी पान्ति में शीर्षांक धरे पञ्चमी पान्ति में भी शीर्षांक धरे, षष्ठी पान्ति में भी शीर्षांक धरे, सप्तम पान्ति में आदि एका धर कर पुनः अनुक्रमता से शीर्षांक धरे। और आठवीं पान्ति में भी शीर्षांक धरे, नौमी पान्ति में आदि ऐके के नीचे शून्य पुनः शीर्षांक धरे। १०वीं पान्ति में शीर्षांक धरे। और ग्यारहवीं पान्ति में सर्व ऐके ही धरे। तैसे ही बारहवी पान्ति में भी ऐके ही धरे।

अब मर्कटी तात्पर्य कहते हैं:—

यह मर्कटी केवल पञ्च वर्णों के प्रस्तार के आदि अन्त गुरु लघु आदिक रुपों को सूचन करती है। अन्य भाव स्पष्ट है।

अब पञ्च वार्णिक भाव गर्भित साधारण चित्र

देखो

पान्त्याङ्क						
१	वृत	१	२	३	४	५
२	भेद	२	४	८	१६	३२
३	आदि गुल अन्त गुल	१	२	४	८	१६
४	आदि अन्त गुल	१	१	२	४	८
५	गाद्यन्त लो लाद्यन्त गो	०	१	२	४	८
६	सर्व गुल	१	१	१	१	१

इस मर्कटी में अङ्क धरने की रीति यह है:—जो प्रथम पान्ति में वर्णाङ्क धरे। और द्वितीय पान्ति में भेदाङ्क धरे और तीसरी पान्ति में आदि एका पुनः शीर्षाङ्क धरे, चौथी पान्ति में आदि में ऐका धर कर पुनः शीर्षाङ्क धरे, पञ्चमी पान्ति में एकांक के नीचे शून्य धर कर पुनः शीर्षाङ्क धरे। और ६वीं पान्ति में सर्व ऐके अङ्क ही धरे।

इसमें विशेष विचार यह है:—जो यह पञ्च वर्ण की साधारण मर्कटी है। इस मर्कटी में पूर्वोक्त मर्कटी से किञ्चित मात्र भी अर्थ में विलक्षणता नहींहै किन्तु लाघव होने से गौरवका अभाव हैं। जो विलक्षणता है सो भी चित्र और पदों में है सो इसको प्रकट करते हैं—भाव गर्भित कहिए कि पूर्वोक्त मर्कटी का भाव तो प्रकट है। और इस मर्कटी का भाव गर्भ विषे है। तथा ही—जो इस मर्कटी की सारी षष्ट पान्ति है इसकी प्रथम पान्ति में वृत-भाव वर्ण है और दूसरी पंक्ति में भेद-संख्या के अङ्क हैं। जिनके अर्थ यह है कि एक वर्ण के प्रस्तार भेद दो। दो वर्णों के प्रस्तार भेद चार, तीन वर्णों के प्रस्तार भेद ८ हैं ऐसे और भी जान लेना।

और तीसरी पान्ति के आदि में आदि गुल तथा अन्त गुल पदों का यह अर्थ है—कि इस तीसरी पान्ति में गु—तो गुरु का सूचक है और ल लघु वर्ण का सूचकहै अर्थ यह—कि इस पान्ति में आदि गुरु से आदि लघु तथा अन्त गुरु से अन्त लघु के रुप आवेंगे जैसे कि एक वर्ण के प्रस्तार में से आदि गुरु का एक

रुप, दो वर्णों के प्रस्तार में से आदि गुरु के दो रुप ,तीन वर्णों के प्रस्तार में से आदि गुरु के चार रुप, चार वर्णों के प्रस्तार में से आदि गुरु ८ रुप हैं और तथा पञ्च वर्णों के प्रस्तार में से आदि गुरु के १६ रुप हैं। एवं इतने ही आदि लघु के इतने इतने ही अन्त गुरु के तथा इतने ही अन्त लघु के रुप हैं।

और मर्कटी की चौथी पान्ति के आदि में जो आदि अन्त गुल पद है इसके यह—अर्थ है कि इस पान्ति के अङ्क आदि अन्त गुरु के और आदि अन्त लघु रुपों के सूचक है और पञ्चम पान्ति के आदि में गादयन्त लो पद का यह अर्थ है कि इस पञ्चम पान्ति के अङ्क आदि गुरु एवं अन्त लघु के सूचक हैं। और लाद्यन्त गो पद का यह अर्थ है कि लघु आदि अन्त गुरु के सूचक है और षष्ठम पान्ति के आदि पद सर्व गुल—का यह अर्थ है कि इस षष्ठम पान्ति के अङ्क सर्व गुरु और सर्व लघु रुपों के बोधक है। सो सर्व प्रस्तारों में सर्व गुरु का एक एक रुप ही सर्व लघुओं का होता है। यह रीति वर्ण मर्कटी में सर्वत्र जान लेनी।

अब हम समग्र मर्कटी को कहते है :—

अर्थ यह है कि एक वर्ण से लेकर इष्ट वर्ण पर्यन्त सारे कितने भेद हैं कितने आदि गुरु के रुप हैं जो आदि अन्त पर्यन्त सर्व को ज्ञात करावें वही ही समग्र मर्कटी कही है। जैसे एक वर्ण प्रस्तार में से आदि गुरु का एक, दो वर्णों के प्रस्तार में से आदि गुरु के दो रुप हैं और सारे तीन रुप हैं और तीन वर्णों के प्रस्तार

में से आदि गुरू के चार रूप हैं और सारे सात रूप हैं और चार वर्णों के प्रस्तार में से आदि गुरू के आठ रूप हैं और सारे १५ रूप हैं ऐसे और भी आदि लघु आदिक जान लेने और इस मर्कटी प्रकरण की समाप्ति में हम एक सुगम मर्कटी का चित्र भी लिखेंगे। जिस से पूर्व मर्कटीयों का ज्ञान सुगम रीति से हो जाएगा।

अब पंच वर्ण साधारण समग्र मर्कटी चित्र देखो

पान्त्याङ्क							
१	वृत	१	१	२	३	४	५
२	भेद		२	४	८	१६	३२
३	समग्र भेद		२	६	१४	३०	६२
४	आदि गुरु	ऽ०	१	३	७	१५	३१
५	आदि लघु	।०	१	३	७	१५	३१
६	अन्त गुरु	०ऽ	१	३	७	१५	३१
७	अन्त लघु	०।	१	३	७	१५	३१
८	आदि अन्त गुरु	ऽ०ऽ	१	२	४	८	१६
९	आदि अन्त लघु	।०।	१	२	४	८	१६
१०	आदि गुरु अन्त लघु	ऽ०।	०	१	३	७	१५
११	आदि लघु अन्त गुरु	।०ऽ	०	१	३	७	१५
१२	सर्व गुरु रुप	ऽ	१	२	३	४	५
१३	सर्व लघु रुप	।	१	२	३	४	५

इस मर्कटी की प्रथम पान्ति में वर्णांक धरे द्वितीय पान्ति में भेदांक धरे। तीसरी पान्ति में शून्य घर के आदि और शीर्षांक जोड़ कर धरे। चौथी पान्ति में शीर्षाङ्क को आधे करके धरे, पञ्चवीं पान्ति में शीर्षांक धरे ६ और ७ पान्ति में भी अनुक्रम से शीर्षांक धरे। ८वीं पान्ति में शून्य घर के शीर्षांक में से तिसके आदि घर के अंक निकाल के बाकी धरे ९वीं पान्ति में केवल शीर्षांक धरे। १०वीं पान्ति में आदि शून्य पुनः खाली के आदि घर का और शीर्षांक जोड़ कर धरे ११वीं पान्ति में शीर्षांक धरे। १२वीं पान्ति में अनुक्रम से एक दो तीनादिक अंक धरे। १६वी पान्ति में भी शीर्षांक धरे ॥

इति

इस मर्कटी के सम्पूर्ण घरों के अंक से समग्र स्वरूपों का ज्ञान होता है और रीति सुगम है अतः हमने लिखी नहीं।

अब पञ्च वार्णिक साधारण समग्र भाव गर्भित मर्कटी चित्र देखो

पान्त्याङ्क						
१	वृत	१	२	३	४	५
२	भेद	२	४	८	१६	३२
३	समग्र भेद	२	६	१४	३०	६२
४	आदि गुल अन्त गुल	१	३	७	१५	३१
५	आदि अन्त गुल	१	२	४	८	१६
६	गाद्यन्त लो लाद्यन्त गो	०	१	३	७	१५
७	सर्व गुल	१	२	३	४	५

इस मर्कटी की प्रथम पान्ति में तो वर्णांक है और दूसरी पान्ति में भेदांक धरे हैं। और तीसरी पान्ति में शून्य धरके आदि अंक और शीर्षांक ज़ोड़ कर धरे। चौथी पान्ति में शीर्षांक का आधा करके धरे। पञ्चमी पान्ति में शीर्षांक में से उस शीर्षांक के आदि का अंक निकाल कर धरे। षष्टी पान्ति में आदि में तो शून्य पुनः शून्य धर के आदि का और तिसके शीर्षांक धरे व आदि में शून्य पुनः चौथी पान्ति के अंक धरे। और ७वीं पान्ति में एकादिक अंक अनुक्रम से धरे

मर्कटी में कठिन शब्दों के अर्थ

समग्र भेद-एक वर्ण के प्रस्तार से लेकर इष्ट वर्ण पर्यन्त-सम्पूर्ण भेद। आदि गुल—आदि गुरु एवं आदि लघु-अन्त गुल-अन्त गुरू तथा अन्त लघु। आद्यन्त आदि और अन्त। गुल-गुरु लघु। इत्यादि द्वितीय मर्कटी के अर्थ से ही ज़ान लेने।

॥ इति ॥

अब निम्न पंच वर्ण महां मर्कटी स्पष्ट चित्र देखो

१	वृत		१	२	३	४	५
२	भेद		२	४	८	१६	३२
३	समग्र भेद		२	६	१४	३०	६२
४	आदि गुरू	S०	१	२	४	८	१६
५	आदि लघु	I०	१	२	४	८	१६
६	अन्त गुरु	०S	१	२	४	८	१६
७	अन्त लघु	०I	१	२	४	८	१६
८	आदि अन्त गुरू	S०S	१	१	२	४	८
९	आदि अन्त लघु	I०I	१	१	२	४	८
१०	आदिलघु अन्तगुरू	I०S	०	१	२	४	८
११	आदिगुरू अन्तलघु	S०I	०	१	२	४	८
१२	सर्व गुरु रूप	S	१	१	१	१	१
१३	सर्व लघु रूप	I	१	१	१	१	१
१४	सर्व गुरू अङ्क		१	४	१२	३२	८०
१५	सर्व लघु अङ्क		१	४	१२	३२	८०
१६	सर्व अंक		२	८	२४	६४	१६०
१७	मात्रा		३	१२	३६	९६	२४०
१८	पिण्ड		१॥	६	१८	४८	१२०

अथ निम्न पंच वर्णी महां मर्कटी चित्र चित्रण प्रकार

इस मर्कटी की प्रथम पान्ति में वर्णाङ्क धरे और द्वितीय पान्ति में संख्याङ्क धरे। और तीसरी पान्ति में दूसरे अङ्क के नीचे दो अङ्क धर के पुनः शून्य घर के आदि का और शून्य घरके फिरका अङ्क दोनों तिरछे अङ्क जोड़ कर धरे चौथी पान्ति में भेदांक का आधा करके धरे। पंचम पान्ति में शीर्षाङ्क धरे। षष्टम पान्ति में शीर्षाङ्क धरे। सप्तम में भी शीर्षाङ्क धरे। अष्टम पान्ति के आदि में एक अंक पुनः शीर्षाङ्क अनुक्रम से धरे। नवम् पान्ति में भी शीर्षाङ्क धरे। दशम पान्मि में एकाङ्क नीचे शून्य पुनः शीर्षाङ्क धरे। ग्यारहवीं पान्ति में शीर्षाङ्क ही धरे। और १२वीं पान्ति में सर्व ऐके ही धरे। १३वीं पान्ति में शीर्षाङ्क ही धरे। और १४वीं पान्ति में वर्णाङ्क को ४ पान्ति से गुणा कर के धरे। और पंचदशम् पंक्ति में शीर्षाङ्क ही धरे। सोलहवीं पान्ति में शीर्षांकों को दुगणा कर के धरे। ११वीं पान्ति में १५वीं और १६वीं पान्ति के अंक जोड़ कर धरे। और १८वीं पान्ति में शीर्षांक अर्ध कर के धरे

यहां अन्तिम पान्ति में एक के साथ जो दो रेखाएं हैं सो अर्ध पिण्ड का निशान हैं। और पिण्ड दो मात्रा का माना जाता है। अन्य अर्थ स्पष्ट है।

अथ निम्न पंचवर्ण भाव गर्भित महां मर्कटी चित्र देखो

पान्त्याङ्क						
१	वृत	१	२	३	४	५
२	भेद	२	४	८	१६	३२
३	समग्रभेद	२	६	१४	३२	६४
४	आदिगुल, अन्तगुल	१	२	४	८	१६
५	आदि अन्त गुल	१	१	२	४	८
६	गाद्यन्तलो लाद्यन्तगो	०	१	२	४	८
७	सर्व गुरु रुप सर्व लघु रुप	१	१	१	१	१
८	सर्वांकगुरु सर्वांकलघु	१	४	१२	३२	८०
९	सर्वांक	२	८	२४	६४	१६०
१०	सर्व मात्रा	३	१२	३६	९६	२४०
११	पिण्ड	१॥	६	१८	४८	१२०

अथ पंच वर्ण भाव गर्भित महां मर्कटी चित्र चित्रण प्रकार

इस मर्कटी की प्रथम पान्ति में वर्णों के अंक हैं। और द्वितीय पान्ति में भेदांक धरे। तीसरी पान्ति में समग्र संख्या

के अंक हैं। चौथी पान्ति के आदि में ऐका पुनः शीर्षांक धरे और आदि में पंचम पान्ति के एक अंक पुनः शीर्षांक धरे। षष्टम पान्ति के एक अंक के नीचे शून्य पुनः शीर्षांक धरे। और सप्तम पान्ति में सर्व एक अंक धरे। अष्टम पान्ति में भेदांक से छन्दांक को गुणा करके आधा कर के धरे। और ९वीं पान्ति में शीर्षांक धरे। दशम पान्ति में अष्टम और नवम् पान्ति के अंक जोड़ कर धरे। ११वीं पान्ति में शीर्षांक आधे कर के धरे। इस मर्कटी में जो गुलादिक पाद है तिसके अर्थ पूर्वोक्त मर्कटीयों से जान लेना

इति नवम प्रकाशः

इति कविवर मेहरसिंहेन विरचिते भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे वार्णिक प्रस्तार आदि प्रत्यय निरूपणम नाम् द्वितीय भागः

इति द्वितीय भागः

१ ऊँ सत गुरु प्रसादि

अथ भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे तृतीय भाग प्रारम्भः

॥ मंगला चरणम् ॥

दोहा

दास काज के रास हित, राम धरा अवतार ।
तारन जग कारण भय, नमस्कार बहु वार ॥१॥

कवित

ताप के तपान हारे, जाप के जपान हारे,
पाप के मिटान हारे, लाज पय शरण की ।
नमस्कार पदन वारे, समित वदन वारे,
दुविधा दमन वारे, चार ही वर्ण की ।
दान के दीवान हारे, मान के मिटान हारे,
कान के चुकान हारे, जन्म मरण की ।
श्री गुरु नानक हो, जानत धर्म नहीं,
भरम हरन सुनी, उपमा चरण की ॥ २ ॥

अनंग शेखर छन्द

गुरु गुविन्द सिंह के नमो पदार विन्द दो,
जो हिन्दु को बचान कीन तान के कमान को ।
कमान को सुहाथ दीन कीन वाल को तियार,

हिन्दु को प्यार पीन दीन है न पान[1] को।

न पान को मिटान[2] जो पियान हाथ साथ पान,

यम्भ के मचान जङ्ग शेर से मैंदान को।

मैंदान को जो होत न गुरु गुविन्द सिंह आज,

हिन्दु मिट जात होत नाम न निशान को ॥३॥

॥ इति मङ्गल ॥

अथ पिङ्गल प्रस्तार दिवाकरे प्रथम प्रकाशे संज्ञा प्रकरण प्रारम्भ

सोरठा

कहूं न कछुक बनाए छन्द सरूप अनेक विधि

हरि हर पाथ सहाय दूषण भूषण होत हैं ॥४॥

कविजन मेघ समान मम रचना निध नीर सम,

खारो जल कर पान अमृत कर कवि देत हैं ॥५॥

कवि करें परमाण अपने दया स्वभाव से

यह हम निश्चय जान सतिगुरु के परसाद से ॥६॥

दोहा

अक्षर दो प्रकार के लघु और गुरु जान

सो नीके कर कहत हूं रूप अनूप सुजान ॥७॥

लघुवर्ण वर्णन

अकार,[3] इकार,[4] उकार[5] लघु कहूं छन्द बस मीत

ता गुरु को भी लघु लखो यह कवियन की रीत ॥८॥

---

१ पाना २ आज्ञा ३ ा ४ ि ५ ु

विन्दु माला छन्द

आ ई ऊ ए ऐ ओ जानो, औ अं अः गोसारे[४] मानो।
आधी[५] चन्द्रिका भी सो है संयोगी के आदी गो है[६] ॥९।

दोहा (गुरु लघु का संकेत)

गुरु लघु लघु होत गुरू अर्थ सिद्धि के काज।
कहूँ छन्द की शोभ हित भाषत हैं कविराज ॥१०॥
ताकी जैसी योग्यता तैसी कहो बनाए।
शेष मते यह योग्यता नहि तांते उचटाए ॥११॥

लघु गुरु वर्ण जानने का संकेत

गोग[७] को गुरू जानिए लोल[८] सु लघु पहचान।
तहां सु ऐसी रीति है जहां अर्थ नहीं भान ॥१२॥

अथ मात्रा विचार

लघु वर्ण मत एक है दीर्घ की है दोए।
इस विधि से गणना करे जहां जरूरत होय ॥१३॥

अथ गण वर्णनम्

मात्रिक गण टगणादि के कहूँ रूप अरू भेद।
मगणादि गण वर्ण के कारज इनको वेद ॥१४॥

---

४ : ५ ँ ६ गुरू ७ गुरू ८ लघु

यहां १४वें दोहे का अर्थ यह कि मात्रिक गण पञ्च प्रकार के हैं। (१) ६ मात्रा का टगण प्रस्तार रूप १३ (२) ५ मात्रा का ठगण प्रस्तार रूप ८ (३) चार मात्रा का डगण प्रस्तार रूप ५ (४) तीन मात्रा का ढगण प्रस्तार रूप ३ (५) दो मात्रा का णगण प्रस्तार रूप २

अब टगणादि मात्रिक प्रस्तार चित्र देखो

गण नाम	टगण	ठगण	डगण	ढगण	णगण
मात्रिकांक	६	५	४	३	२
रूपांक १	SSS	ISS	SS	IS	S
२	IISS	SIS	IIS	SI	I
३	ISIS	IIIS	ISI	III	२
४	SIIS	SSI	SII	३	
५	IIIIS	IISI	IIII		
६	ISSI	ISII	५		
७	SISI	SIII			
८	IIISI	IIIII			
९	SSII	८			
१०	IISII				
११	ISIII				
१२	SIIII				
१३	IIIIII				

अब वर्णिक गण भेद प्रकार निरुपणम्

तीन भान्ति के गण भने जो कवि है परवीन
बीन नाम इक पाद पुन अर्ध सम्पूर्ण चीन ।

अर्थ= कि वर्ण गण भी भेद से तीन प्रकार के हैं एक तो पाद गण दूसरा अर्ध गण और तीसरा सम्पूर्ण गण है अब हम पाद गण और अर्ध गण के भेद और नाम रूप कहते हैं

जान पाद दो रूप हैं गुरू लघु कीन विचार
चार उचारे अर्ध के नाम रूप निरधार ।
धार करन इक नाम है दो गुरू रूप सुजान
जान सो वासव नाम को रूप लोग मतिमान ।
मान सु सिन्धुर तीसरा नाम सु गोल स्वरूप
रूप चतुर्थी युग लघु सर युग नाम अनूप ।

अब पूर्ण गणों के नाम भेद प्रकार निरुपणम

अनूप सु पूर्ण आठ गण अब सुन नाम अकार,
कारन इम कवि कहित हैं सो हम कीन विचार
तीन वर्ण का गण गणो अवर नहीं कछु वेद,
सो नीके कर कहित हूं नाम रूप गण भेद ।

अथ आठों गणों के नाम

भगण यगण पुन रगण लख सगण चतुर्थी जान
तगण ज़गण पुन भगण गुण नगण अष्टमों मान ।

अथ मगणादि अष्ट गण सरुप निरुपणम् सटपटा छन्द

गुरु सर्व सो मगण है लघु आदि यगण विचारिए।
मध्य लघु को रगण लख गुरु अन्त सगण निहारिए।
लघु अन्त सु तगण है मध्य गुरु जगण विधान है।
आदि गुरु को भगण गिन लघु सर्व नगण विख्यान है ॥२॥

अर्थ स्पष्ट है।

और मात्रिक गण वार्णिक गणों के कारण है जैसे टगण का प्रथम रुप मगण है और ठगण का प्रथम रुप यगण है और ठगण का दूसरा रुप रगण है और ठगण का चौथा रुप तगण है और डगण का दूसरा रुप सगण है और डगण का तीसरा रुप जगण है और इस डगण का चौथा रुप भगण है और ढगण का तीसरा रुप नगण है तथा ही अर्ध गण से पाद गण भी मात्रिक पञ्च टगणादिक गणों के कारज है जैसे—डगण प्रथम रुप करण है और ढगण का प्रथम रुप वासव है और ढगण का दूसरा रुप सिन्धुर है और नगण का दूसरा रुप सर जुग है और ठगण का प्रथम रुप एक गुरु है। सो पाद गण का भी प्रथम रुप है। और नगण के अन्तिम रुप का अर्ध पाद का दूसरा रुप है। अर्थात नगण अन्तिम रुप दो लघु हैं। इस का अर्थ एक लघु है। ऐसे यह वर्णिक सारे गण मिलकर १४ हुए। और पञ्च मात्रिक गण मिले तो १९ गण होते हैं।

सोरठा

अब चौदश गण नाम, रुप, भेद चित्र लखों ।
जी कवि हैं अभिराम, सुगम रीति सो कहित है ।।२३।।

तथा ही निम्न वार्णिक चौदश गण के नाम रुप का चित्र

पाद गण चित्र

अङ्क	नाम	रूप
१	गुरु	ऽ
२	लघु	।

अर्धं गण चित्र

अङ्क	नाम	रूप
१	करण	ऽऽ
२	वासव	।ऽ
३	सिन्धुर	ऽ।
४	सरजुग	।।

पूरन गण चित्र

अङ्क	नाम	रूप
१	मगण	ऽऽऽ
२	यगण	।ऽऽ
३	रगण	ऽ।ऽ
४	सगण	।।ऽ
५	तगण	ऽऽ।
६	जगण	।ऽ।
७	भगण	ऽ।।
८	नगण	।।।

अब मगणादि पूर्ण गणों के देवतों के नाम

सोरठा

लखो करम से देव भूमी जल अग्नी पवन ।
नभ रवि सोम लखेव पुन फनिपति को जानिए ।।२४।।

दोहा

आदि जो वर्ण गण गण गणों जहाँ न अर्थ प्रतीत ।
कहुँ देव के नाम से गण जान न की रीति ।।२५।।

सारांश

जो मगणादि गणों के नाम का आदि वर्ण है सो अन्यथा सिद्ध प्रतीत होवे छन्दों के सरुप निरुपण में वहां तिसको गण ही जानना योग्य है। जैसेः——मा. य. र. स. त. ज. भ. न. यह गणों के आदि वर्ण है वा कही देवता के नाम से भी गण के ज्ञान का सङ्केत है।

नीचे गण देवता नामावली चित्र

मगव	यगण	रगण	सगण	जगण	भगण	नगण
भू १	जल	अग्नी	वायु	सूरज	चन्द्रम	सर्प
भूमि	वारि	आग	हवा	दिनेश	चन्द्र	नाग
भू	वारी	पावकम्	पवन	दिवेस	शशी	फनि
धरा	जलम्	वहनी	वात	पतङ्ग	शशि	फनिपति
धर	आप	वायुसखा	समीर	भानु	निशेश	पनग
गाए	वन	कृशानु	पौण	तरन	सोम	भुजङ्ग
उर्वी	घनरस	अनल	ब्यार	दिवाकर	निसिपति	विषधर
रसा	नीर	पावक	मारुत	रवि	छिपापति	शेष
		तगण	गन्धवाह	रवी	मयङ्क	उरग
		गगन	अनिल	दिवाकरम्	सुधाकर	फनी
		गैनम्		सूरम्		
		आकाश		पूषण		
		नभ		विभाकर		
		ख		अंशुमाली		

सर्व छन्दों के सरुप जानने के संकेत

दोहा

लघु गुरु गण का जहां, केवल नाम उचार ।
तहां एक ही जानिए, जहां अधिक निरधार ॥२६॥

अब छन्दों के पद ज्ञान का संकेत

दोहा

मात्रा अथवा वर्ण वृत, कहुँ एक पद रुप ।
जहां विषम तहां सर्व पद, कहुँ सरुप अनूप ॥२७॥

अथ दगध वर्णों की अयोग्यता निरुपणम्

दोहा

दगध वर्ण यह पाञ्च हैं ञ ण ङ ड़ ढ़ देखे जोए ।
भूषण में दूषण करे पद के आदि जु होए ॥२८॥

॥ विशेष विचार प्रकार ॥

और मगणादिक गणों की ब्राह्मणादि जाती और शुभाशुभ फल और गणों की परस्पर मित्रतादिक और जन्मादि स्थानों का लिखना कविता में अन्यथा सिद्ध है कि कविता करने में कोई भी उपयोग नहीं है । इसलिए अनुपयोगी जान करके हम ने लिखे नहीं । ऐसे ही प्राचीन माने हुए दगध वर्ण हैं और भी अनेक प्रसङ्ग है सो भी रूचि के अयोग्य है, इसलिए नाम मात्र भी नहीं लिखे ।

॥ अब वृत भेद प्रकार ॥

सो वृत भी भेद से दो प्रकार के हैं एक तो लौकिक वृत है और दूसरे अलौकिक जिन का प्रयोग स्वर्गादिक देवतों में तथा वेद में है और लौकिक वृतों की मातृ लोक मनुष्यादि में प्रवृति है इस से अब हम लौकिक वृतों का विचार करते हैं सो लौकिक वृत भी भेद से तीन प्रकार के होते हैं एक तो मात्रिक और दूसरा वार्णिक और तीसरे मात्रिक वर्णों करके मिश्रत हैं

और प्रथम मात्रा वृत भी भेद से तीन प्रकार के हैं एक तो प्रस्तार संकेतिक मात्रिक हैं। और दूसरे उपमात्रिक हैं और तीसरे मात्रिक दण्डक हैं और सो मात्रिक वृत भी भेद से तीन प्रकार के हैं एक तो मात्रिक सम और दूसरे मात्रिक अर्ध सम और तीसरा मात्रिक विषम।

अब अनुक्रम से इन के लक्षण

जिस वृत में मात्रा के प्रस्तार के अनुसार ही गुरु लघु का संकेत चारों पदों में समान हो। वे सम वृत कहिये हैं जैसे अचला आदि हैं।

यदि वृत के चारों पाद बराबर नहीं हों किन्तु प्रथम पाद के समान तो तीसरा पाद हो। और दूसरे पाद के समान चौथा पाद हो वह अर्ध सम वृत होते हैं जैसे दोहादिक है

जिस वृत के चारों पाद समान नहीं हों किन्तु परस्पर भिन्न भिन्न हों सो विषम वृत है। जैसे वेगवती आदिक है

अथ उपमात्रिक वृत्तों का विचार

जिस छन्द में प्रस्तार का नियम नहीं हो केवल मात्रा और विश्राम संकेत हो हो वह उपमात्रिक वृत होते हैं।

और तैसे उपमात्रिक वृत भी भेद से तीन प्रकार के होते हैं जैसे उपमात्रिक सम और उपमात्रिक अर्ध सम और उपमात्रिक विषम वृत अर्थात् जिसके चारों पाद समान हों और प्रस्तार संकेत से विना उसे उपमात्रिक सम वृत कहते हैं और प्रस्तार संकेत विना जिसके दो दो पाद मिलें वह अर्ध सम कहलाते हैं और प्रस्तार संकेत विना जिसके चारों पादों का वज़न भिन्न भिन्न होवे उसे उपमात्रिक विषम वृत कहते हैं

अथ मात्रिक दण्डक वृत विचार और जो मात्रिक एक ही छन्द में डेढ वा दो वा अढ़ाई आदिक छन्द जोड़ कर रचना करी होवे वह मात्रिक दण्डक छन्द हैं और इसको डेढ़ा वा द्विगुणा वा अढ़ाईया आदिक भी कहते हैं जैसे मनोहर भवानी आदिक है।

अथ वर्ण वृत स्वरूप भेद प्रकार

सो वर्ण वृत भी भेद से तीन प्रकार के हैं एक तो वर्णिक दूसरे उपवर्ण और तीसरे वर्ण दण्डक वृत हैं और तैसे वर्णिक

वृत भी भेद से तीन प्रकार के हैं। एक तो वर्णिक सम दूसरा वर्णिक अर्द्ध सम तीसरा वर्णिक विषम वृत है और तैसे उपवर्णिक वृत भी भेद से तीन प्रकार के हैं जैसे उपवर्णिक सम और उपवर्णिक अर्ध सम और तीसरा उपवर्णिक विषम वृत कहिये है। ॥ इति ॥

तैसे ही वर्णिक दण्डक वृतों को भी जान लेना। और वर्णिक वृतों का विशेष ज्ञान मात्रिक वृतों के समान ही जान लेना।

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे तृतीय भागे प्रथम प्रकाशः।

अथ तृतीय भागे द्वितीय प्रकाशः

मात्रिक छन्द चालीस मात्रा के नाम व भेद

मात्राङ्क	छन्दनाम	भेद	मात्राङ्क	छन्दनाम	भेद
१	अचल	१	११	मालती	१४४
२	सूलधर	२	१२	ताण्डव	२३३
३	वज्र	३	१३	धरनी	३७७
४	वाद्य	५	१४	मधुमालती	६१०
५	पन्नग	८	१५	जैकरी	९८७
६	वेणी	१३	१६	विद्युन्माला	१५९७
७	दीपक	२१	१७	चन्दन	२५८४
८	प्रसिद्ध	३४	१८	वन्दन	४१८१
९	रुद्र	५५	१९	तमाल	६७६५
१०	सोमराजी	८९	२०	अरुण	१०९४६

मात्राङ्क	छन्दनाम	भेद
२१	पवंगम	१७७११
२२	कविन्द	२८६५७
२३	निश्चल	४६३६८
२४	काव्य	७५०२५
२५	मदनाग	१२१३९३
२६	अनुहरगीत	१९६४१८
२७	कलानिधि	३१७८११
२८	गीतक	५१४२२९
२९	मरहटा	८३२०४०
३०	चोपइया	१३४६२६९
३१	सवैया	२१७८३०९
३२	त्रिभंगी	३५२४५७८
३३	रंगी	५७०२८८७
३४	धीर	९२२७४६५
३५	वीर	१४९३०३५२
३६	सूर	२४१५७८१७
३७	भूलणा	३९०८८१६९
३८	उपभूलणा	६३२४५९८६
३९	अतिभूलना	१०२३३४१५५
४०	हरिभूलना	१६५५८०१४१

॥ ओ३म सतगुरू प्रसाद ॥

अथ मात्रिक सम छन्द चालीस के स्वरूप निरूपणं ॥ तथा ही अन्त पर्यन्त भेद स्वरूप। जैसे अचला छन्द एक मात्रा का है उस का भेद भी एक है ॥ तथा ही उदाहरण ॥

अचला छन्द= ह, र, क, र, ॥१॥

॥ २ मात्रा के सूलधर छन्द के भेद २ हैं ॥ आदि रूप यथा ॥

गोपा छन्द= गो. [1] गो, पा, [2] पा ॥२॥

॥अन्तिम रूप ॥ दुल छन्द= दुल, [3] कुल, पद, बद [4] ॥३॥

अथ ३ मात्रा वज्र छन्द के भेद ३ प्रथम रूप।

वामव छन्द= पदे, वदे, लगो, [5] लगो, [6] ॥४॥

॥ द्वितीय रूप ॥= गाल [7] बो ल धाम नाम ॥५॥

॥ ३ रूप ॥ चरण छन्द = नगण लगण चरण चरण ॥६॥

अथ ४ मात्रा ब्रह्म छन्द के भेद ५ प्रथम रूप।

सत्री छन्द= गोहीं [8] दोही जत्री सत्री ॥७॥

रूप २ सगण छन्द= चरणे चरणे सगणा लगणा ॥८॥

रूप ३ दिनेश छन्द= दिनेश [9] पदेश [10] प्रवेश दिनेश ॥९॥

रूप ४ चन्दर छन्द= पादिकि अन्दर पादिकि चन्दर [11] ॥१०॥

---

१ एक=गुरू २ चरण ३ दो लघु ४ कहु ५ लघु गुरू ६ लगाओ ७ गुरु लघु ८ गुरु ही ९ जगन १० इस के पद में ११ भगण

रूप ५ दिजवर छन्द = लघुचव, धरिकरि, पदजव, दिजवर।११।

"अथ ५ मात्रा के पन्नग छन्द के भेद ८"

प्रथम रूप नारी छन्द = जलेकं[१], उचारी, पदेकं सुनारी।१३।

रूप २ पाद छन्द = गोलगो[२], जादमे, बोलजो, पादमे।१४।

रूप ३ मती छन्द = नगन गो, लगन जो, पदवती, चवमती।१५।

रूप ४ पञ्चाल छन्द = तागन्न लागन्न मोचाल पञ्चाल।१६।

रूप ५ धार छन्दः- सगनन्त[३], लघुवन्त[४], पदचार, कविधार।१६।

रूप ६ बुद्धिछन्दः- जलोवद[५], करसुधि, चवोपद, ररेबुद्धि[६]।१७।

रूप ७ निश छन्दः-भाल जिस, चाल निश, चार पद, डारवद[७]

रूप ८ नल छन्दः-नल करन[८], चवचरण, इमधरण, कविभरण

अथ षट मात्रा बेणी छन्द के भेद १३

रूप १ ताली छन्दः-गो तीनों, जो कीनों, सो ताली, की चाली

रूप ३ गवि छन्दः-जगो[९] करे, चवोपदे, रगी[१०] करे, कवि वेद

रूप ४ कला छन्दः-सोम गुरू, आनजुरू, पाद चला, चारू कला

रूप ५ करताछन्दः-उलट करे, विष्णु धरे, दुखहरता कर करता

---

१ जगण २ गुरु लघु गुरु ३ सगण के अन्त में
४ लघु वाला ५ जगण ते लघु ६ कहे ७ भगण ते लघु
८ नगण ते लघु ९ जगण ते गुरु १० भगण

रूप ७ वारि छन्दः-दीरवान, फेर[१] भानु, याद चारी, छन्द वारि

रूप ८ नाक छन्दः-उरग[२] गोल[३], चरण बोल, चतरताक[४] चरणनाक

रूप ९ कृष्ण छन्दः-जाने[५] खल, चारे[६] दल, सन्शा तज, कृष्ण भज

रूप १२ विष्णु छन्दः-सोमधरन[७], लाजकरन[८], चारदिखन, पादविष्णु

अथ सप्त मात्रा के दीपक छन्द के भेद

रूप १ सरी छन्दः-यगो[९] डारे, यही रीति, पदो चारे, सरी कीती

रूप ३ सुगत छन्दः-नगण पाछे, गे[१०] जुग[११] डारे, चरनभाषे, सुगत चारे

रूप ६ भरू छन्दः-जगन्न करे, चवो चरना, कविन्द ररे, भरूवरना

रूप ७ प्रियाछन्द सग आदिमें, लग[१२] वादमें, पिरयाफुरी, चरनेतुरी

अथ ८ मात्रा के प्रसिद्ध छन्द के भेद ३४

रूप १ कन्याछन्दः-भूमि[१३] लावे, गो[१४] को गावे, चारोपाए, कन्यागाए

रूप ३ कविन्द छन्दः-अवश्य सूरं[१५], गुदो जरुरं, चरन्न चारे,
कविन्द डारे

रूप १३ मधुमती छन्दः-जुगधर नगना, फ़िर गुरु लगना
चवपद करने, मधुमति वरने

---

१ जगण २ नगण ३ गुरु लघु ४ देव ५ तगण लघु
६ पद ७ भगण ८ दो लघु ९ यगण गुरु १० गुरु
११ दो १२ लघु गुरु १३ मगण १४ गुरु १५ जगण

रूप१८ मधुभार छन्दः-सगणा सुगेर जगणा जु फेर
पद चार थ न मधुभार ज न।

अन्तिम रूप प्रसिद्ध छन्दः-नगन दुकर[१] कर, जुग लघु तर[२] तर,
चव पद भर भर, पर सिद्ध[३] धर धर

अथ ९ मात्रा रुद्र छन्द के भेद ५५

रूप१ भव छन्दः-जलवं[४] ठाने, ग[५] दो सो धारे. भवेवं जाने, पदं ही चारे

रूप४ हारी छन्दः-आदंगुरुते,वीचं लघुजो,अन्ते विचारी, दोगोसुहारी

रूप७ चतुरूशा छन्दः-चन्द जल डारे, पादकर चारे, मन्न निःसँशा
भन्न चतुरँशा

रूप५ सजन छन्दः-मगणं जु आदं, यगणं सु वादं, पद चार सारे
सजनं उचारे

अथ १० मात्रा सोम राज छन्द के भेद ८९

रूप१ सम्मोहा छन्दः-भूमी के पाछे, दो गो को राखे, चारे[६] पा[७] जोहा
जानो सम्मोहा

रूप११ कुमार ललित छन्दः-पतङ्ग[८] पवना[९] है, पुना गुरु गुना[१०] है,
करे चरण चारे, सुललित कुमारे

रूप१२ सदलेखा छन्दः-चन्द्र[११] पवन[१२] सो है, अन्त गुरु जो है।
चारि ही पद देखो, सो वद सदलेखो ॥

---

१ दो २ नीचे ३ चाल ४ यगण ५ गुरु ६ चरण
७ देखा ८ जगण ९ सगण १० विचारा ११ भगण १२ उत्तम

रूप१३ तुङ्गा छन्दः-कगन जुग भुजङ्गे[1] जुगल गुरून सङ्गे
चतर चरण पुङ्गा। किरत विरत तुङ्गा।
रूप३४ कमलाछन्दः-नगण पर नगण दे, सगण पुन लगण दे
चतर चरण करने। अमल कमल वरने।
रूप८५ सरवर छन्दः-तुङ्गाजु उलट धर। औरो न भरम कर।
चारेसु चरण भर। सोई वर सरवर॥

अथ ११ मात्रा मालती छन्द के भेद १४४

रूप१ मालती छन्दः-जलादं[2] में सोहे। पुना भू[3] को जोहे[4]।
पदं है जो चारे। कवी से उचारे।
रूप३२ भगवता छन्दः-जहां जगण तीन में, पुना सगण कीन में
जु लोग[5] सद चीनता[6]। मता भगवती रती।
रूप८० सरिछन्दः-दो भगणा भर आदि। गोल[7] धरे पुन व दि।
चार पदं इम वन्द। यों वरने सरि छन्द।
रूप८१ भैरव छन्दः-नगण दिवाकर ठान। जगण करे अवसान[8]
चरण करे इम चार। सु विरत भैरव धार

अथ १२ मात्रा ताण्डव चन्छ के भेद २३३

रूप१ सम्मोधः छन्दः- दो भू पादों[9] चारे। चारे पादं सारे।

---

१ नगण २ यगण ३ मगण ४ देखे ५ लघु गुरु ६ चारवाला
७ गुरु लघु ८ अन्त में ९ मगण

रूप६५ चिलका छन्दः-सगण गण तीन करो, इम धारन धार धरो
नहि सङ्क करो दिल का। पद चार रचो चिलका।

रूप१४४ प्रदर्शन छन्दः-तिन नगण पुन गुन[1] फेर गुल[2] वरन पद तर[3] गेर
इम चतुर चरनन चीन। पर दरश विरत सुकीन॥

रूप१६६ हाकलछन्दः-सोम[4] जु तीन मिलारन, एक[5] कील में महि डारन
चर स पाद उचारन। हाकल छन्द विचारन॥

रूप१२८ तोमरछन्दः-सगणा धरो एक आन[6], जगणो पुना जुग ठान
पद चार तोमर छन्द। सब और भेद निकन्द[7]॥

अन्तिम रूप तरन छन्दः-चतर नगण धर पद पद।
चतर चरण इम कवि वद।

तरल नयन[8] जिम तरनहि। पदन वजन सम करनहि

अथ १३ मात्रा धरणी छन्द के भेद ३७७

रूप ३ बिन्दू माला छन्दः-नगण पाछेते धारे, मगण ते दो गो डारे
चरण चार यां चाला। वृत कहे बिन्दू माला॥

---

१ विचारे २ गुरु लघु ३ नीचे ४ भगण ५ पंक्ति ६ लावे
७ हटावे ८ इस का नाम तरल नयन भी है

निर्वाचिका छन्द रूप ७२

आकाश[1] आदि गेर है। वायु[2] सखा सफेर है।
जो लोग[3] अन्त वाचका। चारे पदे निराचका।

अथ १४ मात्रा मधुमालती छन्द के भेद

६१०

गङ्गा छन्द प्रथम रूप

मातो ही गो वीने हैं। वीने ऐसे चाने हैं।
चीने गङ्गा सारे हैं। सारे पादं चारे हैं।

सावित्री छन्द रूप ३४

नगन जुगन पुन आने हैं। सगन दु गुरु पुन ठाने हैं।
चतुर चरन कविने धारे। विरत सुविर्गिति भने सारे।

मनोरम छन्द रूप ११८

नगन आदि में परे परे। रगन भानु[4] गो[5] भरे भरे।
इम मनोरमा खिली कली। चरन चार में भली भली।

सुलक्षण छन्द रूप ११४१

सगना नगन सगना परे। अवसान[6] लगु[7] गनना करे।
इम चार चरन सु ठानिये। कविछन्द सुलक्षण जानिये।

---

१ तगण २ रगण ३ लघु गुरु ४ जगण ५ गुरु ६ अन्तमें ७ लघु गुरु।

सारवती (रूप १६६)

सौम[1] सिवार सु तीन करे। अन्त विषे गुरू एक धरे।
चार पदं कवि देख गती। छन्द वही लख सार वती।

सुमुन्द्रिका (रूप १२३)

नगन पदन दो पुरे पुरे[2]। अवर रगन के जुरे जुरे।
लघु अरु गुरु दो तरे तरे। चैंतर चरन में परे परे।

हाकलिका (रूप १७८)

नगन सुजुग पुन दो सगने। चतर चरन चित नीत गने
सरव मरम[3] इतना दलका[4]। इस विधि सुन भन हाकलिका

संञ्जुता (रूप १२८)

सगणेक दो जगणे करे। एक अन्त में गुरु जो परे।
पद चार है चित रञ्जिता[5]। वह वेस छन्द सुसञ्जता।

तरलनयन (अन्तिम रूप)

जब चतर नगन एक पद धर। तब चरन परन जुग लघु तर
इम चतर पदन गुन भर कर। कवि तरलनयन इस विधि कर

॥ इति ॥

---

१ भगण २ आदि में ३ भेद ४ पद का ५ प्रसन्न करने वाला

अथ १५ मात्रा जैकरी छन्द के भेद ९८७

रामका (रूप १५६)

तीन रागन्न को जाचना। जाच नाले पदा राचना।
राचना चार पादानिया। दानिया राम का जानिया।

हरनी [रूप २७३]

दिवाकर[1] तीन परे जिस में। पुना गुन लोग धरे इस में
पद चव रीति सही करनी। भने कवि राज़ वही हरनी

सोम [रूप ५८०]

सोम[2] सिवारे तगन सु कीन। कीन कली में विपधर[3] चीन
चीन सु अन्ते पद गुल फेर। फेर जही है पद चव गेर

अथ १६ मात्रा विदुत माला छन्द के भेद १५९७

बिन्दु माला [प्रथम भाग]

आदं दो भू[4] दोगो भापे। भापे पाछे दो गो राखे।
राखे चारे पादं सारे। सारे बिन्दु मालो चारे।

चम्पक माली (रूप १४५)

भूमी[4] पाछे गेन[5] सिवारे[6]। वारे को ही अन्त उचारे।
चारे चीने पाद सुचाली। चाली भाषी चम्पक माली।

---

१ जगण २ भगण ३ नगण ४ मगन ५ तगण
६ यगण

अनुकूला (रूप १६९)

आदि सु सोमं[1] पुन नभ जानो। फेर जु नागं[2] गुरु जुग ठानो।
चार सु पादं नहि करी भूला। एस विधी से भन अनुकूला

मोटन (रूप ४३८)

सुनीरं[3] दिवाकर[4] भानु भने। पुना लोग आ[5] अवसान बने।
धरे चार पादन खोटन को। भने छन्द नामहि मोटन को।

सुमुखी (३९३)

सरप[6] आकाश[7] दो गेर करे। करत है लोग दो फेर परे।
पर तजे चाल जो जान रुखी। रखत है चार सो पाद मुखी।

जलोधिरत (४९८)

करे जगन को पुना सगन ही। परे तरन[8] ते पुना पवन[9] ही।
पदं चतुर ही धुना[10] किरत में। जलो धिरत है सुना विरत में।

चक्र [६०९]

आदि भगन भन पुन तिन नगने, अन्त सभन कर लघु गुरु लगने
चार चरन कर धरन सुफुग्ती, चक्र बनत कवि भनत सु युगती

---

१ भगण २ नगण ३ यगण ४ जगण ५ अन्तमें
६ नगण ७ तगण ८ जगण ९ सगण १० उच्चारण

पाधड़ी [९८४]

धर एक सगन तिन नगन कीन, पुन गोल चरन पर चरम[1] चीन
इम चार चरन कवि करन रीति, जह जान धर वर करि परीति

अथ १७ मात्रा चन्दन छन्द के भेद २५ ८४

राजेन्द्र (रूप १५५)

जगन्न सगन्न तागन्न डारे, धरे दु गुरू के अन्ते सिधारे।
विचार चरने चारे उचारे, कहे जु इस को राजेन्द्र सारे।

रत्न (रूप ७२१)

भूमी[2] सोगं[3] जगन जो करने। पछे ताके लघु गुरु धरने।
चारे सारे चरन जो बनते। सो चाली है रतन की गनते।

नैरत (रूप १४४७)

आदि में कर रगन को परवान, चीन[4] के धर नगन को फिर चीन[5]
चीन के पुन मगन दा लघु कीन, कीन नैरत चरन चार नवीन

---

१ अन्त में २ मगण ३ भगण ४ चतुर ५ चुनकर

अथ १८ मात्रा चन्दन छन्द के भेद : ४१८१

रुपमाली छन्द । प्रथम रुप

भूमी ही तीनो कीनो सारे । सारे ही चारे पादो चारे ।
उचारे कोई ऐसी चाली । ताको भाषे है रुपा माली ॥

तारका छन्द ।४४२।

सगण गण चार सुधार धरे हैं ।
पुन अन्त विषे गुरु एक परे हैं ।
पद चार विचार उचार करे हैं ।
वहि तारक छन्द कविन्द ररे हैं ॥

प्रान पियारी छन्द ।४५०।

पवना सु[१] आन पुन भानु[२] करे हैं ।
जुग फेर गेर सगणहि धरे हैं ॥
गुरु अन्त धर पद चार उचारी ।
कवि राज साज अस प्रान पियारी ।

चन्द्रका छन्द ।६७८।

नगन परन दो पाद के आदिमें ।
तगन लगन दो फेर गो वाद में ।
धरन हरन ते छन्द भी खीन है ।
चतर चरन का चन्द्रका चीन है ॥

---

१ सगण २ जगण

अथ १९ मात्रा तमाल छन्द (भेद ६७६५)

गम्भीर छन्द ।४१५।

तागन्न तीनं कली आदि दीने। दीने गुरु दो पदं अन्त चीने।

चीने सु वेशं[1] सुचालं विचारे। चारे सही पाद गम्भीर डारे।

हंस छन्द ।१४१३।

आदि में रगना परे सगना करो,
दो करो जगने पुना गुरु को धरो।
चार पाद भरे कवी अवतंस है,
चाल जान सुजान नाम सु हंस है॥

अथ २० मात्रा अरुण छन्द (भेद=१०९४६)

हंस छन्द ।५२०४।

आस ते आकाश पाछे गाय गाय॥
अंसुमाली फेरि गेरे पाय पाय॥
और सारे भेद सारे धार धार॥
हंस भाषे पाद राखे चार चार॥

नादीमुखी छंद ।६७८।

नगन जुग गुरु दो पुना दो[2] जलेसं।
करन इस विधी से पदेकं प्रवेशं।

---

१ स्वरुप २ यगण

धरन[1] धरन ऐसे कवी राज सारे ।
चतुर चरन नादीमुखी के उचारे ।

निसपालका छंद ।२४२६।

सोम[2] रवि[3] वात[4] फनि[5] आगि पुनि[6] धारना ।
धारन विचार धर चार कुल चारना ।
चारन कविन्द गुन छन्द इस चालका,
चाल कवि राम विन्द छन्द निसपाल का ।

तरनी छंद ।७८२१।

सोम[7] करे गुन पाञ्च सिवार सुधारन ।
धारन पञ्च मयङ्क निसङ्क[8] उचारन ।
चारन पाद कवीश सुरीति सिवारन ।
वार[9] नहीं तरनी इम छन्द विचारन ॥

मीन छंद ।६३५१।

गन डार सुन[10] धार भज ठान कर आन ।
इक वात[11] फिर आत अवसान गुरु जान ।
इम वीन कवि कीन पद चार सभ चीन ।
कछु आन नहि कीन इम मीन गुन लीन ।

---

१ चाल २ भगण ३ जगण ४ सगण ५ नगण ६ रगण
७ जानो ८ भगण ९ देरी १० भगण ते नगण ११ सगण

अथ २१ मात्रा प्लवङ्गम छन्द (भेद=१७७११)

कलहंस छंद ।३६९६।

सगनादि एक विवेक से लख ठानिये ।
जगने सु दो लगने जवी कवि जानिये ।

१ २
भगना पुना गगना भना अवसान में ।
चरने भने कलहंस चार सुजान में ।

॥ इति ॥

अथ मात्रा २२ कविन्द छन्द (भेद=२८६५७)

सूरा छंद । प्रथम रुप

३
आदं तीनो भू को जाचे राखे है ।
राखे पाछे दो गो नीके भापे है ।
अङ्क छः दे आदे वादं पञ्चों रे ।
चारे पादं पूरा सूरा जाचो रे ।

कोकल छंद ।७९४३।

४ ५ ६
विषधर सूर सोम कर दो फिर भानु भरे ।
अवर नहीं कछू भरम लोग तु आन परे ।

---

१ तगण २ अन्त में ३ मगण ४ नगण ५ जगण ६ भगण

१ २
चतर प्रबन्ध बिन्द कवि कोकल छन्द गुने ।

४ १
इम कवि ने लखे मरम छन्द प्रबन्ध सुने ॥

पतन्जल छंद ।७६२१।

३ ३ ३ ३
सोम निसापति सोम खिपापति ठान धरे ।

३
फेर सुधाकर गेर गुरु पुन आन परे ॥

५ ६ ७ ८ ९
मङ्गल सन्दल चार दलं कर मन्जल है ।

बाम समान सरुप सुनाम पतन्जल है ॥

अथ २३ मात्रा निसचल छन्द के भेद=४६३६८

चक्र ।२७२६४।

१० ११
फनि पति पाछे वन गुन राखे अवर विचार ।

१० १२
विषधर नेरे धनरस गेरें चरन उचार ।

१३
पट यति धारे चरन सिवारे गिन करि चार ।

धरन सु फुरित चक्र सु सुकिती विरत उचार ।

---

१ ग्रन्थ २ जान के ३ भगण ४ भेद ५ उत्तम ६ भली प्रकार ७ पाद ८ चरन ९ उजल १० नगण ११ जगण १२ यगण १३ विश्राम

अथ २४ मात्रा काव्य छन्द (भेद=७५०२५)

विद्याधारी छंद। प्रथम रुप।

जाके पादे भूमी[१] साजे चारे सारे।
सारे ताको पादे ऐसो चारो चारे।
बेदो ऐसो भेदो सो चाली सम्भारी।
भारी विद्याधारी भाषे विद्याधारी॥

लोला ६७८७।

भूमी[१] आदि विचारे पाछे मारुत[२] कीना।
कीना फेर धराको[१] पाछे सोम[३] सु वीना।
वीना जो कवि चीना अन्ते दो गुरु बोला।
बोला भेद सु खोला चारे पाद सु लोला।

सुखसार ।३७६५५।

आदि गुना सोम[३] पुना गैन[४] को गने सिवार।
वारि[५] गुने भान[६] सुने आग[७] ते लघु उचार।
चारु कवी राज कहे चारि पाद को सुधार।
धार धरो भेद हरो नाम एस सुख सार।

---

१ मगण २ सगण ३ भगण ४ तगण ५ यगण
६ जगण ७ रगण।

अथ २५ मात्रा मदनाग छन्द (भेद=१२१३९३)

चकिता ३९६२०

गैनं सगन के पाछे भूमी गैन उचरने।
लाखे नगन गो राखे पाछे एकहिंवरने।
धारे धरन को जाने जामे और न करने।
नाम सु चकिता राखे भाषे चारिहि चरने।

अथ २६ मात्रा चञ्चरी जन्द (भेद=१९६४१८)

चञ्चरी ४१०१६

आग वात दिवाकरं जुग सोम पावक डारिये।
पाद चार विचार के भर और भेद निवारिये।
चाल माधुरी छन्द की वजि कान की जिमी वंसरी।
छन्द देत आनन्द को कवि नाम है इस चञ्चरी।

अथ २७ मात्रा कलानिधि छन्द (भेद=३१७८११)

तथा ही तन्नी ।२९६४९९।

सोम पिछारी तगन नगन दे फेर भरे इक पवन।
सोम भरे दो अवर चरन में फेर धरे पुन नगन।
और नहीं है करन चरन में डार धरे इम धरन।
नाम सु तन्नी अवर भरम ना चार सही कर चरन।

---

१ तगण २ रगण ३ सगण ४ जगण ५ भगण

अथ २८ मात्रा गीतक छन्द (भेद=५१४२२९)

यथा गीतका ।१०७३८१।

१ २ ३ ४
इक आदि बात पतङ्ग दो पुनि चन्द आग विचारिये।
१
फिर बयार और विचार ना लघु अन्त में गुरु डारिये।
पद चार कीन प्रवान जो कवि चीन जो इस रीति का।
इस चाल नाल सही वही कहि छन्द नाम सु गीत का।

अथ २९ मात्रा मरहटा छन्द (भेद-८३२०४०)

निरिन्द्र ।८७९०२।

३ २
सोम रगन्न ते नगन रवी गुन अन्त यगन्न विचारे।
छन्द निरिन्द जो चतर चरन्न सु चाल विचार उचारे।
दो विश्राम जो इक पद जा महि और विचारन कोई।
आदि विराम जो बरन तिरोदश दूसरि आठहि जोई।

अथ ३० मात्रा चौपैया छन्द (भेद=१३४६२६९)

सारङ्गी। (प्रथम भाग)

भूमी राचे जाचे पान्चे वाचे भेदं गाने हैं।
गाने आदं आगे अङ्कं ना पै सातो ठाने हैं।
ठाने जाने पादं चारे वादं भेदं हाने हैं।
हाने मन्दी चाली ढङ्गी सो सारङ्गी जाने हैं।

---

१ सगण २ जगण ३ भगण ४ रगण

अथ ३१ मात्रा मत्ता सवैया छन्द (भेद=१७८३०६)

सवैये अन्तर गति चित्र पद

पादकि अन्दर चन्दर[1] सात सुहात सु अन्त गुरु लघु डार।
और सु भेद निछेदन के पद चार सुघार धरे सुविचार।
बाम भने तु बने पलिका कलिका कवि जो सभ जानन हार।
छन्द अनन्द जने उसको जिस चित्र पदा कवि नाम उचार।

अथ ३२ मात्रा त्रिभङ्गी छन्द (भेद=३५२४५७८)

मत्ता क्रीडा ।१३४४६७३।

दो भू भाषे पाछे राखे तगन नगन पुन चवि कवि धरने।
लोगो ताके पाछे लाके चरन चरन पर गुन गुन धरने।
आदे अङ्के आठे ठाने यति कर अवर सगर पुन चरने।
मत्ता क्रीड़ा भाषे ताको इस विधि चतर चरन कर भरने।

अथ ३३ मात्रा रङ्गी छन्द (भेद=५७०२८८७)

मकरन्द ।१२०४१४०।

आदि विचार करो मन में भगण गण सात सिवार उचारिये।
फेर नरो इस रीति करो रगणोक पदन्त निसङ्क विचारिये।
आदि यती दस अङ्क गती पुन चौदश फेर न रीति विसारिये।
चारि पदं सुगति लख के मकरन्द जु छन्द निसङ्क उचारिये।

---

1 भगण

अथ ३४ मात्रा धीर छन्द भेद=९२२७४६५

कमलापति ।९७४१७०।

जिस में सगण वसु वार परेगुरु[1] अङ्क करे पद अन्त सिवारे ।
पद चार सुजान उचार धरेचित बीच न आन विचार विचारे ।
सभ भेद निछेद सुवेद जही नर ही[2] कुछ रीति सही उर धारे ।
इस नाम कहे कवि राम कई कमला पति है इस चाल निहारे ।

अथ ३५ मात्रा वीर छन्द (भेद=१४९३०२५२)

नभरस ।५३०७४६५।

लघुन वरन कर चरन चरन पर,
खोड़स[3] वरन वाद फेर जु भगन है ।
तिस पर फिर इक नगन धरन करि,
फेर इक अग्नी[4] दिवाकर[5] सगन है ।
चरन चरन भर सरव कलन[6] करि,
बीस अर दश पञ्च भाषत लगन है ।
अवर भरम सब हरन करन जब,
नाम नभरस एस राखत नगन है ।

---

१ आठ २ जाण करिके ३ सोलह ४ रगण ५ जगण ६ मात्रा

अथ ३६ मात्रा सूर छन्द (भेद=२४१५७८१७)

हंसी ।५१२६३३।

आदं पादं दोमे भूमी[1] अवर तगन इक कवि वर कीनो जामै ।
जामे कीनोताके पाछे गिन कर नगन धरन कर तीनो तामे ।
तीनो पाछे एको भाषे सगन स सिर इक मगन विचारे सारे।
सारे हंसी चारे पादं पर इक यति[2] अठ वरन उचारे डारे।

अथ ३७ मात्रा झूलना छन्द (भेद=३९०८८१६८)

केकनी ।२३६४६४६४।

सात रागन्न को सोध के बोध से पाद के आदि में ठीक डारे,
पाद के अन्त में फेर गेरे गुरु अङ्क को जान के रीति सारे,
आदि विश्राम में सोध बाणं करे फेर लङ्का पति[3] शीश धारे,
छन्द का नाम तो केकनी है कहे पाद सारे करे मीत चारे ।

अथ ३८ मात्रा उपझूलणा छन्द (भेद=६३२४५९८६४)

बागेश्वरी ।१०१४१९६६।

करे यों विचार कवि राज सारे धरे सात वारे[4] इसे ढंग को,
पुनः ताप छारी धरे लोग डारी कली जान चारी नहींभङ्ग को,

---

१ मगण २ विश्राम ३ दस ४ यगण

यती तीनजाने षटे षष्ट ठाने पुना पञ्च आने इसी छन्द को,
कवि केसरी जो सु वागेश्वरी को कहे एस रीति इसी छन्दको।

अथ ३९ मात्रा अति झूलणा छन्द (भेद=१०२३३४१५५)

यथा चितक। ६२६८०८।

नगन ल[1] अग.री गिने सात[1] वारी कही सारी पदं एक धारे।
वर्ण[2] मुनि राखे यति आदि भाषे षटे फेर पाछे षटे अङ्क डारे।
जुगन सु विरामे गिन अङ्क जाने षटे षष्ट तामे भरे एक सारे।
चितक वृत जाने कवि जो स्थाने पदं चार ठाने यही है विचारे।

अथ ४० मात्रा हर झूलना छन्द (भेद=१६५५८०१४१)

यथा आकाश ।६६५१४०६६।

आठ तागन्न को गावते जो गुनी,
सो कवि जान लीनी गुनी सार।
नीसार विचार के भेद डारे सभो,
धारन धार सुधार विचार।
विचार डारी कली चार सारी कवि,
राज भारी भलि रीति सम्भार।
सम्भार पोलार[5] जो राम उचार तो,
झूलना झूलना नाम उचार।

---

१ लघु २ यगण ३ सात ४ तगण

झूलणा ।१०१४३९७६।

कली एक में आठ यागन्न ऐसे नहीं भेद तैसे कवि झूलना है।
सभे भेद को वेद के खेद वाभों कला भेद चालीस का खूलना है।
करो पाद ही सोध के चार सारे इसे भेद से झूलना मूलना है।
कही शेष ने रीति सो ठीक देखी इस छन्द का नाम तो झूलना है ।।

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे तृतीय भागे
मात्रिक छन्द निरुपणं नाम द्वितीय प्रकाशः ।

अथ भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे तृतीय भागे
अर्धसम छन्द निरुपणम् नाम तृतीय प्रकाशः ।

॥ दोहा ॥

गुरु नानक दशमेश के चरन कन्ज को वन्द ।
कहुं व तृतीय प्रकाश में कछुक अर्ध सम छन्द ।।

नादी मुखी

नगन जुग सिवारे । गुरु दो उचारे ।
यगन पुन सुलागे । गुरु दो तियागे ।
अर्ध सम सु जाने । पदं चार ठाने ।
जो कवि सुन सुखी है । सु नादी मुखी है ।
।। अथ दोहा स्वरुप प्रकार निरुपणम् ।।

॥ दोहा ॥

दोहे आदिह रुप में वाईस गो लो चार।
अन्ते में दो गोधरो वाकी लो को डार।

सारांश

दोहे की मात्रा ४६ होती हैं। जब चौबीस मात्रा का प्रस्तार करें तब SSS.SS.|S+SSS.S.S|, २८७१३वाँ दोहे आदि रुप है और इसका अन्तिम रुप ||||||,||||||+||||||, ||S|, ४६३६६वाँ है। कई दोहे को ६१ प्रकार का दूसरे २३ का मानते है किन्तु २१ प्रकार का ही दोहा मान्य है क्योंकि नेमरू मात्रा का प्रस्तार नहीं होता और दोहे के अन्त में ताल गण का नियम है। दूसरा दोहे के प्रथम विश्राम में SSS.SS |S. रुपवाले टगण, उगण, ढगण होते हैं और अन्तिम विश्राम में टगण, गगण, SSS.S.S|. ताल गण होते हैं। उगण का मध्य रुप जगण है और ढगण का मध्य रुप तालगण सुन्दरता नाशक होने से और अतिव्याप्ति के भय से दोहे में नहीं धरे। उपरोक्त गणों के त्याग से दोहे की सम्पूर्ण मात्रा ४८ होती है। आदि रुप में २२ गुरु और ४ लघु मात्रा, अन्तिम रुप में दो गुरु शेष लघुमात्रा होती हैं। उस २१ प्रकार के दोहे को उत्तम, मध्यम, कनिष्ट तथा नीच होने से ब्राह्मण क्षत्रियादि का नाम देते है। जैसे १२ लघुवाला ब्राह्मण, २२ लघुवाला क्षत्रिय ३२ लघुवाला वैश्य एवं ३२ से अधिक लघुवाला शूद्र दोहा होता है। आगे दोहा चित्र से सब स्पष्ट हो जावेगा।

अथ दोहा २१ प्रकार नाम वर्ण लघु, गुरू

चित्र देखो

अङ्क	नाम	वर्ण	लघु	गुरु	अक	नाम	वर्ण	लघु	गुरु
१	हँस	२६	४	२२	१२	राजहंस	३७	२६	११
२	मोर	२७	६	२१	१३	कलकंठ	३८	२८	१०
३	पिक	२८	८	२०	१४	चटका	३९	३०	९
४	कीर	२९	१०	१९	१५	श्येन	४०	३२	८
५	कलहँस	३०	१२	१८	१६	क्रौंच	४१	३४	७
६	कपोत	३१	१४	१७	१७	लवा	४२	३६	६
७	चत्रिक	३२	१६	१६	१८	टिटभ	४३	३८	५
८	चकवा	३३	१८	१५	१९	राय मुनी	४४	४०	४
९	चकोर	३४	२०	१४	२०	हारल	४५	४२	३
१०	गरुड़	३५	२२	१३	२१	खञ्जन	४६	४४	२
११	गीध	३६	२४	१२					

२१ प्रकार के दोहे के नाम निकसान प्रकार निरुपणम्

दोहे के नाम निकासने की रीति यह है। कि जो दोहे की सर्व लघु मात्रा को गिन कर अर्ध से एक अधिक त्याग कर जो बाकी बचे ताके समान ही दोहे का नाम जानना योग है

अथ सोरठा प्रकारः—

दोहा उल्टा ही सोरठा है। अर्थात् दोहे के तो आदि विश्राम में १३ मात्रा है और अन्तिम विश्राम में ११ मात्रा है और सोरठे में प्रथम विश्राम में ११ मात्रा है और अन्तिम विश्राम में १३ है। और भेद नहीं है। और जो दोहे के नामों में हँसादि विशेषण है। सो हा सोरठे के भी जान लेने यांते हमने भिन्न स्वरूप चित्रादि लिखने का विस्तार नहीं किया। ॥ इति ॥

अथ अर्ध सम पुनः माधविका छन्द का रूप

॥ यथा ॥

यह रूप आठ जगण प्रथम और तृतीये पाद का है। और अर्ध सम होने तै दूसरे और चौथे पाद का यह रूप हैं। तथा ही अब हम उदाहरण कहे हैं।

माधविक छन्द

करे जगने इसमें गिन आठ, सुपाट जुपाद ररे कविराज ।
दूसरे पाद धरे भगना मुनि, गोल पुना पद अन्त विराज ।
करे सम आदि कि तीसर को, सम दूसरि के कर चौथह साज
छन्द सु माधविका पद शोध लिखा, विषमांत कविन्दर साज

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे तृतीय भागे मात्रिक अर्ध सम छन्द निरूपणम् नाम तृतीय प्रकाशः

अथ मात्रिक बिषम वृत निरुपणम् नाम चतुर्थ

प्रकाशः

यथा बेगवती छन्द

तिन बात गुरु पुन डारे, फेर ससी गुन दो गुरु चीनो ।
सगना नगन य धारे, बेगवती भन छन्द प्रवीनो ।

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे तृतीय भागे

अर्ध सम विषम मात्रिक वृत स्वरुप निरुपणम् नाम

चतुर्थ प्रकाशः

अथ भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे तृतीय भागे उपमात्रिक वृत निरूपणम् नाम पञ्चमं प्रकाशः ।

१ ॐ सत गुरु प्रसाद

अथ प्रथम मङ्गला चरण

द्वैया छन्द

शीश निवाके वन्दन करिये, करता पुरुष अकाली ।

रंग रूप कुछ रेख नहीं, पर कुल दुनियां दा वाली।
रङ्ग विरङ्गा दुनिया करके, आखर फेर इकल्ला।
हिन्दू जिस नूं राम आखदे, तुरक आखदे अल्ला।

पुनः द्वैया छन्द

कुल दुनिया दा मालिक होके कुल दुनियां विच वस्से।
अङ्ग अङ्ग सभनूर समाया, भेद किसे न दस्से ॥
गुरु पीर विन वदियाँ कर कर, दुनियां होई अन्धी।
नूर खुदा दा हर दिल दे विच, ज्यों फुल बीच सुगन्धी।

इति मङ्गला चरण समाप्तम्

अथ उपमात्रिक वृत निरूपणम् प्रारम्भ

इन छन्दों में प्रस्तार का नियम नहीं होवेगा, किन्तु केवल मात्रा और विश्राम का संकेत होवेगा और कहीं २ छन्द में लघु गुरु वा गण का नियम होवेगा सो स्पष्ट किया जावेगा और इन को कई कवी लोग मात्रिक मुक्तामुक्त वृत भी कहते हैं। तात्पर्य यह है कि प्रस्तार से संकेत रूप बन्धन में नहीं है इस लिये मुक्त है। और मात्रा विश्राम रूपी बन्दन में है। इस लिए अमुक्त है। इसी वास्ते इन को मुक्तामुक्त भी कहना सार्थक ही है। और बहुत से भाषा ग्रन्थों में मुक्तामुक्त ही वृतों का लेख देखा गया है। कहीं मात्रिक मुक्तामुक्त छन्द होते हैं या कहीं वर्णिक मुक्तामुक्त छन्द होते हैं। और प्रस्तार के नियमानुसार बहुत ही कम पाये जाते हैं।

अथ उपमात्रिक प्रसिद्ध छन्द स्वरूप प्रकार निरुपणं

।। चँवंसा छन्द ।।

धर मत चारे, दो गो डारे, पद चव अंसा, छन्द चुवंसा ।

लीला छन्द

पञ्च मता परे, फेर रगणा धरे ।
चार चरने भने । छन्द लीला बने ।

मधुभार छन्द

धर मत चार, पुन जगा डार, पद चार राच, मधुभार वाच

छकता

षट मत करना, फिर गुरु धरना, चारे चरणे, छकदा वरणे

मोध

आठ ही कला सवार, अन्त में दिनेश डार ।
भरो चार चरण सोध, छन्द जान सो समोध ।

कोमर

नव कला[1] को धर मूल है, नहिं अन्त रगणा मूल है
इम चार ही चरने भरो, कवि इस वेस[2] सु कोमरो ।

रवी

चौदस मत्तह शोधकवी, अन्त गुरु तो छन्द रवी ।
और सु भेद नही करने, चार जरूर सही चरणे ।

---

१ मात्रा १ स्वरूप

हाकल

पाद कला दश चार भरो, हाकल चारे चरन करो।
गुरु लघु कछु विचार नहीं, इम कविराज उचार कहीं।

प्रिमान

कला आठ आदि विचारनी, पुन अन्त गिन सत डारनी
पर अन्त रगन पछान के, कली चार है प्रिमान के।

चौपाई

आठ कला पुन सात विचार, और भेद सभ देत निवार।
चार पाद इन जानों भरे, लघु गुरु भ्रम चर्मन करे।

पुनः चौपाई

षोड़श कला कला महि डारे, आदि चरम का भरम निवारे
गुरु लघु वरन भरम नहि राई, चार चरन की जान चौपाई
दो पाद षोडस कला सिवारे, पन्द्रह पुन दो पाद उचारे
ऐसे अरध विषम पद करे, उस को भी चौपाई ररे।

पाधरी छन्द

इस कला कुल षोडस पछान, पर अन्त जगन को शोध ठान
भर चार चरन ऐसे सिवार, इम छन्द पाधरी रीति धार।

वरवा

दो दश कला आदि पुन सात सवार।
वरवा छन्द वेद दो चरन विचार।

पवङ्गम छन्द

कला इकादश आदि फेर दश धारिये ।
पावक अन्त अशंक पाद के डारिये ॥
पाद कला इक बीस रीति को जानिये ।
छन्द पवंगम नाम चार पद ठानिये ॥

आडिल

आठ आठ पुन तीन कला को भरन हैं ।
फेर आन इक अङ्क अन्त गुरू परन हैं ।
ऐसे चारें चरन चीन चित करन है ।
हो वृत आडिल किरत पच्छाने धरन है ।

सिर खिराडी

दो दश शोध बनावे मत्ता आदि में ।
विच विच मेल मिलावे अन्ते जोग नहीं ॥
नव[१] ही वर्ण पच्छाने आदि विराम के ।
नव कल अङ्क छ आने दूसरे पाद को ॥

निशानी

कला तीन दश आदि में पुन वसु गिन डारे ।
अन्त सु गुरू अशङ्क कर वर धरन विचारे ॥

१—६ ।

चार पाद भर शोध के कर बोध सु ज्ञानी ।
छन्द सु देत अनन्द को जिस नाम निशानी ॥

(झोक)

पहले विचार मतां बारां सिवारो जी ।
फेर एकदश इस दे पिछे उचारो जी ॥
दीर्घ अरवीरी इक राखो जरूरी है ।
चार पाद अन्त फेर टेक मशहूरी है ॥
"चार पाद अन्ते फेर ॥ १६ ॥

(दटपटा)

दो विराम इक पाद में भली रीति बनाई ।
कला भेद भल बेद कर इम करो शुधाई ॥
आदि तीन दश ठान के पुन दश गुण लीजे ।
चार कली ऐसी चली सु दटपट कीजे ॥

(दोहा)

तेरस ग्यारस कला पद दो पद दोहा कीन ।
उल्ट सोरठा पड़न से छन्द सु दोहा चीन ॥

[तथा सोरठा]

दु पद सोरठा कीन ग्यारस तेरस कला पद ।
छन्द सोरठा चीन उल्टा दोहा पड़न ते ॥

१

(सुर)

कर पहले पञ्च दश मात्रा, सुभ फेर तिरोदश जान ।

कर चारे पद इम शोध के, पर अन्त गोल पच्छान ॥

पर विच विच यमकां लामदे, कई ढाडी चतुर सुजान ।

अर ढाढी इस नूं गामदे, सुर तर्ज रसीली मान ॥

२

(पुनः झोक)

पहले विचार मत्तां, बारां सिधारो जी ।

फेर ग्यारां इसदे, पाछे उचारो जी ॥

औरों कुछ भेद नहीं पर, चाल न भुलाओ जी ।

पञ्जो सब चरन बनाके; गाई दी झोक है ॥

आकिर नूं जमक वी देवो, कोई वी न रोक है ।

"आखिर नूं जमक वी देखो ।

॥ रत्ता ॥

कला आदि चौदश की जती, फिर और दो दश ठान ।

इक कली में सकली कला पट वीस नहों अधिकान ॥

इम कीन चारे पाद की मिरजाद जो कविराज ।

इस गती रत्ता भाखते मद मत जिम गजराज ॥

१—कहीं कहीं सुर = १३ + ११ मात्रा की भी होते हैं और किते किते १५ + १४ और किते १० + ८ + १० वा १५ + १० १५ वा १५ + १४ की भी होते हैं ।

२—वा कहीं = १२ + ६—पर भी विराम होता है ॥

— हरी गीत —

पद आदि में मरयाद षोडश, फेर दश गिन आन ।
पर एक अङ्क निशङ्क, लघु पद गेरिये अवसान[1] ॥
इम कीन जो परवीन कवि प्राचीन ते सुन नीत ।
सुन रीति सारे चार पाद इम गावना हरि गीत ॥

भानु

षोडश[2] कला[3] आदि पद गेरे फेर वसु[4] मध आन ।
आन ठान इक गोल तोल के पद पद के अवसान ॥
चार चरन कर धरन धरे इम वर्णन कवि महान ।
हान करे सभ भेद आन को छन्द भानु इम जान ॥

॥ लटपटा ॥

तेरस मत उचार कर फिर चौदश अन्त मिलावे ।
चार चरन इम भरन कर सुन धरन चीत हुलसावे ॥
लघु दीर्घ का भेद नहीं कुल कला सताई राखे ।
चाल विचार सिवार कर इम छन्द लटपटा भाखे ॥

॥ रोड़ा ॥

चरन चरन में परे कला भल बाईस गिनके ।
और जुरु इक आन गुरु अवसान[1] सु जिनके ॥

---

१ अन्त में । २ सोलहा । ३ मात्रा । ४ आठ ।

१--अन्त ॥

कहीं कहीं भ्रियाद पाद कवि चार सु जोडा।
और सु भेद निकन्द[1] छन्द भन नाम सु रोडा ॥

॥ रसावल ॥

मत्त इकादश[2] आदि तीन दश अन्त जु ठानो।
बीसरु चार सिवार एक पद करे विधानो[4] ॥
चतर पदन को बदन[3] सदन[4] जिम जान धरातल।
सो कवि ने लख लीन कीन इम छन्द रसावल ॥

॥ सुगीतका ॥

विसराम का इस रीति से कुछ नेम न विच चरन।
चरन चरन में शोध के पचीस मत्तह भरन ॥
भरन चरन जु चार को गुरु लघु भरम न करन।
करन छन्द सुगीत का इस रीति की जो धरन ॥

॥ गीता ॥

पद में करे विश्राभ चाहे न करे इसमें कवी।
षट बीस मत्त कवीश कह पदेक में डारे जभी ॥
कुछ अङ्क गण की शङ्क न पदन्त में धारे तवी।
छन्द गीता नाम इसका चरन हो चारे जभी ॥

१—दूर करके ॥ २ ११ ! ३ कथन । ४ घर।

॥ उगाहा ॥

कर कला पञ्च दश आदि में पुना इकादश जान ।
शुभ शेप उगाहा वेश[1] वद[2] चवपद ऐम विखान ॥

॥ शङ्कर ॥

गिन मत चौदश आदि में पुन अन्त दो दश ठान ।
विच आन भेद न बेद कुछ इक जान लघु अवसान ॥
पट बीस हैं मत्त पाद में इम जो कवीश बखान ।
पद चार धार सवार कर इम छन्द शङ्कर जान ॥

(वातल)

वसु कला करनी पुन वसुंधरनी पुन दस भरनी वर ।
वर यति तीनों इम विधि कीनो अवर न चीनों पर ॥
पर चव चरने इस विधि करने कविवर वरने जब ।
जब धर चाला करन सुखाला छन्द बताला तब ॥

[ललत पद]

कला पञ्च दश कह कवि राय पुन रवि गेरे फेर ।
फेर नहीं कछु भेद रहाय चार चरन धरो गेर ॥
गेर फेर पल्ट कर राखो तो सरसो कहो भेद ।
भेद यही कविराजन भाषे छन्द ललत पद वेद ॥

---

१ = स्वरूप २--कहें हैं ।

[साधक]

आदि कला चौदश भाषे पुन दश राखे शेष जभी ।
चार बीस मत डार सुने अन्त गुने सगनेश तभो ॥
चार निहार उचार करे चीत धरे यह रीति भली ।
बाधक[1] भेद सभी मानो साधक जानो चार कली ॥

— दवैया —

आदि विराम कला कर खोडस दो दश फेर अलावे ।
लावे एक निशङ्क अन्त गुरु शङ्क न मन उमगावे ॥
गावे मत उठाईस पद पद औंर न भेद उचरने ।
चरने चारे भरन ग्वैया छन्द दवैया करने ॥

— खाई —

खोडस आदि उचार करे फिर दो दश अन्त मिलावे ।
दोनों चरन भरन सर ऐसे धरन चीत हुलसावे ॥
कला बराबर चरन तीसरे अन्त मिले पद नाहीं ।
चार चरन सभ करे खाई चाल पच्छान बणावे ॥

॥ हरि गीत[2] का छन्द ॥

पद आदि में गिन कला खोडस जोड दश पुन दीन है ।
कर दीन है प्रवीन जो कवि अन्त इक गुरु चीन है ॥

१--छन्द की चाल भङ्ग करन वाला भेद दूर करो ।
२--गीया भी इस का नाम है ।

मत चौन है अठ वीस इक पद बीच सो इम धरन है।
वर धरन है हर गीत का के चार सारे चरन है ॥

चौबोला

वसु[१] मत आने पुन वसु[१] ठाने दो दश फेर सिवारे।
इम कर लीनों पद पद चीनों तीनों यती विचारे ॥
इम विधि साजे जो क बराजे आदि अन्त इम खोला।
सारे करने चारे चरने नाम सु छन्द चवोला ॥

सटपटा

मत्त तीन दश आदि में पुन अन्त पञ्च दश भाखिये।
आन भेद सब त्याग कर अवसान रगन इक राखिये ॥
आठ वीस इक चरन में शुभ चरण सुचार सिवारिये।
रचे छन्द सु सटपटा नहीं घटे धरन विचारिये ॥

हरि गीत का छन्द

जित आदि पद वसु[१] चार दश पुन मत चौदश डार कर।
आठ बास कीत सु चरन मैं इम चरन चरन विचार कर।
लघु गुरु गण नहीं भरम धर डर डारकर नर चीत का।
पद चार धार सिवारकर कर इम छन्द सोहरिगीतका।

१—आठ

पुनः गीतक छन्द

धर आदि खोडस मत गिनकर बहुर दो दश कीजिये ।
लघु गुरु अङ्क की शङ्क न इक रगन अंतह दीजिये ।
सभ नेम है अठ बीस का इम जो कवीस विखान है ।
पद चार कीत सुरीति धर कर छन्द गीतक जान है ।

पैरवडी छन्द

मत आदि तेरस गिनो पुन अन्त पञ्च दश भाखिये ।
और भेद को छेद कर पर अन्त रगन गन राखिये ।
इक पाद सु अठ बीस है पद चार विचार सिवारिये ।
भनते कविन्द जु विन्द इम वहि छन्द सु पैरिड उचारिये

कन्त विलोकन छन्द

धर आदि मत्तह चार दश पुन सात डारन बन्द कर ।
पुन सगन नगना राख कर नर भेद सारन बन्द कर ।
मिलता रहे अनुप्रास जब भर पाद चार अनन्द कर ।
इम छन्द कन्त विलोकना कविराम धारन ढङ्ग वर ।

मञ्जू छन्द

कर मत तीस चरन इक राखे रीति ठीक उरधारे हैं ।
धारे है विच धरन चतर चित इत विध वृत उचारे हैं ।
चारे है चरने करने गण वरण भरन हन सारे है ।
सारे हैं कविराज बड़े सो मञ्जू छन्द विचारे है ।

दुमला छन्द

विसराम उचारे इक पद चारे सारे इस विधि चीने।
दश आदि विखाने कला सुजाने पुन वसु ठाने बीने।
इम पुन वसु डारी फेरि सुचारी तीस उचारी जुमला।
चारे चरने इस विधि धरने छन्द उचरने दुमला।

करखा छन्द

एक ही पाद धर चार विसराम कर, मात्रा रीति भर चीत जाने
आदि दश भाखिये फेर दश राखिये, तीसरे आख दश सात ठाने
अंते विचार के दो गुरु डार के, पादं सुधार के चार लाए
मत्त सैंन्ती सकर पाद पाद ही भर, करखा उचार कविछन्द गाए

मरहटा छन्द

मत्तां दश धारे पुन वसडारे फिर इकादश जान।
कछु और विचारे कविजन सारे भानु ठान अवसान
यह चाल भली है कली कली है कला बीस नवदीन
पद चार बनावे चित हुलसावे छन्द मरहठा चीन

काफी छन्द

आदि पाद में खोडस लावे पुन वसु शोध सिवारी है
जान परे अवसान एक गुरू कला तीस ही सारी है
चरने चार बनाकर धरने ऐसे धरन उचारी है।
इसी छन्द का नाम है काफी और न कछु विचारो है

रुचरा छन्द

यती त्रिचारी इसकी चारी इस विध सारी के भगे।
कला उचरनी वसु वसु धरनी पुना वसु करनी फेर धरो
पुन चव कीने कवि पर वीने ता पर चीने गुरु उचरा
चारे चरने इस विधि करने छन्द उचरने सो रुचरा

मात्रक सवैया

आदि विराम कला कर खोडस पुन गुन जोड़ सु दो यश आन
आन जु भेद वेद सभ ना[1]खेगाख गुरु लघु को अवसान।
ऐसी धरन चरन कर चारे सुन सारे चित में [2]उमगान।
गान सवैया जान गवैया चात्र सु मात्रिक भेद बखान।

त्रिभङ्गी

विसराम उचारे पद पद चारे गिनकर सारे मत्त धरे
आदे दश लावे पुन जुग पावे वसु वसु गावे चार करे
पद चार विखाने इक गुरू आने अन्त सु ठाने विधि चङ्गी
कविराज प्रवीने जो अस चीने छन्द सु कीने त्रिभङ्गी

मत्त द्रुमल छंद

दश कला सिवारे पुनि वसु डारे फेर सु चौदश कीने हैं
पुन पद पद सारे मत उचारे दो दश वीसक चीने हैं

---

१ त्यागे २ उत्साह।

कछु लघु गुरु गणकर भ्रम न मन धर चतर चरन कर सारे हैं
अब भेद गयो खुल मत्त द्रु भल खुल छन्द कविन्द उचारे हैं

रङ्गी छंद

कल दश गिन करके वसु वसु धरके पुन गुन भरके सुरीति भली
कछु और न चीनों सभ गिन लीनो तीस रु तीनों सुकली कली
इम चारे चरने कविवर बरने गिन गिन धरने धरन विचार
इम चाल सुचङ्गी कर इस ढङ्गी छन्द सुरङ्गी नाम उचार

मात्रिक सवैया

पद में विश्राम करे न करे परमत चौतीस कवीस सिवारे
लघु दीर्घ भेद करे न करे पर चाल करुर जरुर निवारे
गण अङ्कह शङ्क धरे न धरे परपाद निशङ्कहु चार उचारे
कछु और विशेष करे न करे इस नाम कवेश सवैया उचारे

धारी छंद

दस आदि सु राखे पुन वसु भाखे फिर वसु पाछे पुन वसु डारी
इक कली कवी शंकला चौतीस ऐसे कीसं इस में सारी ।
भन इसके सारे पादं धारे चार उचारे धरन विचारी
इम धारन धारी कल मल टारी वृत सुधारी नाम सुधारी

बीर छंद

आदि विश्राम कर वीस कल राख नर ।
फेर कर पंच दश डार हैं ।

इस मर्याद पाद चार ही विचार भर
श्रम नह कर ऐसे कवि धार हैं ।
पांच तीस मात्र को इक ही चरन गिन
जिन में अधिक ताहि टार हैं ।
नाम इस छन्द वीर कहित कविन्द वड
कोई और न विचार है ।

सूरा छंद

गिन दश कल लावे पुन वसु पावे
फिर अठ आवे दश पुन भावे हैं ।
कुल कल पट तीसं एक पद कीसं
जो कवि ईशं इस विधि गावे हैं ।
इस धारण धारे शोध सिवारे गिन २ सारे चरने चारे हैं ।
प्राचीन नवीने कवि प्रवीने कवि लख लीने सूर उचारे हैं ।

मात्रक भूलना छंद

कलादि विराम में वीम डारे सही
फेर सतारहां क्यों भूलना है ।
चरण के अन्त पर दो गुरु धरन कर
मत सैंतीस का खूलना है ।
चार ही चरण को धरण कर धरण लह
वर्ण गण भेक को भूलना है ।

कहे भूलने चातर जो बहुत प्रकार
यह मात्रा धार कर भूलना है ।

१
अति भूलना छन्द

चाल उप भूलना जचीं नाहिं भूल ना।
२
तवी कुछ सूलना जह ठीक मानो ।
शीश अति भूलना लघु अनुकूल ना
गुरु ते भूलना इक शीश ठानो ।
३ ४
और कुछ वेदना चर पद वेदना
५
वने विन वेदना यह रीति जानो।
भूलना जो अति चार चार सारी यती
काव्य में जो रती तो नीति मानो।

हर भूलना छन्द

चार यति सार यहि धरण विचार लही
भूमि गण धार नहि मूल अनुकूल ना।
चाल कर याद यहि अस इक पद मह
चार अस पाद यह मूल कवि भूल ना।

---

१ जेकर अति भूलने के अन्त में १ लघु रखो तो १८ मात्रा का उपभूलना छन्द होता है २ कष्ट ३ और कुछ नहीं जानना ४ चार पद जानो ५ सो खेद विना ही वन जाता है

कुशल ओषेम यह और कुछ नेम नहि
परे तू प्रेम यही कछु प्रतिकूल ना ।
भेद स्थूल यह कवि राज भूल नहीं
और इस तुल्य नहीं छन्द हर भूलना ।

विजेदंडक—वैंत

अलफ अकल से असल में कला चाली
कली एक सारी वीच शोध धारे ।
यति वीस वा रावन के शीश राखे
नावतर चाल से पकड़ कर नेम डारे ।
गुरु एक वा अन्त में दोए ठाने
कहूँ यवन भाषा कली वीच सारे ।
वीजे दंड़कम् छन्द वा वैंत आखे
अँ पर शोध उचारने चरण चारे ।

अथ गजल छन्द का स्वरूप

दोहा

चौदश चौदश मत के ठान चार विश्राम ।
१
शोभित भाषा यवन में गजल छन्द इस नाम

कहीं २ गज़ल के –१५+१५ मात्रा के चार २ विश्राम के चार चरण की भी गजल भी होती है और कहीं १६+१६ मात्रा की भी होती है यहां रीति मात्र जनाई उंदू भाषा मुसलमानी

उदाहरण यथा

जरा दिल सोच ऐ गाफ़िल कि दुनिया छोड जाना है।
मुसाफ़िर बे वतन हो कर क्या दिल को लगाना है

टेक

वदन नाज़ुक गुलों जैसा लगे अज़ीज हर दिल को।
निकल जब रूह गया तन से तु माटी में रूलाना है॥ जरा
किधर गए मुल्क के वाली पड़ी यह माडीयां खाली।
किधर गए कुफल ओ त ली मिला माटी खजाना है॥
जनो फरजन्द ओ जानी जिनों पर जान कुर्बानी।
बखूबी गौर से देखा तु मतलब का जमाना है॥
गुजर गए शाह सिकन्दर से ख्वज़ा लगवा सुमुन्दर में।
मन्त्री एक नम्बर के हुए वोह म.त खाना है॥
यह दुनिया तो सराई है मुसाफिर भूल ना इस में।
बखूबी गौर से देखो कहाँ तेरा ठिकाना है॥
वरंगे मुख्त लफ नामो देख कर भूल मत गाफिल।
नजर कर शिहर से देखो दमे बाजी का बाना है॥
जहां सभ छोड़ जाना है जो दुनियां का खजाना है।
तूं फिर दिल क्यों लगाना है हुआ तूं क्यों दिवाना है॥
कहाँ कब्जे जमाना है मुल्क सारो बिगाना है।
जहाँ करना ठिकाना है तुम्हें यह गलत जाना है॥
सुखन जो मानआना है वह आकर भूल जाना है।
असल तू बे जवाना है इसी ते बे ठिकाना है॥

बना आलम किताबों से असल भूला हिसाबों से।
नहीं उरता आजाबों से अमल ने काम आना है॥
मेहर दिल क्यों पसारा है यहाँ मेहमान चारा है।
चार दिन का गुज़ारा है तू' फिर होना रवाना है ।
ज़रा दिल सोच है गाफ़िल की दुनियां छोड जाना है।
मुसाफ़िर बे वतन हो कर क्या दिल को लगाना है॥

१

कली छन्द

कला बीस ते पंच बनावे पहले शोद्ध के ।
ताको पद के आदि विराम में लगावे ॥
ताके पाछे आछे भाषे दूती विराम में ।
गिन कर दो ते बीसो मात्रा गिरावे ॥
ऐसे चार चरण बनावैं आपनी मरजी दे।
ऐं पर दो गुरु पद के अन्त में टिकावे ॥
इसका बहुत रिवाज अन्दर देश पंजाब दे ।
ढाढी कलियां ते आवाजाँ कह कह गावे ॥

इति भाषा मिङ्गल अस्तार छन्द दिवाकरे तृतीय भागे उपमात्रिक वृत निरूपणनाम पञ्चम प्रकाशः ।

इसका दूसरा नाम आवाज भी है । कहीं इस के २४ व २५ मात्रा के विश्राम भी होते हैं और दूसरा विराम २१ व २२ मात्रा का भी होता है ।

अथ भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे तृतीय भागे मात्रिक दण्डिक वृत निरूपण नाम षष्ठ प्रकाशः ।

दोहा

विघन हरन मंगल करन चरण शरण गति दान ।
दानव मानव सभन को देत राम कल्याण ॥

दोहा

श्री गुरु नानक चरण रज मन अन्तर धर ध्यान ।
ध्यान हरत अज्ञान को करत वेग कल्याण ॥

दोहा

खल दल खण्डन यह कीए हिन्दुन कीयो उधार ।
श्री गुरु गोविन्द सिंह पद भज मन बारम्बार ॥

इति मंगला चरण समाप्त ।

अथ मात्रक दण्डक छन्द

वर्णनम्

कुण्डलियाँ छन्द

दोहा सम पहले पढो पुना रसावल आन ।
दोहे अन्त विचार कर पुना यमक को ठान ॥
पुना यमक को ठान रसावल नाल मिलावो ।
अथवा रोडा जोड रसावल मूल हटावो ॥

पद भत्तां चौवोम कुण्डलियो कविजन जोहा [1]।
मिले आदि से अन्त यहाँ ते पडिया दोहा ॥

पुना कुण्डलनी

शुद्ध आदि उगाहे चरण युग परन यहाँ वुद्धि देख।
अवसान [2] उगाहे के पुना ठान यमक को लेख ॥
ठान यमक को लेख वहो पुन सही रसावल।
डार विचार सवार रसावल चारे आवलि [3] ॥
दोनों छन्द सम्बन्ध कुण्डलनी जु मन चाहे।
मिले रसावल अन्त आदि दो चरण उगाहे ॥

छपय

चार आदि के पाद सम्पूर्ण रोडा लावहु।
अथवा आदि रसावल आवलि चार मिलावहु ॥
चरण परन चौवीस कला पद आदि जु चारे।
चतरन के चित ठटे और पट पद भी सारे।
दो पद अन्त निसंक मत्त अठवीस ठीक इस में कहु।
इम छपय भेद वहु भान्ति के जान अचार्य लोग वहु ॥

---

१ देखा। २ अन्त में।

१

दण्डक काफी

पद के आदि विगमन तीनो खोडष खोडष ही मत कीनो
चौथे दो दश का चित चीनो इस विधि गिन मत डारे हे
इस के आदि अन्त मध्य सारे गण और वर्ण न भ्रम
विचारे इक पदमत्ता दो शठ डारे
धारे धरण निहारे हैं ।
कविता जो कवि काव्य हिसावी इस कीकाफी
कहे पंजावी रागी गावन तर्ज रवावी
तो भी नहीं निआरे है
प्राचीन जो कवि लिख दीनो सो स्वरूप कवि ने लख लीनो
कीनो सुगम सु रीति विचारे चारे चरण उचारे हैं ॥

इति मात्रिक दण्डक वृत निरूपण नाम षष्ठ प्रकाशः
अथ भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे चतुर्थ भागे वर्णिक छन्द स्वरूप निरूपणं नाम प्रथम प्रकाशः ॥

मङ्गला चरण

दोहा

परम पुरुष सभ ते परे, सभ ते अति समीप ।
जिस चेतन की ज्योति ते, जागत जीव सु दीप ॥

---

१ इस पंजावी काफी के कहीं कहीं =१८+१८+१८+१६ मात्रा के भी विश्राम होते है और कहीं–१४+१४+१४+१४+के और कहीं २–१३+१३+१३+१३ के भी होते है

पुनः कबित

श्री गुरु नानक ते अङ्गद अमर दास ।
सोई गुरु राम दास मूरती सिवारी हैं ॥
वारी गुरु अर्जुन पर उपकारी होए ।
सोई सोहनी मूरत हरी गोविन्द धारी है ॥
धारी कला सारी हरी राए गुरियाई वालो ।
हरि कृष्ण निराली मूरती उतारी है ॥
तारी गुरु तेग जो वहादुर जी हिन्द सारी ।
गुरु गोविन्द सिंह जी को वन्दना हमारी है ॥

इति मंगला चरण

दोहा

अब हम वर्णक छन्द को वर्णन करें स्वरूप ।
वर्णत जाहि अनेक विधि जो कविअन के भूप ॥

अब वर्णिक छन्द जाति भेद बत्तीस वर्णों के नाम भेद का

चित्र देखो

अङ्क	जाति	संख्या	अङ्क	जाति	संख्या
१	उकता	२	१७	अतिअष्टी	१३१०७२
२	अतिउकता	४	१८	धृति	२६२१४४
३	मध्या	८	१९	अतिधृति	५२४२८८
४	प्र तष्ठा	१६	२०	कृति	१०४८५७६
५	सुप्रतिष्ठा	३२	२१	प्रकृति	२०९७१५२
६	गायत्री	६४	२२	अकृति	४१९४३०४
७	उस्नग	१२८	२३	विकृति	८३८८६०८
८	अनुष्टप	२५६	२४	सकृति	१६७७७२१६
९	बृहती	५१२	२५	अतिकृति	३३५५४४३२
१०	पंक्ति	१०२४	२६	उतकृति	६७१०८८६४
११	त्रिष्ठप	२०४८	२७	सुधासार	१३४२१७७२८
१२	जगती	४०९६	२८	महिधार	२६८४३५४५६
१३	अतिजगती	८१९२	२९	मानधार	५३६८७०९१२
१४	शक्करी	१६३८४	३०	मुदधार	१०७३७४१८२४
१५	अतिशक्करी	३२७६८	३१	विशाल	२१४७४८३६४८
१६	अष्टी	६५५३६	३२	सुखपाल	४२९४९६७२९६

अथ वर्णिक सम छन्द स्वरुप एक वर्ण से ३२ वर्ण पर्यन्त भेद पूर्वक स्वरुप निरुपणं तथा ही जैसे उक्ता वृत एक वर्ण का है । इसके भेद दो हैं । यथाः—

श्री छन्द=गा[1] । पा[2] । श्री । की ॥१॥

दुल छन्द= दु । ल । कु ल ॥२॥

॥ अव दो वर्ण अति उक्ता वृत के भेद ४ ॥

रूप १ दोग छन्द= दोही । सारे । गोही । डारे ॥३॥

रूप २ धजा छन्द= लगो[3] । पगो[4] धजा । सजा ॥४॥

रूप ३ राम छन्द= ताल । जाम[5] । नाम । राम ॥५॥

अन्तिम रूप शिव छन्द= दुल । कुल । इव । शिव ॥६॥

अथ तीन वर्ण मध्या वृत के भेद ८ हैं

रूप १ नारी छन्द= गो तीनो । जो कीनो । सो नारी । उचारी ॥ ७ ॥

रूप २ ससी छन्द=जलेकं[6] । पदेकं । वसी है । ससी है ।८।

रूप ३ मृगी छन्द= आग ही[7] । लाग ही । जो दगी[8] । सो मृगी । ६ ।

रूप ४ रमना छन्द=सगणा । लगणा । रमणा । गमणा ।१०।

रूप ५ रामेश छन्द=आकाश[9] । पाजास[10] । गाएस । रामेश ।११।

---

१ गुरु २ पाद में ३ लघु गुरु ४ पाद में ५ जिसमें ६ एक जगण ७ रगण ८ जो देखे ६ तगण १० चरण में ।

रूप ६ मित्र गोल छन्द=दिवेश, प्रवेश, जुबोल, सुगोल ।१२।

रूप ७ मन्दल छन्द=सोमहि[१], जोमहि[२], सन्दल[३], मन्दल ।१३।

अन्तिम रूप कमल छन्द=नगण, लगण, अमल, कमल ।१४।

अथ चार वर्ण प्रतिष्ठा वृत के भेद—१६

रूप १ भूमि छन्द= भू[४] गो[५] दीने, पामे चीने, चारो पावे, भूमि गावे ।१५।

रूप २ गङ्गा छन्द= जलेकं[६] गो, करे ठङ्गा, पदेकं जो, वही गङ्गा । १६ ।

रूप ३ रङ्गी छन्द= आग[७] गारे, चालि चङ्गी, पाद चारे, छन्द रङ्गी । ११ !

रूप ४ राम छन्द = सगडारे[८], बिदजामे, पद चारे, भज रामे । १८ ।

रूप १३ तल छन्द= द्वो[९] गो लल[१०], पावे जवि, सोई तल, गांवकवि ।

अथ ५ वर्णा सुप्रतिष्ठा वृत के भेद—३२

रूप ५ धारी छन्द= गैनं[११] अगारी, दो गो पधारी, पाद जु चारी धारी सुधारी ।

---

१ भगण को २ देखो ३ भली प्रकार से पाद में ४ मगण ५ गुरु ६ जगण ते गुरु ७ रगण गुरु ८ सगण ते गुरु ९ दो गुरु १० दो लघु ११ तगण ।

रूप ७ अक्षर[1] पंक्ति छन्द= सोम[2] विचारो, दो गुरु धारो, चार पदंगति[3], अक्षर पंक्ति।

अथ ६ वर्ण गायत्री वृत के भेद—६४

रूप १० सङ्खनारी[1] छन्द= जलं[4] दो विचारी, कहो सङ्ख नारी, इसे उलटावे, तुमन्थास गावे।

रूप १२ भडथ छन्द = स गनन्त[5] आदम्; य गुनन्त वादम, पद चार सारे, भडथ् उचारे।

रूप १३ तनुमध्या छन्द= आदो तगणो है, पाछे यगणो है, चारे पद बध्या, सोइ तनु मध्या।

रूप १६ उणभुण[6] छन्द =नगण सिवारे, यगण उचारे, पद चव राखे, रूण भुण भाषे।

रूप २८ तिलका छन्द= गुण[7] दो सगणो, पद चार भने, जुगवा रमने, तिलका सुवने।

रूप ३१ मन्थान छन्द= तागन्न दो डार, पादँ करो चार, ऐसे सही जान, सो छन्द मन्थान।

---

१ इसका नाम चम्बन्ध, भगवंती, रसावन, अर्ध भुजङ्ग प्रयात भी है. २ भगण ३ चाल ४ योगण ५ विचार ६ इसका नाम चौवँसा भी है ७ विचार।

रूप ४६ सुमात छन्द= पतङ्ग–पतङ्ग,[1] करो यह ढँग, भरो पद चार, सुमात उचार।

रूप ५५ दामन छन्द=दो भगण रट, चार पदं टट, नाम जु दामन, सो तिलका भन।

रूप अन्तिम मदन छन्द= नगण लगण, कवल दुगण, चतर पदन, मदन वदन।

अथ ७ वर्ण उष्णग वृत के भेद–१२८

रूप २५ मदलेखा–भू[2] वा[3]तं गुरु डारे। डारे केश उचारे। चारे पाद जु देखा। देखा सो मदलेखा।

रूप ४३ समान का छन्द– आद में रगन्न है। फेर जो जगन्न है। अन्त गो विधान का। पाद चौ[4] समान का॥

रूप ६६ नसल छन्द– एक नगण गेर। सल[5] अवर फेर। इम चतर वन्द। कहि नसल छन्द।

रूप ११२ सावास छन्द= नगण दिवाकर। पुन इक लो भर। चव पद वामहि। भनत सुवासह॥

अथ ८ वर्ण अनुष्ठप वृत के भेद–२५६

रूप १८ शुध छन्द–जलागँ दो गुरु डारे। पदेकं जो करे जामे। भने सारे पदँ चारे। तवे गावे शुधा नामे॥

---

१ जगण २ मगण ३ सगण ४ चार ५ सगण ते गुरु।

रूप ८६ नराच छन्द– पनङ्ग[१] आग[२] लोग ते। चवन्न चार जोगते। नराच इस रीति का। सुराज वेपरीत का ॥

सुराज (१७१)

आग[२] ते पतङ्ग[१] डार। गोल बोल नाहि टार।
चार रास पाद साज। नाम छन्द का सुराज।

माणवक रुप (१०३

सोम[३] अकाशं[५] धरके। अन्त लघु गो करिके।
चार पदों को धरना। माणवको यों वरना।

अनाद (१३७)

भूमी नीर[५] भापे गोल। भेदे भेद राखे तोल
ऐसे चार ठाने पाद। जाने नाम छन्दानाद

चिड़पदा (५५)

दो भगनादि करे हैं। दो गुरु फेर परे हैं।
चार सु पादन डारे। चिड़सुपाद उचारे।

अथ ९ वर्ण बृहति छन्द के भेद–५१२

---

१ जगण २ रगण ३ भगण ४ तगण ५ यगण।

भुजङ्ग शिशु (६४)

फनि पर फन[1] जे आवे। धर पर परता[2] जावे।
चतर चरन चीने है। फनि सुत कह दीने है।

भुजङ्ग सङ्गता। १७२।

सगनादि भानु जे धरे। रगनेक अन्त में धरे।
पद चार धार जे करे। सुभुजङ्ग सङ्गता ररे।

मनिबध्या।१६६।

आदि शशी पाछे मगणा। मेल तले चाले सगणा।
चार उचारे पाद कहे। सो मनिबध्या जाद रहे।

सारी।२०८।

नगनिक पाछे यगना। पुन गुन अन्ते सगना।
भरकर चारे चरने। कवि वर सारी वरने।

जापतिया।२४१।

भूमी[3] पाछे भगण करे। राखे ताते सगन परे।
चारे सारे चरन भरे। जापतिया जो धरन ररे।

---

१ नगण २ मगण ३ मगण

करन ।२१७।

१
आदे भू ५ग दो सगणे। एके पाद करे लगणे।
चारे राखत जो चरने। ताको भाषत हैं करने।

तोमर (३६४)

२ ३
इक आदि में कर वात। फिर दो दिवाकर आत।
पद चार डार सुजान। इम छन्द तोमर जान।

अथ १० वर्ण पंक्ति वृत के भेद–१०२४

चम्पक माली। १६६।

४ १ २
सोम रसा तें वात सिधारे। धार गुरु फिरेक उचारे।
चार पदं को चीन निराली। छन्द सही सो चम्पक माली।

सुध। ३४५।

१ ३ ५
भूमादे सगना परे परे। पाछे पूषण गो तरे तरे।
छः पाञ्चों यति को धरे धरे। यों चारे चरने भरे भरे।

---

१ मगण २ सगण ३ जगण ४ भगण ५ गुरु तले तले।

सुषमा । ३६१ ।

गैनं[1] वन[2] सोमं[3] गो करने। ऐसे चरने चारे भरने।
वामे सुषमा चारें चरने। तो चम्पक माला को वरने।

तुरत गती । ४९६ ।

फनि[4] पति है इत उतमें। वमत पतङ्ग[5] सुविचमें।
इक गुरु चार चरन है। तुरत गती सुधरन है।

सारस । ७३६ ।

इक नगन दो सगनान। पद चरम[6] लो[7] फिर ठान।
पुन चरन पावन[8] चार। इम विरत सारस धार।

सरोज । ७६४ ।

सगना नगन पुन कीन। सगना अवर लघु चीन।
कर चार चरनन खोज। यह छन्द धरन सरोज।

अथ ११ वर्ण तिष्ठप छन्द के भेद–२०४८

---

१ तगण २ यगण ३ भगण ४ नगण ५ जगण ६ अन्त में ७ लघु ८ पवित्र।

शालनी ।२८६।

आदं भू[1] एको पुन दो अकाशं[2] । पादं के अन्ते गुरु दो प्रकाशम् ।
सारे ही भारे कवी राजनीके । चारो ही पादं कहे शालन के ।

तगाही ।२६३।

तीनो करे आदि तागन्न जामे । पाछे धरे गेर दो गो सुतामे ।
चारे करे साध के पाद जाही । कविन्द ताको कहे है तगाही ।

वातोरमी । ३०५ ।

भूमी[1] ते सोम पुना[2] गैन डारे । डारे दो गो फिर सारे विचारे ।
चारे ही पाद इसे रीति धारे । धारे सुवातोरमी छन्द सारे ।

इन्द्र बज्रा ।३५७।

आदं गुरु दो यगना सिधारे । धारे वियारं फिर व रि डारे ।
डारे विचार पद चार सारे । सारे कवि इन्द्र बज्रा उचारे ।

उपेन्द्र बज्रा ।३५८।

जगन्न पाछे तगनं सिवारे । जगन्न भाषे गुरु दो विचारे ।
विचार चारे चरने सुजाने । उपेन्द्र बज्रा कवि राज ठाने ।

अथ ११ वर्ण के उपजाता वृत्तों का प्रकार निरुपणम्

---

१ मगण २ तगण

११ वर्ण के उपजाती वृत १४ प्रकार के होते हैं। उनकी रीति यह है जो इन्द्र वज्रा और उपेन्द्र वज्रा परस्पर दोनों के पद मिल कर होते हैं सो उनके पद मिलाने का सुगम प्रकार यह है कि जब चार वर्णों का प्रस्तार करें तब उनके सारे रूप १६ ही आवेंगे तब तांके आदि और अन्तिम रूप को त्यागे तो शेष १४ रूप रहे। तब उन चारो वर्णों के प्रस्तार के १४ रूपों में गुरु वर्ण तो अनुक्रमता से इन्द्र वज्रा के पदों के सूचक है और लघु वर्ण उपेन्द्र वज्रा पदों के सूचक है।

१४ प्रकार के उपजाति वृतों के पदों का सूचक चित्र

अङ्क	छन्द नाम	प्रस्तार	पद बोधक वर्ण
१	इन्द्र वृजा	SSSS	इं इं इं इं
२	कीरति	ISSS	उ इं इं इं
३	वाणी	SISS	इं उ इं इं
४	माला	IISS	उ उ इं इं
५	माला	SSIS	इं इं उ इं
६	हँसी	ISIS	उ इं उ इं
७	माया	SIIS	इं उ उ इं
८	जाया	IIIS	उ उ उ इं
९	वाला	SSSI	इं इं इं उ
१०	आद्रा	ISSI	उ इं इं उ
११	भद्रा	SISI	इं उ इं उ
१२	रामा	IISI	उ उ इं उ
१३	पावना	SSII	इं इं उ उ
१४	वुद्धि	ISII	उ इं उ उ
१५	ऋधि	SIII	इं उ उ उ
१६	उपेन्द्र व्रजा	IIII	उ उ उ उ

यहां चित्र में इं—इन्द्र पद की सूचक है और उ—उपेन्द्र पद सूचक है। अब हम उदाहरण मात्र एक उपजाति छन्द को कहते हैं। यथः—

बुद्धि उपजाति

सही सु आदं इस में सिवारो। उपेन्द्र वज्रा जुग पाद डारो।
दो इन्द्र वज्र' पद अन्त धारे। पादं सु जानो उपजाति चारे।

ऐसे और भी जान लेना। यहां रीति मात्र सूचित की है।

पुनः ११ वर्ण के भेद—२०४८

दोधक (४३६)

तीन करे भगनादि सिवारे। डार गुरु जुग फेर उचारे।
चार वदे[1] पद चाल बनावे। छन्द कवी जन दोधक गावे।

शुभ गति (४४३)

आदि पाद रग नेक जु हेरे[2]। हेर फेर नगना पुन गेरे।
गेर सोम[3] पुन दो गुरु डारे। डार पाद शुभगती उचारे।

तुरी। ५८६।

करो तीन यागन्न चाली भली। लघु ते गुरु से निराली कली।
भरो पाद चारं कछुना दुरी[4]। चले चाल नेके सुजानो तुरी।

---

१ कहे २ देखे ३ भगण ४ छपी हुई।

ललत (६६४)

नगन आदि में एक कीन है। रगन जोग दो लोग दीन है।
चरन चार को वीन के। ललत कीन में चीत चीन के।

सेनका (६८३)

पावकं[1] पतङ्ग[2] आग डारना। फेर भी लघु गुरु उचारना।
चार पद को उचारना करे। छन्द सो कविन्द सेनका ररे।

(वीन ६९६)

आदि पाद रगनेक गेर के। गेर फेर रगनेक हेर के।
लोग जोग पद अन्त कान में। कीन वीन पद चार चीन में।

हरि रुपक ।६५५।

आग[1] नाग[3] शशि[4] सोधन करे। लोग जोग धर धारन धरे।
एस रीति कवि राजन गुने। चार पाद हरि रुपक सुने।

अथ १२ वर्ण जगती छन्द के भेद=४०९६

वैश्व देवी । ५७७ ।

पादं के आदं दो धरा[5] वीन[6] डारे। डारे दो पाछे में जलं[7] ही विचारे।
चारे ही पादं में सुने सैर[7] भेवी। भेवी जो सैरं सो कहे वैश्व देवी।

---

१ रगण २ जगण ३ नगण ४ भगण ५ मगण ६ चुनके
७ यगण भेद के ज्ञाता।

भुजङ्ग प्रयात ५८६

जहां चार यागन्न को थाट बन्दा पदं चार भुजङ्ग प्रयात छन्दा
न वा सङ्गनारी धरे वीच दोवे पडे ग्राम मैना वली ठीक होवे

मैनावली २३४१

तागन्न चारे सिवारे सही डार डारे जु भेदो सु वेदो वही चार
चारे सु मैना वली की कली धार धारे गुनी जो सुनी छन्द की चार

कामणी मोहणी । ११७१ रूप ।

कामणी मोहिणी की सुनो सार[1] ही, सार ही राखने रागने चार ही ।
चार ही पादको गावते जो गुणी, जो गुणी चाल सो मैं भणी जो सुणी

मन्दाकनी । १२१६ रूप ।

नगन गुनन दो धरो आदि में, रगन लगन दो पुना वादि में ।
जन मन हरती मनो बाकनी[2], चतर चरन की जो मन्दाकनी ।

तोटक । १७५६ रूप ।

सगणा गण चार विचार भरे, पद तोटक चार निफोट[5] रे ।
अथवा भर के धर दो तिलका, रट तोटक सोच मिटे दिलका ।

प्रमिताक्षरा । १७७२ रूप ।

पवना[3] पतङ्ग[4] पुन दो पवने[3] । पदने[6] सुचार वदने कविने ।
कवि ने भनेम जिम रीत सुनी । तसनीति चीत ममठीक गुनी ।

---

१ स्वरुप २ सारस्वती ३ सगण ५ प्रगट ६ चरन ७ कथन ।

चन्द्रवरतमा । १६७६ रूप ।

आदि में रगन है नगन पुना । फेर गेर भगना सगन गुना ।
विश्राम करना सत बरने । फेर पञ्च धरना चव चरने ।

मोतिय दाम । २६२६ रूप ।

कही विच चार जगन्न गनन्त । सु मोतिय दाम जु छन्द भनन्त ।
रचो पद चार लखो कवि चीत । कविन्द सुधार धरो विनमीत ।

प्रमिताक्षरा । २७६६ रूप ।

सगना दिनेम[2] पुन वार वार । पद एक माहि धर चार चार ।
पद चार धार कर चीन चीन । कछु और नाहि प्रवीन बीन ।

दोधक[3] । ३५१२ रूप ।

चार भगन्न भरे पद में जब । दोधक बोधक भेद लखो तब ।
और सु भेद लखो सभ फोकट । जो उलटा पढि होवत तोटक ।

अथ १३ वर्ण अतिजगती छन्द के भेद ८१९२

प्रहर्षणी (१४०१ रूप)

आदे है मगन पुना कनी सुने हैं ।
पाछे हैं ज़गन[1] तवागनी गुने हैं ॥
अन्ते गो वरन इक करे हैं विचारे ।
चारे ही चरन धरे करे उचारे ॥

---

१ निर्भय २ जगण ३ मोधक भी इस का नाम है ।
१ रगण

मत मयूर (१६३३ रूप)

आदै भूमी[2] गेर पुना गैन[3] सिवारे।
वारे[4] पाछे वात[5] गुरु अन्त सुडारे ॥
डारे आदे अङ्क गिन छः सत पूरे।
पूरे चारे पाद करे मत्त मयूरे ।

चण्डी (१७६२ रूप)

नगन दुगन पुन आदि वसै है।
अवर सगण जुग वीच धसे हैं॥
फिर इक गुरु पद चार अखण्डी ।
इस विधि कर धर छन्द सुचण्डी ॥

मञ्जु भाषणी (२७६६ रूप)

सगनं जगन्न सगना[1] दिनेस है ।
इक अङ्क अन्त गुरु जो निवेश[2] हैं ॥
पद चार डार अस चार राखणी।
कवि राज साज अस मञ्जु भाषणी॥

कन्द (रूप संख्या ४६८२)

करे चार यागन्न पादादि में सारि।
सिवारेक अंङ्को कली अन्त में डार॥

---

२ मगण ३ तगण ४ यगण ५ सगण ।
१ जगण २ प्रवेश ।

करो पाद चारे इसो धारना धार ।
कहे छन्द कन्द कविंद इसे चार ॥

मनोज (रूप ५८५२)

सगणे गण चार विचार उचारि ।
इक अन्त निसङ्क लघाङ्क विचार ॥
चरने करने कवि चार सुजान ।
इम छन्द मनोज कविन्द विखान ॥

केद (रूप ७०२२)

पदं जगना भर चार बनाकर ।
निसङ्क लघु इक अन्त लगाकर ॥
मनोज बने जब याम पढ़े नर ।
करो पद चार सु केद कहोवर ॥

चटका (रूप ७०३६)

सोम नगन फिर भान दिवाकर ।
अन्त अवर लघु अङ्क बनाकर ॥
चार चरन अर चाल चटापट ।
भाट रटन चटका सु फटा फट ॥

सञ्चय (रूप २६०६)

जगन्न ते भगन सगन्न लावना ।
पुना जगन्न भन गुरु बुलावना ॥

जु आदि अङ्क मुनि[1] पुनेक[2] पञ्चरे ।
पन्दसु चार गुन सु सञ्चय ररे ॥

अथ १४ वर्ण शक्करी छन्द के भेद १६३८४ ।

लख (२०१७ रूप)

भूमो[3] आदे फेर तगन फनि[4] वाचे है ।
वाचे पाछे वात[5] सु जुग गुरु राचे है ॥
राचे जाचे चार चरन वुद्धि वीन है ।
वीने चीने कीन सु कवि लख लीन है ॥

---

१ सात २ षट ३ मगण ४ मगण ५ सगण

सुधार छन्द (रूप ५४६२)

लघु गुरु सिवार डार वार वारही।
निसंक अंक लोक[1] पाद के मझार ही।
सिवार पाद चार को सुधार चीत में।
जु वाम हार मेर को निहार वीच में।

हारमेर छन्द (१०६२३ रूप)

पावकम्[2] दिनेश[3] को विचार वारि वारि।
एक एक पाद को मझार चार चारि।
चारि पाद अन्त अंक गोल डारि डारि।
हार मेर नाम हेर ले सुधार[4] धारी[5]।

अथ १५ वर्ण अतिशकरी छन्द के भेद ३२७३८

सारङ्गी छन्द [प्रथम रूप]

भूमि[6] राचे जाचे[7] पांचे वाचे भेदं गाने है।
गाने आदं आठो अङ्क. तापै सातो ठाने है।
ठाने जाने चारे पादं वादं भेदं हाने है।
हाने मन्दी चाली ढंगी सो सारंगी जाने है।

---

१ चोदह २ रगण ३ जगन्न ४ धारना ५ जाना
६ मगण ७ विचारे

चामर छंद (रूप संख्या १०६२३)

आग[1] भानु[2] वारि तीन दो सही।
गोल गोश अंक बोल तोल दस पंच ही।
और भेद हान जान पाइ चार ही भरे।
एस वेस नाम छन्द चामरम् बना धरे।

शीश कला छन्द (रूप संख्या १५३६०)

चतर नगन सुध जिस मध भरने।
पुन इक सबन सभन पद धरने।
चतर चरन कर इस विद्ध ऐसला[3]।
चतर हरत चित त्रिरत ससिकला।

मदन सर छंद (३२७६८ वां रूप

अवर सर्व कवि मनहर भरम।
असल सकल कुल इतनाहि सरम[4]॥
मदन[5] सरन पुनि[6] पद गित कृतहि
चतर चरन सर मदन सु वृतहि

---

१ जगण २ स्वरूप ३ रसोला ४ भेद ५ कामकेती
६ नगण

चंचला छन्द [रूप संख्या ४३६६१]

नराच[1] छन्द [रूप संख्या २१८४६]

पंतग[2] पावकं सिवार[3] डार वारि वार ही।
असंक अङ्क एक को जु अन्त गो उचार ही।
सु राच पाद चार को नराच चित वंचला[4]
जु नाम को उचार तो विचार नाम चंचला।

अथ १६ वर्ण अष्टी छन्द के भेद (६५५३६)

पावक[3] पंतग[2] जो न होत जात वारि वारि
वारि[5] ते विना सुअङ्क अन्त में लघु उचार।
चार पाद राच छन्द नाम चंचला सुवाच
वाचिये कदाच[6] वाम नाम होवता नराच।

नील छंद (रूप संख्या २८०८७]

जो भगणा गण पंच धरे पद आदि विखे।
तो एक अङ्क सुअन्त गुरु करि जाद लिखे
गेर धरे पद चारि पुना कछु हानि नहीं
नील कहे इस नाम कवि मतमान वहीं

---

१ इसका नाम वृध नराच भी है २ जगन्न ३ रगण ४ चित को मोहित करता है ५ देरी ६ कदाचित–जब

हरि हर छंद [रूप संख्या ६५५३६]

नगन मदन सर पद[1] पद धर धर

पुन इक इक लघु सिर पर कर कर

इस विधि चतर चरन शुभ भर भर

इस कविकिरत विरत शुभ हरि हर

अथ १७ वर्णा अतिअष्टी छंद के भेद १३१०७२

तथा कलेश हर छन्द (रूप संख्या ३८७५०

जगन्न सगनं जगन्न सगनं विशेषं[2] परे

परे यगन के लघु गुरु खरे नवेसं[3] करे ।

यती खटक की पुना खटक से कलेशंहरे

हरे धरण को चवो चरन सो कवेशं ररे ।

शिखरिणी छन्द (रूप संख्या ६१३७८)

लखो[4] आपं भूमि[5] नगन सगन साम[6] जिसमें

पुना अन्ते देखो लघु गुरु परा ठीक इसमें

पदं चारे देखो कवि मन निवेस करषणी[7]

सही भाषे इसं विरत सुनिये सो सिखरणी

---

१ पंच २ विशेप ३ प्रवेश ४ यगण ५ मगण
६ भगण ७ खिच करती है ।

रुआल छन्द (६३०१६)

आदि पावक[१] जान हो पुन फेर गेर समीर[२]।
भानु ज्ञानु[३] सु दो सही पुन[४] साभ[५] गोल अखीर
और भेदन भेद[६] के यह भेद[७] वेद सुचाल
विन्द चार सुपाद को इम छन्द नाम रुआल

अथ १८ वर्ण धृति छन्द के भेद २६२१४४

कीड़ा छन्द (रूप संख्या ३७४५०)

गने षष्ट पाँयन स्पष्ट सारे परे पाद डारे
इसे और कोई नहीं भेद हुई यही रुप सारे.
गिने पाद डारे सही चार सारे यही धार धारे
इसे छन्द कीड़ा विचारे उचारे कविराज भारे

सारदा छन्द (१८६०३७)

आकाश[८] सोम[९] सु पावक[१०] गुन बात फेर पंतग
पाछे दिवाकर[११] सोध के पद अन्त गेर निसंग
चारे पदे इम रीति के सभ और भेद निवार
जाने कवि बुद्धिमान सो यह छन्द सारद सार

---

१ रगण २ सगण ३ जगण ४ भगण ५ गरु लघु
६ दूर करके ७ जान ८ भगण ९ तगण
१० रगण ११ सगण

नदन छंद (१८७३१२)

नगन[1] पतंग चन्द करना एक इक विवेक
अवर तान चीने जगने पद में लगनेक
वसु[2] विसराम एक दस ते पुन सात सुवन्द
चतुर सु चान चार चरने मन नन्दन छंद

दंडक धर छंद (२४९६६२)

चक्र जु वरन वामे सु कान चारे जु चरन
ओरो न भ्रम आदे न चरम[3] जाने सु धरन[4]
तीनों यति कर षष्टे षट पर अंके कर कर
नाम इस कर तो दंडक धर जाने कविवर

चक्र छन्द (६२४१६)

नगन जु पाछे ज़ल[5] भर राखे अवर विचारे
विष[6] धर आगे घन रस लागे इस विधि सारे
षट जति लावे चरण बनावे गिन कर चारे
इस विधि चक्रं रच कर राखे धरन सुधारे

---

१ जगण   २ आठ पर   ३ अन्त में   ४ धारना
५ यगण   नगण

अथ १९ वर्ण अतिधृति छन्द के भेद ५२४२८८

सिंह का छन्द (३७२०७५)

सगणादि एक विवेक[१] के पुन और भी सुन लेहु

जुग[२] भानु[३] अनघसे जगी तब सोम[४] आग[५] लगेहु।

सगना भने लघु को गुने कविराज जो आवसान[६]

इस चार पाद विचारने कवि सिंहकावह जान।

॥ इति ॥

अथ २० वर्ण कृति छंद के भेद १०४८५७६

राम छन्द (७४४१६२]

इक नगन दो सगने करो जुग[२] भानु[३] जान सुजान

फिर भगन अङ्क निसंक से पुन गोल बोल निदान

भर चरन चार सिवार के दस एक ते बिस्राम

यह धरन वन्द कविन्द जो भन छन्द नाम सु राम

अथ २१ वर्ण प्रकृति छंद के भेद २०९७१५२

गन्नवा गएड छन्द (६९९०५१)

आदि में कृशानु[७] जान फेरि भान[८] आन ठान चीन चीन के

चीन चीन के सिवार एक पाद डार धार तीन तीन के

---

१ विचार के २ दो ३ जगण ४ भगण ५ रगण

६ अन्त में ७ रगण ८ जगण

तीन तीन वार वार चार पाद में उचार तोल[1] तोल के
तोल तोल गएड छन्द चार पाद शीश डार गोल गोल के

अथ २२ वर्ण अकृति छन्द के भेद ४१६४३०४

सुन्दर[2] छंद (१७६७५५६)

सात मयंक[3] धरे पद में गुरु एक सु पादन अन्त भरे
चार सुपाद विराज रहे सब और सु भेदन अन्द करे
सो विपरीत गिणे गण सात गुरु एक भेद न रंच परे
रीति कविन्दन की सुन सुंदर सुन्दर नाम सु छन्द धरे

मोद सवैया (१८६३०६४)

पंच भगन्न सिवारन से मगना गन पाछे फेर सिधारे
फेर करे सगनेक धरे पुन एक गुरु तां के सिर डारे
चार विचार भरे चरने कुछ और नहीं है भेद विचारे
सो कवि ने लख लीन भगी विधि नाम इसीको मोद उचारे

॥ इति ॥

---

१ जाच जाच के २ इस का नाम सदरा भी है ३ भगण

अथ २३ वर्णोविकृति छन्द के भेद ८३८८६०८

इन्दव रूप संख्या १७६७५५६)

पाद भगन्न सु सात भने पुन दो गुरु अन्तनिसन्क लगावे।
१
और सुभेद नहीं मन वेद सुखेद विना पद चार बनावे॥
चाल निहाल करे मन को जन जो सुन के चित में हुलसावे।
जो कवि राज बड़े सिर ताज सुइन्दव नाम सु छन्द अलावे॥

पलिका (रूप ३५६५११८)

लगे जगने पद सात जवी जु रहात सभी अव भेद भने।
२
भने जिनके अवसान सुजान लघु गुरु अंक निसंक बने॥
बने इमछन्द सही पलकान कहों हलका इस ढाल गुने।
गुने जो गुनी वर चाल सुनी चरने करने भर चार सुने॥

अथ २४ वर्ण शक्रति छन्द के भेद १६७७७२१६

झूलना (रूप २५६५६३२

इस में सगणे गिण सात करे जु रहे कछु भेद सुखुलना है।
इम धारण धार सिवारन से पुन अन्त यगन्न न भुलना है॥
पद चार उचार न रीति करे विपरीत धरे अनकूल ना हैं।
वहु झूलन है अनुकूल सभी नहि भुलना योगन झुलना है॥

---

१ जानो २ अन्त में।

मेघ (रूप संख्या ४७६३४६१)

आठ गंगन के पाठ को साध के याद के बीच सो ठीक ही डारिये।
डारिये साध के पाद सारे सही चार जादे नहीं चित में धारिये ॥
धारिये धारना चत्र सो चीत में मात्रा ठीक ना चीत में ठानिये।
ठानिये कामिनि मोहनी दो धुनी में मुनी जो गुना मेघ जो जानिये ॥

मुक्ता हर छन्द रूप ११६८३७२६

करे जगणे गिण आठ सही कुछ और नहीं इसमें सुविचार।
विचार करे पद चार भरे इम धारन धार उचार सुधार ॥
सुधा रस के सम स्वाद भरा मुक्ता हर नाम परा इम रीति।
सु रीत कविन्द बलन्द भने तिम को मन में गुन के धुन दीति ॥

करीट रूप १४३८०४७१

आठ भगंन गिने पद में वही नाम सु छन्द करीट कहावत
और सुभेद निछेदन कि कवि राजन के मन में अति भावत
चार सिवार भरे चरने कवि राजन के सिर ताज सुनावत
जो उल्टा पड ते सगना पर नाम सही दुमला बन आवत

दुमला ६१६०२३६

जित आठहि जान परे सगणा कछु और नहीं इसमें जु मिला
जु मिला कछु भेद निछेद करो पदचार भरो सगणा उजला
उजला तव छन्द आनन्द जने जिस नाम कविन्द भने दुमला
दुमला धर जो कर तोटक दो विपरीति सो ठीक करीट भला

अथ २५ वर्ण अतिकृति छन्द के भेद ३३५५४४५३२

पुनः १६७७६३६१ वाँ रुपान्त्र

क्रौंच पदा १६७७६३६१

सोम[1] सिवारे भूमि[2] विचारे पुन गुन सगन भगन फिर करना
फेर उचारे चार भुंजगे[3] अवर चरन सिर एक गुरु धरना
आदि विरामे डार दसों को चरम[4] सु जति पर पग्व[5] धर वरना
क्रौंच पदा है नाम इसी का कवि जन चतर चतर कह चरना

पुनः २४०६६४५२ वां रुपान्त्र

अरविन्द २४०६६४४२

गिण के सगणे गण आठ करे पद आदि सभी यह रीति सुहाय
पद अन्त निसंक लघांक धरे यति द्वादश अंक सुआदि वनाय
पद चार सिवार विचार भरे कछु और नहीं इस में लख पाय
अरविन्द सु छन्दहि नाम भने जो कविन्द वडे कवि कि मन भाय

विजै २६०५५८४२

करे अरविन्द पसन्द जवी पलटाये तवी सुविजै वनआवत
वने जगनाठ सभी इसके पर है कछु भेद यती विच आवत
जती कर दो दस अंकन ते लघु अन्त सु तेरस अंक गिनावत
विजै यह छन्द कविन्द भने अरविन्द वने जु विजै उलटावत

अथ २६ वर्ण उतकृति छन्द के भेद ६७१०८८६४

सवैया ५७५२१८८४

---

१ भगण २ मगण ३ नगण ४ अन्त में ५ पन्दराह ।

पद आदि कही मरजाद यही
सगणो गण आठ उचार धरे गुन
गुनवान सुजान विचार करे
लघु दो पद के अवसान परे पुन
पुन चार सही चरने करने
धरने गण मात्र भेद नहीं सुन
सुन रीति कवीशन के गन ते
गुन के मन में वृत ठीक धुनी धुन

अथ २७ वर्ण सुधा धार छन्द के भेद १३४२१७७२८

शेष मुनि ३८३४७६७०

जुग नगन विचार के पाद के आदिमै
बाद में जाननी और ही रीति है
पुन तगन पछान के सात को अनके पाद में
ठान के एक से नीति है
इस वर्ण विराम नो अष्ट ते चीन है
षष्ट मैं षष्ट ते चाल गावे गुनी
इम चरन विचार के चार डारे
कविराज सारे बडे शेष सो जो मुनि

चण्डक (९८३५३४७५)

पावकं[१] सोम[२] कर भानु[३] आकाश[४] ०र
वात[५] से आप[६] फनि[७] सोम[८] धर भानु
तीन विश्राम महि सात ही सात लंह
अन्त में अङ्क कर षष्ट पर ठान
और जो भेद तर वेद[९] के छेद[१०] नर
पाद तो चार भर सार कर जान
छन्द को नाम यह चण्डकं जान लहि
ऐसे ही[११] वेष माहि आदि अवसान[१२]

अथ २८ वर्ण महि धार छन्द के भेद यथा २६८४३५४५६

अशोक कन्ज मञ्ज़री २२९२८८६१९

पावकं[१] दिनेश[२] जान वारि बारि चार चार
फेर गेर भानु आन[३] करे नर
वाघनी थनं सु डार एक हीं कली संवार
अङ्क एक लो उचार सिरे पर
धारना विचार धार चार ही कली सुधार
और भेद को निवार धरे भर

---

१ रगण २ भगण ३ ज़गण ४ तगण ५ सगण ६ मगण ७ नगण ८ अन्त में ९ जान के १० दूर कर ११ स्वरूप १२ अन्त मे

१ रगण २ जगण ४ विधयाड़ी के थन नौ।

नाम एस छन्द को अशोक कुञ्ज मञ्जरी

४

कविन्द ब्रिन्द भाषते सु धरे भर

अथ २६ वर्ण मान धर छन्द के भेद यथा ५३६८७०६१२

सुभाग सार १७८६५६६७१

१ २

पावकं पतङ्ग होत जात नाथ वारि वार

और जो रहात भेद सोध सो करे

४

गोल को सिवार के सुढ़ार अङ्क मात वीस

५

फेर आन लोग जोग शीश ते परे

और भेद डार सार चार पाद को निहार

इम वेश की विचार चीत में धरे

शेष से वडे कविन्द एस छन्द को उचार

नाम है सु भाग सार प्रीति से ररे

दण्डक वसुधा धर ४६०१७५०६८

कवि नाथ सु नाथ सु गाथ विचार करे

६

सगणे गण नाथ करे मद में जब

जब ही इम रीति सिवार सिंवार धरे

कलयार लघु सिर दोय परे जब

---

४ जानकर

१ रगण २ जगण ३ नौ ४ गुरु लघु का ५ लघु गुरु

६ पंक्ति ।

जब चार सुपाद मर्याद सुनि कवि,

राजन के गण से लख के जु कही अब।

अब नाम पढ़ा इस दण्डक का,

वसुधा धर छन्द कविन्द भने सु सही अब

अथ ३० वर्ण मुद धर छन्द के भेद
(१०७३७४१८२४)

यथा जाति सर छन्द (रूप ३५७६१३६४१७)

गो[1] आदि मेरगन्न गेर फेर गेरिये जगन्न,

ऐस वेष[2] शोध नाथ[3] वार से सरे।

जो फेर लोग[4] को विचार अन्त पाद के उचार,

इतना सु चार जान पाद में धरे।

जो आठ आठ से सुकान तीसरे षटे प्रवीन,

फेर सात चीन जो यती[5] सु अन्त में।

सो जाति सार नाम छन्द चार पाद से आनन्द

जानत कविन्द जो सुनि गुनंत में।

अथ ३१ वर्ण विशाल छन्द (भेद २१४७४८३५४८)
मनहर छन्द (रूप ६५४५४११६५)

आदे गण गैन[6] पुन भानु[7] ग ध वाहि[8] भन

सूर[8] सोम[9] भानु[8] परे पावक[10] को जान है

---

१ गुरु २ स्वरूप ३ नौ ४ लघु गुरु ५ विश्राम

६ तगण ७ जगण ८ सगण ९ भगण १० रगण

पाछे सगणा धरण फेर सोम को करन,
फेर गेर गैन करे अन्ते गुरु ठान है।
तीनों यति में वर्ण आठ आठ ही भरन,
अन्त अङ्क सात करे पाद भरे आन है।
ऐसे मन को हरन छन्द चार ही चरन,
औरो नाहि भेद कुछ जान बुद्धिमान है।

अशोक कञ्च छंद (७१५८२७८८३)

पावकं[१] दिनेश[२] जान पावकं दिनेश जान,
इस वेश[३] आन ठान एक से दले दले[४]।
मेघनाथ[५] तात शीश ठान के कवीश वीच,
फेर एक गेर पाद के गुरु तले-तले।
चार एसे पाद साज और भेद को निवार,
रीति जो कवीश राज भापते भले भले।
नाम ऐस छन्द को अशोक कञ्च मञ्जरी,
जु सुन्दरी सुचाल जानु भापिये पले पले

अथ ३२ वर्ण सुखपाल छंद (भेद ४२९४९६७२९६)

आनङ्ग शेखर छंद (रूप १४३१६५५७६६)

---

१ रगण २ जगण ३ स्वरुप ४ पद पद ४ मेघनाथ का पिता रावण अर्थ दस सिर

लघु गुरु विचार के सिवार के सु एक एक,

अङ्क दा तीस को निसङ्क दे कली[1] कली।

सुजान जानिये सही नराजदों विराजमान,

आन भेद हान जान चार ही खिली कली।

जुनगईश रीति कीन सो कवीशचीत कीन,

धारना विचार के उचार छंद को करो।

आनङ्क शेखरं जु छन्द वाम को उचारिये,

तू होत है मतङ्ग केसरी विचार के धरो।

मतङ्ग केसरी छन्द (रूप २८६३३११५३१)

पावकं[2] दिनेश[3] वारि वारि डार पाञ्च पाञ्च,

फेर गोल बोल धार अङ्क अन्त में सुजान।

वा सु एक एक धार के लघु गुरु सिवार के,

बत्तीस अङ्क डारिये कली विचार मान।

इस रीति को विचार और भेद को निवार,

धारना निहार के सु छन्द को करो बिखान

नाम इस छन्द को मतङ्ग केसरी कहो

निसङ्ग चार पाद से जु लागता शुभायमान

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे चतुर्थ भागे वर्णिक छन्द स्वरूप निरूपणम् नाम प्रथम प्रकाशः

---

१ पंक्ति   २ रगण   ३ जगण

अथ भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे चतुर्थ भागे वर्ण वृत अर्ध साम निरुपणणं नाम द्वितीय प्रकाशः ।

यथा रमणी

सगणे जुग फेर भानु गो दो,
सभ पाछे रज को पुनः उचार,
रमणी रमणीक छन्द है जो,
चरने चौ करने सही उचार,

॥ इति वर्ण वृत अथ सम निरूपणं नाम द्वितीत प्रकाशः ॥

अथ वर्णिक विषम वृत स्वरुप निरुपणं नाम तृतीय प्रकाशः ॥

यथा चित्रा छन्द

सगणे तिन जोड़ धरे, पुन चार सङ्गन गुरु एक ठानो,
सगणा[1] भाग करे, तीन भङ्गन गुरु जुग[2] जानो ॥

यहां अर्ध सम वृत और विषम वृत केवल संस्कृत भाषा में शोभा देते हैं। आधुनिक भारतीय भाषाओं में नहीं। इसलिए हमने बहुत उदाहरण नहीं दिए। सर्वथा पिङ्गल शास्त्र के अनुसार भी नहीं किन्तु रशमों रिवाज के अनुसार है।

॥ इति तृतीय प्रकाशः ॥

॥अथ वर्णिक उपादि वृत प्रकार निरुपणम् नाम चतुर्थ प्रकाशः ॥

---

१ भगण ते गुरु   २ दो

इन छन्दों में प्रस्तार का नियम नहीं होगा किन्तु वर्ण और विश्राम का ही सङ्केत होगा और कहीं कहीं छन्द में लघु और दीर्घ का और गण का कोई नेम होगा तव तो स्पष्ट किया जायगा और इस प्रकार के छन्दों को कोई कोई कवि लोक मुक्ता मुक्त भी कहते है ।

यथा १३ वर्ण का--

कोरडा छंद

लघु दीर्घ ना मात्रा विचारिए,
तेरस वर्ण अन्त गुरु डारिए,
चार पाद जान और न विचार है,
कवि राज छन्द कोरड़ा उचार है।

अथ १५ वर्ण काः--

सार हार छन्द

अङ्क पञ्च दस अन्त पर भूमी चाही दा,
ऐ पर चाल दा तरीका वी मालूम चाही दा,
लघु दीर्घ दा होर दसतूर कोई ना,
पद चार सार हार में कसूर कोई ना ॥

२० वर्णां का विष्णु पद छन्द

पहले कर विश्राम जो दो दश फेर कर आठ कर डरे,
लघु दीर्घ का नेम न कोई अङ्क वीस है सारे।

माझ ललत पद के सम चाली चारे चरन बनावे,
और नहीं कछु भेद इस विच छन्द विष्णु पद गावे ॥

२१ मोर गती छन्द

लघु और दीर्घ का कोई न विचार ऐसे चाल करने,
आदि विश्राम कर चौदश वर्ण फेर सत धरने,
एक पंक्ति में एक वीस ही बनाए धरीये वर्ण है,
मोर गति छन्द इस आखदे कविन्द चार ही चरन है,

२३ सवैया

आदि विराम तो दो दश अङ्क सौ फेर निसङ्ग एकादश डारे,
डारे सभी गन मात्रा भेद को चातर जो कवि चाल सुधारे,
धारे सु एक ही पाद कवि जन अक्षर तेईस ही गिण सारे,
सारे ही साज कहे सु कवि राज पाद वतैये सवैये के चारे ॥

२४ पुनः सवैया

चरन में चौवीस वर्ण परे पर मध्य धरे विश्राम गुने ।
गुन चार विचार करे चरने इम धारन धार वनाए पुने ।
पुण्य नाहि करे गन मात्र की गिनती चित चातर सोध धुने ।
धुन ठीक सवैये की रीति बने जो कवीश भने वर्णिक सुने ।

२५ वर्ण का सवैया

शुभ सुरज वंश विषे उपजे हरी चन्द की राणी को नाम सितार ।
तारा शभो पुर राघव को दुख आप सहयो धन वार अपारा ।

पाराज्यों आग को देख के भगत दान प्रताप ते पाप पधारा ।
धारा वहे जल नैन ते हरी चन्द को धीरज देवती तारा ॥

२६ वर्णा का सवैया

करे इस रीति से चरन के वीच में वरण छवीस सिवार धरे हैं,
धरे जो इमधारन चरन जो चारन कारन डारन आन परे हैं ।
परे तो इस ते नाहि सुगम को रीति जो ठीककवीश विचार करे हैं,
करे ज्यों पराचीन कविन्द सभी तिम छन्द सवैया उचार धरे हैं ।

२७ वर्णा का सवैया यथा

चरन के वीच में चौदश वरन है,
अवर सु तेरस बरन सिधारे ।
धारे चरन के वीच में वरन जवी,
जो सताईस ही गिन सार विचारे ।
चारे सारे ही चरन के वरनन से,
इम वेद के औरन भेद निवारे ।
सारे करन ऐ धरन कविन्द कहे,
इस छन्द को नाम सवैया उचारे ॥

अथ २५ और २६ वर्ण की वैंत यथाः—

२६ वर्णा का बैंत

करो वरन चौदश विश्राम पहले,
पिछे सोध वारस फेर ठीक डारे ।

लघु दीर्घ दा नहीं है भरम कोई,
ऐसे पाद सारे करे सोध चारे।
ऐ पर तुरक भाषा इस बीच राखे,
पद अङ्क छवीस के साथ जानो।
विजे वृत वा वैंत वरनीक भाषे,
और नहीं कुछ भेद की गाथ जानो।

पुनः वैंत

अलफ़ आपने आपनूँ छोड़ना सी,
उलटा फसदा फसदा फस्स गया,
इस वहन दरिया से निकलन सी,
उलट धसदा धसदा धस्स गया,
फट दुई दे नूँ करना साफ़ सी तैं,
उलटा रसदा रसदा रस्स गया,
विषे रस दे विच सो मसत होए,
जिस नूँ आपने आपदा रस्स गया।

पुन २५ वर्णा का वैंत

वैरी मन नूँ जङ्ग में जितना सी,
उलटा नसदा नसदा नस्स गया,
धन आया सी वासते खटने दे,
उलटा पास दा वी सारा खस्स गया;

सतसङ्ग में छोड़ना वन्ध सी तैं,
उलटा कसदा कसदा कस्स गया,
आकर विच सराँए मुसाफ़रा तूँ,
उलटा वसदा वसदा वस्स गया ॥

अथ वर्ण २८ काः—

रङ्गी छन्द

अङ्क आदिनव करिये पुन सात भरीए,
पुन मुनि धरीये तीन भी करे,
ऐसे चार विश्राम में फेर अवसान में
लघु गुरु जान में अङ्क दो परे,
अङ्क आठ वीस करने पाद पाद धरने,
ऐसे चार चरने पर बन्द को,
और भेद को नवारीए रीति को विचारीए
चाल से उचारिये रङ्गी छन्द को ॥

अथ चाचरी छन्द का लक्षण

॥ दोहा ॥

मुनि मुनि अङ्कन के करे चार पाञ्च विश्राम ।
चतुर चतर कर चरन को छन्द चाचरी नाम ॥

तथा ही उदाहरणः—

चाचरी छंद

बुरे दी भलाई नूँ देख देख भुल न,
फेर पछतावें गा ऊपरों सफ़ाई है।
उतों खटे फल से सुन्दर सरुप हैं,
देखो अजमाये के अन्दर खटाई है।
उतों ऐसे मेल है भेद परतीत,
विचो फाट फ़ाट के फाड़ीयां जुदाई है।
भावे रोज ही पिया दूध शील सप नूँ,
पर औखी होणी है बुरे तों भलाई है॥

पुनः दुती चाचरी छन्द

भखे दी बुराई नूँ बुरे दी भलाई नूँ,
देख देख भुल के कई गए हलके,
अजब खियाल है;
भला उतों मन्दा है तो भी विचों चङ्गा है,
नेक जो अनेक है तो वी विचों एक है,
अगे ज्यों मसाल हैं,
जैसे खरबूजा है विचों नहीं दूजा है,
उत्तों चीरे धारीयां विचों न नियारीयां,
यही तो कमाल है,
नेंक तो बुराई जो होणी कठिनाई सो,
कवि दा है वैदावी बुरे पासों फैदा वी,
होवणा मुहाल है॥

झूलना छन्द

अथम विराम कर खोड़स वर्ण धर,
दूसरे वर्ण दश फेर लावे,
अन्त में दोइ गुरु चरन के धरन कर,
सर्व अठाईस वर्ण पावे,
चतर ही पदन को बदन[1] चदन[2] कर,
सदन[3] पाताल जिस रीति गावै ।
सब बरन ही मण्ड कर धरन अखंड,
इम झूला दंडकं चीत भावै ।

सालूर दण्डक छन्द

आदे वसु सुधकर पुन तिम वसु धर,
पुन तिन दश गिन भर चरने ।
तामे जो प्रथम पद जुग गुरु भर धर,
अवर सगर नर लघु धरने ।
अन्त एक गुरु धर चरन चरन सभ,
विस वसु वर्ण चरन भरने,
सालूर विरत कर चतर चरन भर,
अवर भ्रम नहि कछु करने ॥

---

१ कथन २ मुख करके ३ घर अर्थात पताल में जिस का निवास है ।

क्रियवान दण्ड छन्द

कीजिए विराम आदि खोड़स वरन पर,
वारस वर्ण कर दूसरे सुजान,
जान कछु आन भेद को विखान कवि लोक,
गोल बोल पादन के जोर अवसान।
सान बाद[1] पाद[2] दो में मिरजाद पञ्च दश,
एक मेर ते रसते फेर गोल आन।
आन भेद खंड छन्द क्रियवान दंडक के,
चरन कृत चार लागत शुभायमान।

सौर दण्डक छंद

खोड़स वरन आदि कीजिए विराम माहि।
पञ्च दश अन्त कहि दूसरे सिवारीये,
लघु ओर दीरघ को नेम न कवेश कहे।
एक तीस वरण चरन बीच डारिये,
इस विधि सिध जब होवत चरन चार।
धारना विचार चित छन्द को सुधारिए,
ऐसी बात चित बीच धार और भेद खंड।
छन्द सौर दंडक कवित को उचारिये॥

काम दण्डक छंद

आदि में वरन अष्ट पुना अष्ट ही स्पष्ट,
तीसरे सुदिष्ट आठ सात चौथे ज़ानिये।

---

१ मिलाकर २ फेर

जान इस भेद जोई कवि राज ठान सोई
लघु गुरु को निशङ्क अन्त माहि ठानिये
ठान इस मिरजाद अनु प्रास अन्त पाद
रीति जो कवीश अङ्क एक तीस मानिये
मान इस धारन को चार ही चरन भर
नाम काम दण्डक है छन्द सो विखानिये

मनोहर छन्द

खोडस सु जोड के लगाए लै वरण आदि
फेर गेर पञ्चदश अन्त में वरण है
और सम भेदन को भेद[१] के सु वेद[२] जहि
अङ्क एक तीसन की रीति जो चरण है
लघु और दीरघ विचार नहीं आदि अन्त
होइ के निशङ्क ऐमी धारनी धरन है
जो कबित वन्द धर चित को आनन्द कर
मन हर छन्द जिस चार ही चरण है

खण्डक

आदि षट जान फेर गेर दश परिमान[३]
तीजे षट ठान अन्त अङ्क नव देखिये
देखीए सु दूजे पाद के विराम चार मान
तिन ठाठ आठ आठ चौथे सात पेखिए

---

१ दूर करके २ जान करके ३ गिन कर

तीजे पाद भेद आदि से विराम अङ्क वेद
भेद न निशङ्क अङ्क एक तीस लेखिए
दूजे पाद के शुमार चौथे में विचार मण्ड़
सोध के आखण्ड़ छन्द खण्डक विशेखिये ४

घनासरी

खोडस ही अङ्क आदि पाद में निशङ्क गेर
फेर तो विचार आठ सात अन्त ड़ारिए
डारि एक तीस अङ्क बीच एक पंक्ति के
होए के निचीत अन्त में गुरु विचारिए
चार इस के चरण चतुर विचारे सारे
चीत में निहारे जब ठीक तो सुधारिए
धारि इस को कविन्द चित में आनन्द होत
छन्द जो घनासरी कवित सो उचारिए

मोमकर दन्डक

तीन जो विराम अष्ट अष्ट के स्पष्ट चीन
फेर अङ्क गेर पञ्च अङ्क लोग जानिए
दुतीये जो पंक्ति की सङ्गती बत्तीस अङ्क
तीसरी को ठाट सभ पहली सब मानिये
चौथी प्रथमें सी मन्ड छन्द सोम कर दन्ड
चाल सम अङ्क बिस्राम भेद गानिये

---

४ विश्राम ।

सही शेष रीति कीनी वही कवि चीत चीनी
धारना धरन पाद चाह चारि ठानिए

घनासरी

चार ही विराम मान एक पाद सुजान
ठाव अङ्क आठ आठ एक में विवेक धार
धार सारे पाद माहि लघु गुरु भेद नाहि
अन्त में निशङ्क एक अङ्क को लघु विचार
चारन चरन कर धारनी धरन वर
बतीस वर्ण कर चरण चरण डार
डार भेद खन्ड सारे दन्डक घनासरी में
माधरी सी बाँसरी सी धुनि छन्द को उचार

रङ्गका

आदि के विराम दश पाए दूजे में वसु मिलाये
फेर आठ को बनाए फेर पट ठान
वेद और सब भेद हरे सोध के सुधार धरे
अन्त गोल बोल करे कवि जो महान
एक पाद बीच दाए तीस अङ्क कीत ठीक
रीति सोई गहे है कवीश चार पदजान
चाल को विचार इस रीति से आनन्द होत
ऐसे ही कविन्द कहे छन्द रङ्गका बिखान

पुनः उदाहरण यथा

१

डेवडा कोरड़ा छन्द

पहले कोरड़े दो पंक्ति जो पूरी है तेरस वर्ण में
फेर डोर सात अङ्क को जरुरी है आखिर चरण में
एक पाद बीच बीस ही वर्ण है अन्त गुरु डार है
ऐसे सारे चार करने चरण है और न विचार है

॥ अथ डेवड़े छन्द कथनम् ॥

दोहा

डेवडे छन्द वर्णांक में चार चार पद जान
तेईस से ले तीस तक वर्ण रीति पद ठान

यथा उदाहरण

सबर शुकर दे पीन प्याले आशक तेरे दर दे
कदे न डरदे
डर दे सिर ते कदम टिका के शूली ते भी चड़दे
१
होड नजर दे
२
जर दे छोड़ ख्यामां नूं वोह महिमा तेरे घर दे

---

१ इसको कोई कृती छन्द भा कहते है।

१ डर से रङ्ग जरद नहीं हुए २ धन दे।

कदे न मरदे

मरदे जावदे ही विच दुनियां पीते जाम[३] सवर दे
नहीं उतरदे

ऐसे और भी २३ वर्ण से ले कर २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० वर्ण को भी जान लेना ।

अथ वर्णिक दण्डक छन्द उदाहरण

यथा मनोहर[१] भवानी छन्द

तु है कारन करन कवि आयो है शरण सभ दुखडे हरण
जन्म मरण कट दे जन्जाल नूं दोनों हथ जोड वन्दना अकाल नूं
कुल दुनियाँ दा वाली तेरा उपमा निराली खाली जावे न
सवाली पुरुष अकाली मूर्ती तुम्हारी है
शीश को निवाए वन्दना हमारी है
तेरी रचना अपार, कोई आवे नशुमार ते अनिक प्रकार
सारा संसार रचया है चोजीदा।
तैनूं है फिकर सारियां दा रोजीदा
सभ देवन के देव कोई जावदा न भेद सारे वेद ते कतेव
गावे अलख अभेव यश कोट है
तेरा नाम लईए लगदी न चोट है

इति भाषा पिङ्गल प्रस्तार छन्द दिवाकरे चतुर्थ भागे वर्णिक उप आदि वृत भेद निरुपण नाम चतुर्थ प्रकाश

---

१ इस छन्द में कवित मनोहर ते भवानी छन्द मिल के है और कहीं २ ८ ९ वर्ण के दो विश्राम से पुन दो १३ १३ के भी होते है ।

अब हम संस्कृताध्यायी छात्रों के हितार्थ संस्कृत ग्रन्थों के अनुसार मात्रिक तथा वार्णिक छन्दों के लक्षण तथा उदाहरण संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में लिखते हैं।

अथ मात्रिक छन्द

आर्या का सोदाहरण लक्षण :-

यस्याः प्रथमे पादे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या ।

अर्थ—जिस छन्द के प्रथम चरण में बारहा (१२) मात्रा एवं तृतीय चरण में भी इतनी ही हो और दूसरे में अठारह (१८) मात्रा हों तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह (१५) मात्रा हों। उसे आर्या छन्द कहते हैं।

मथुरा पान्थ मुरारेरुपगेयं द्वारि वल्लभी वचनं
पुनरपि यमुना कूले कालीयगरलानलज्वाला ।

कृष्ण विरह में गोपियों ने मथुरा जाने वाले यात्री को कहा

अर्थ—ऐ मथुरा जाने वाले! श्री कृष्ण के द्वार हम गोपियों का यह सन्देश सुना देना, यमुना के तट फिर भी काली नाग के जहर की ज्वालाएं धधक रही है।

अनुष्टुपछंद का सोदाहरण लक्षण

श्लोके षष्ठं गुरू ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ।

अर्थ-जिसके द्वितीय तथा चौथे चरण में छटा अक्षर गुरु (अर्थात् द्विमात्रिक) हो तथा पञ्चम अक्षर लघु (अर्थात एक मात्रिक) हो और प्रथम तृतीय चरण में सातवाँ अक्षर लघु हो उसे अनुष्टुप छन्द कहते हैं।

सभी चरणों में पञ्चम अक्षर लघु दूसरे तथा चौथे चरण में सातवां अक्षर लघु तथा छटा वर्ण गुरू हो अनुष्टुप जाति में उस छन्द को श्लोक व पद्य कहते हैं। अब हम पाठकों के मनोरञ्जनार्थं अन्यान्य उदाहरण भी इस प्रसंग में रखेंगे यथा

इन्दीवरदल श्यामं इन्दिरा नन्दकन्दनम्
वन्दारु जन मन्दारं वन्देऽहं यदु नन्दनम्

अर्थः--मैं नील कमल पत्र सदृश वर्ण वाले, लक्ष्मी के आनन्द के कारण भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने वाले श्री कृष्ण चन्द्र को नमस्कार करता हूँ।

(प्रमाणिका, जरौ लगौ)

अर्थः-जिस छन्द में जगण रगण एक लघु तथा अन्त में एक गुरू हो वह प्रमाणिका छन्द कहलाता है

उदाहरणः-द्वितुर्यषष्ठमष्टमं गुरू प्रयोजितं यदा।
तथा निवेदयन्ति तां बुधा नगस्वरूपिणीम् ॥

अर्थः-जिस छन्द में गुरू दूसरे चौथे छठे एवं आठवें स्थान पर आवें एवं अन्य सभी लघु हो (अर्थात् जगण, रगण, लघु गुरु) उसे नगस्वरूपिणी छन्द कहते हैं इसी का ही नाम प्रमाणिका है।

त्रिष्टुप जाति में इन्द्रवज्रा

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौजगौगः ।

अर्थः—जिसमें दो तगण एक जगण तथा दो गुरु हो उसे इन्द्रवज्रा छन्द कहते हैं इस छन्द के अन्त में विराम होता है जिस छन्द के लक्षण में विराम का विशेष निर्देश न हो उस के पादन्त में यति का नियम है। ऐसा छन्द शास्त्र के वेता कहते हैं ।

उदाहरण ये दुष्ट दैत्या इहमर्त्य लोके,
द्वेषं विदुर्गो द्विज देव संघे।
तानिन्द्रवज्रादपि दारुणाङ्गान्
व्याजीवयत्यः सततं नमस्ते ।।

अर्थः—जिन दुष्ट दैत्यों ने इस मत्यलोक में गौब्राह्मण तथा देवताओं के समूह में द्वेष किया। इन्द्र के वज्र से भी कठोर अंग वाले उन दैत्यों को जिस ने मारा उस परमेश्वर को मेरी सदा नमस्कार है ।

उदाहरणः— उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ वा उपेन्द्र वज्रा
प्रथमे लघौसा ।

अर्थः—जिस में जगण, तगण तथा दो गुरू हों उसे उपेन्द्र वज्रा कहते हैं इन्द्र वज्रा का आदि अक्षर यदि लघु हो तो उपेन्द्र वज्रा छन्द वन जाता है ।

उदाहरण—त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव

अर्थः—सर्वं खल्विदंब्रह्म (दृष्टिगोचर यह सब ब्रह्म है। इस वेद वाक्य में दृढ़ विश्वास करने वाला प्रभु भक्त चराचर प्रपञ्च के प्रत्येक पदार्थ में परमात्मा दृष्टि रखता हुआ कहता है। हे परमेश्वर। तुम ही माता और पिता हो। तुम ही बन्धु भाई तथा मित्र भी हो। तुम ही विद्या और धन भी तुम ही हो अधिक क्या कहूँ है देवाधिदेव आप ही मेरे सभी कुछ हो

उदाहरण— अनन्तरोदीरित लक्ष्म भाजीजौ पादौ
यदीयावुपजातयस्ताः ।
इत्थं किल न्यास्वपि मिश्रितासु
स्मरंति जातिष्विदमेव नाम

(पादान्तस्थं विकल्पेन इस नियम से पादान्त लघु भी गुरू माना गया है।

अर्थः—जिसमें व्यवधान रहित उपरोक्त इन्द्र वज्रा तथा उपेन्द्र वज्रा के लक्षण घट जावें वह उपजाति छन्द होता है इसी तरह यदि अन्य दो छन्दों के लक्षण भी कहीं मिश्रित हो जावें तो उसे भी उपजाति कहते हैं (जैसेः—

१ करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्
वटस्य पत्रस्य पुटेशयान बालं मुकुन्दुं मनसा स्मरामि

भगवान की प्रलय कालीन अवस्था के दृश्य का वर्णन करते हुए भक्त कहता है।

अर्थः— हाथ कमल से पादकमल को (अंगुष्ट को) मुख कमल में प्रविष्ट करते हुए तथा वट पत्र के पुट में शयन करते

हुए भगवान के बाल स्वरुप को मैं मन से याद करता हूँ।

इस पद्य में उपेन्द्र वज्रा तथा इन्द्र वज्रा के सम्मिश्रण से उपजाति है।

२ त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापाः यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्र लोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देव भोगान्

गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सम्बोधित करते हुए कहा हे अर्जुन ऋग्यजु एवं साम वेद के पाठी, सोमरस का पान करने वाले, पवित्रात्मा कर्मीजन अश्वमेध आदि यज्ञों को कर के जाते हैं। वे पवित्र इन्द्र लोक को प्राप्त कर स्वर्ग में दिव्य भोगों को भोगते हैं।

इस पद्य में शालनी तथा इन्द्र वज्रा का सम्मिश्रण होने से उपजाति है।

६ शालिनी

शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोऽब्धि लोकैः

अर्थः—जिस पद्य में मगण दो तगण तथा दो गुरु हों एवं चार तथा ग्यारह अक्षरों पर विराम हो वह शालिनी होता है।

उदाः—काकेशौचं द्यूतकारे च सत्यं
सर्पेक्षान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः
क्लीबे धैर्यं, मद्यपे तत्व चिन्ता
राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा

अर्थः—कवे में पवित्रता, जुआरी में सत्यभाषण, सांप मे क्षमा, स्त्रीमें कामाभाव, नपुंसक में धैर्य, शराबी में ब्रह्म चिन्तन एवं राजा की मित्रता न किसी ने देखी है न सुनी है।

१० जगति जाति वंशस्थ

ल० जतौ तुवंशस्थमुदीरितं जरौ

अर्थ—वंशस्थ वह छन्द होता है जिसमें जगण तगण जगण एवं रगण हो।

उदाः—हरत्यघं संप्रति हेतुरेष्यतःशुभस्यपूर्वाचरितैः कृतं शुभैः शरीर भाजां भवदीय दर्शनं व्यनक्ति काल त्रितयेऽपि योग्यताभू

अर्थः—स्वर्ग लोग से देवताओं का सन्देश लेकर आनेवाले नारद की स्तुति में श्रीकृष्ण कहते है। हे नारदजी आप का दर्शन शरीरधारियों के लिए तीनों कालों को योग्यता (लाभ) का सूचक है क्यों के वर्तमान में दर्शकों के पाप निचय का क्षमा करता है। पूर्व जन्म कृतसुकर्मों को ही सुपरिणाम स्वरुप प्राप्त हुआ है एवं भविष्य में होनेवाले कल्याण का हेतु है।

११ तोटक

इह तोटकमंबुधिभैः प्रथितम

अर्थं—चार सगणों वाला छन्द तोटक कहा गया है।

उदा०—यमुना तटमच्युत केलिकला लसदङ्घ्रि सरोरुह

सज्जरुचम् मुदितोऽटकलेरपनेतुमघं यदिचेच्छसिजन्म निजं सफलम्

अर्थ—अपने मन को लक्ष्य बनाकर भक्त कहता है। हे मन, यदि तू अपने जन्म को सफल करना चाहता है तो कलि-युग के पापों से सुरक्षित होने के लिए श्रीकृष्ण की रासलीला से सुशोभित एवं चरण कमलों के स्पर्श से पुनीत यमुना तट पर प्रसन्न होकर फिर—

१२ द्रुत विलम्बित

द्रुत विलम्बितमाह नभौ भरौ

अर्थ—नगण, दो भगण एवं रगण वाले छन्द को द्रुत विलम्बित कहा गया है।

उदा०—कनक भूषण संग्रहणोचितो, यदि मणिस्त्रपुणि परिबध्यते न च विरौति न चापिस शोभते, भवति योजयितुर्वचनीयता।

अर्थ—यदि सोने में मढ़ाने योग्य मणि पीतल में मढ़ा दी जावे तो वह रोती नहीं (अनुपयुक्त स्थान होने से)। न ही शोभा देती है। हां लगानेवाले की निन्दा अवश्य होती है।

१३ भुजंग प्रयात

भुजंगप्रयातं भवेद्यै श्चतुर्भिः

अर्थ-जिस वृत्त में चार यगण हो वह भुजङ्ग प्रयात होता है।

उदा०—पुरः साधुवद्भाति मिथ्या विनीतः
परोक्षे करोत्यर्थनाशं गतः सः
भुजङ्ग प्रयातोपमं यस्य चित्तं
त्यजेत्तादृशं दुर्विनीतं कुमित्रम्

अर्थ—दिखावे की नम्रता वाला मित्र सामने तो सज्जन की तरह प्रतीत होता है किंतु आंख ओझल होने पर सर्वस्व नष्ट करने को उद्यत रहता है। इस प्रकार के सर्प की गति सम कुटिल मित्र को छोड़ देना ही श्रेयस्कर है।

१४ स्रग्विणी

रैश्चतुर्भिर्युता स्रग्विणी संमता

अर्थ—जिसमें चार रगण हों वह स्रग्विनी छन्द होता है।

उदा०—अच्युतं केशवं राम नारायणं कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरे
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे

अर्थ—मैं अच्युत, केशव, राम नारायण, कृष्ण, दामोदर, वासुदेव हरि, श्रीधर, माधव, गोपी प्रिय, सीतापति श्रीरामचन्द्र का स्मरण करता हूँ।

१५ प्रमिताक्षरा

प्रमिताक्षरा सज ससैरुदिता

जिस छन्द में सगण, जगण और दो सगण और हों उसे प्रमिताक्षरा जानो।

उदा०—यदुपान्त के पुसरलः मरलः यदनूच्चलन्ति हरिणाः हरिणा
तदिदं विभाति कमलं कमलं, मुदमेत्य यत्र परमाप रमा

अर्थ—जिसके किनारे के समीप ही मीधे २ देवदारु के पेड़ खड़े हैं जिसके लिए मृग वायु वेग से दौड़ते हैं जिस स्थान पर लक्ष्मी कमल को प्राप्त कर अत्यधिक प्रसन्न हुई वह जल बहुत शोभा दे रहा है।

१६ वैश्व देवी

पञ्चाश्वैश्छिन्नाः वैश्वदेवी ममोयौ

जिसमें दो मगण तथा दो यगण हों वह वैश्वथेवी छन्द होता है। इसमें पांचवे तथा सातवें अक्षर पर विराम होता है।

उदा०-कार्यं नैवार्थैर्नाऽपि भोगर्न वस्त्रैः
नाऽहं काशायं वृत्त हेतोः प्रपन्नः
धीरा कन्येयं दृष्टधर्मप्रचारा
शक्ता चारित्रंरक्षितुं मे भगिन्याः

अर्थ—जब पद्मावती ने तपोवन में आकर ऋषियों से इच्छित वस्तु मागने को कहा तब तपस्वी वेष में यौगन्धरायण बोला मुझे धन वस्त्रादि एवं भोगों से कोई प्रयोजन नहीं क्योंकि मैंने यह भगवे वस्त्र आजीविका के लिए धारण नहीं किए है। हे पद्मावती। आप धीर तथा धर्म प्रचारिका हो ऐसा मैंने जान लिया तुम मेरी बहन के चरित्र की रक्षा करने में समर्थ हो इस लिए मैं इसे तुम्हारे पास छोड़ता हूँ।

१४ अक्षरों की शकरी जाति

१७ वसन्त तिलका

ल०—उक्ता वसन्त तिलका तभजा जगौ गः ।

—सिंहो द्धतेयमुदिता मुनि काश्यपेन

उद्धर्षणीति गदिता मुनि शैतवेन

श्री पिङ्गलेन कथिता मधु माधवीति

अर्थ—जिस पद्य में क्रमशः तगण, भगण दो जगण तथा दो गुरु हैं वह वसन्त तिलका छन्द होता है। इसी का नाम काश्यपने रथोद्धता, शैतव ने उद्धर्षणी तथा पिङ्गल ने मधुमाधवी कहा है।

उदा—यच्चिन्तितं तदिह दूरतरं प्रयाति

यच्चेतसा ऽपि न कृतं तदिहाभ्युपैति

प्रातर्भवामि भुवनाधिप चक्रवर्ती

सोऽहं व्रजामि विपिने जटिलस्तपस्वी

अर्थ—वाल्मीकी रामायण में वन गमन के समय भगवान राम कहते है जो वात दिल में सोची थी वह तो दूर हो रही है तथा जिस वात का कभी विचार भी नहीं हुआ था वह हो रही है मैं प्रातः सम्राट वन जाऊंगा ऐसा सोचने वाला मैं आज तपस्वी वन कर जंगल में जा रहा हूँ।

मालिनी

ननमयययुतेयं मालिनी भोगि लोकैः

अर्थ–जिस पद्य में दो नगण एक मगण दो यगण हों तथा ८ १५ पर विराम हो। उसे मालिनी वृत कहते हैं।

उदा–सहि गगन विहारी कल्मष ध्वंस कारी
दश शत कर धारी ज्तोतिषाँ मध्य चारी
विधुरपि विधियोगात् ग्रस्यते राहुणा सौ
लिखितमपि ललाटे प्रोज्भितं कः समर्थः

अर्थ–आकाश में फिरने वाला, अंधेरे का नाशक, सहस्रों किरणों वाला, नक्षत्र समूह के मध्य में फिरने वाला चन्द्रमा भी दुर्भाग्य से राहु द्वारा पकड़ा जाता है इस से सिद्ध होता है कि भाग्य में लिखे को कोई मिटा नहीं सकता।

१६ अक्षर की अष्टि जाति

१६ पंच चामर

ल०–जरौ जरौ जगा विंद वदन्ति पंच चामरम्

अर्थ–जिस पद्य में क्रमशः जगण रगण जगण रगण जगण एवं गुरु हों उसका नाम पंच चामर वृत्त है।

उदा–जटा भुजंग पिङ्गल स्फुरत्फणा मणि प्रभा
कदंब कुंकुम द्रव प्रलिप्त दिग्वधुमुखे
मदान्ध सिन्धुरासुरत्त्वगुत्तरीय मेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि

अर्थ—जटा स्थित सर्पों की पीत वर्ण मणियों की पीत वर्ण कान्ति रूपी कुंकुम से गीले चूर्ण से दिशा रुपी स्त्रियों के मुख को लिप्त करने वाले, मदान्ध गजासुर के चर्म को ओढने से ऊंचे नीचे प्रतीत होने वाले भूतनाथ श्री शंकर के विषय में मेरा मन विलक्षण मोद को प्राप्त करे।

१७ अक्षरों की अत्यष्टि जाति

२० शिखरणी

रसै रुद्रैश्छिन्ना यमन सभलागः शिखरिणी

अर्थ--जिस पद्य में क्रमशः यगण मगण नगण सगण भगण लघु एवं गुरु हो तथा विराम ६ एवं ११ अक्षरों पर हो वह शिखरणी छन्द हो गा।

उदा--यदासीदज्ञानं स्मरतिमिरसंस्कार जनितं
तदा दृष्टम् नारी मयमिदमशेषं जगदपि
इदानीत्वस्माकं पटुतर विवेकाञ्जनजुषाँ
समीभूता दृष्टि स्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते

जब हमें कामरुपी अन्धकार से जनित संस्कारों वाला अज्ञान था उस समय सम्पूर्ण जगत स्त्रीमय प्रतीत होता था अब ज्ञान रुपी अञ्जन से पवित्र एवं समभाव को प्राप्त हमारी दृष्टि तीनों लोकों को ब्रह्म मान रही है।

२१ हरणी

रस युग हयैर्न्सौ म्रौ स्लौ गो यदा हरिणी तदा

अर्थ—जिस पद्य में नगण सगण भगण रगण सगण तथा लघु गुरु हों एवं यति चौथे वा सातवें अक्षर पर हो अर्थात ६ १० १७ पर वह हरिणी वृत्त होता हैं।

उदा—अथ स विषय व्यावृतात्मा यथा विधि सूनवे
नृपति ककुदं दत्वा यूने सितातप वारणम्
मुनि वन तरुछायाँ देव्या सह शिश्रिये
गलित वयसामिक्ष्वाकूणां मिदं हि कुलव्रतम्

अर्थ—राजा दलीप मन तथा इन्द्रियों को विषयों स रोककर स्वेच्छा कुल क्रमानुसार राज्यभार अपने युवा पुत्र रघु को सौंपकर महारानी को साथ ले तपोवन के वृक्षों में निवास करने लगे क्योंकि इक्ष्वाकु वंशोत्पन्न राजाओं की वृद्ध होने पर यही प्रथा शुरु से रही हैं।

२२ मन्दा क्रान्ता

मंदाक्रान्ता जलधिपडगेम्भौ नतौ ताद्गुरु चेत्

अर्थ—यदि किसी पद्य में क्रमशः मगण भगण नगण दो तगण एवं दो गुरु हों और यति चौथे दसवें और स र वें अक्षर पर हो उसे मन्दाक्राँता समझो।

उदा—लज्जा स्नेहः स्वर मधुरता बुद्धयो यौवन श्रीः
कान्ता सङ्गः स्वजन ममता दुःख हानिविलासः
धर्मः शास्त्रं सुर गुरु मतिः शौचमाचार चिन्ता
पूर्णे सर्वे जठर पिठारे प्राणिनाँ संभवन्ति

अर्थ—लज्जा प्रेम मीठा स्वर बुद्धि यौवन शोभा वनिता विलास सम्बन्धियों में ममता दुःख का नाश विलास धर्म शास्त्र विचार देव तथा गुरु पूजा पवित्रता और आचार का ध्यान तभी संभव है जब प्राणियों का पेट भरा हो।

उन्नीसवर्ण अति धृति जाति

२३ शार्दूल विक्रीडितम्

सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूल विक्रीड़ितम्.

अर्थ—जिस पद्य में द्वादश तथा उन्नीस अक्षर पर विराम हो और क्रमशः मगण सगण जगण सगण दो तगण एवं गुरु हो वह शार्दूल विक्रीड़ित छन्द होता है।

उदा—दुर्मन्त्रान्नृपतिर्विनश्यति यतिः संगात्सुतो लालना
द्विप्रोऽनध्यानात्कुलं कुतनयाच्छीलं खलोपासनात
मैत्री चाप्रणयात्समृद्धिरनयात् स्नेहः प्रवासाश्रयात्
स्त्री गर्वादनपेक्षणादपि कृषिस्त्यागात्प्रमादाद्धनम्

अर्थ—बुरी सम्मति से राजा, संगति से सन्यासी लाड से पुत्र न पढ़ने से ब्रह्मण कुपुत्र से वंश दुष्ट संसर्ग से स्वभाव प्रेमाभाव से मित्रता अनीति से उन्नति परदेश निवास से स्नेह अभिमान से स्त्री देख के बिना कृषि और त्याग तथा असावधानी से धन का नाश हो जाता है।

इक्कीस वर्ण की जाति प्रकृतिः

स्रग्धरा

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनि यतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्

अर्थ–जिस में क्रमशः सात सात अक्षरों पर विराम हो और क्रमशः मगण रगण भगण नगण तथा तीन मगण के वह स्रग्धरा छन्द होता है

उदा–प्राणघातान्निवृत्तिः परधन हरणे संयमः सत्यवाक्यं
काले शक्त्या प्रदानं युवति कथा मूक भावः परेषाम्
तृष्णा स्रोतो विभागो गुरुषु च विनयः सर्व भूतानुकम्पा
सामान्यः सर्व शास्त्रेष्वनुपहत विधिःश्रेयसामेष पन्थाः

अर्थ–दूसरो की हत्या न करना दूसरे के धन चुराने में संयम सत्य भाषण समय पर शक्ति का प्रयोग पर स्त्री के कथा प्रसङ्ग से मौन तृष्णा के प्रवाह का उच्छेद गुरु जनों से नम्रता प्राणी मात्र पर दया सभीशास्त्रो में उपरोक्त वातों पर एकमत से नित्य विधि है और यही कल्याण का रास्ता है ।

अव वाइस अक्षर आकृति के भेद मदिरा वृत्त का सोदाहरण लक्षण तथाहि

ल०–सप्तभकार युतैकगुरुर्गदितेयमुदार तरा मदिरा

अर्थ–जिस में सात भगण और एक अन्त में गुरु हो उसे अति सुन्दर मदिरा छन्द कहा हैं ।

उदा–माधव मासी विकसित केसर पुष्प लसन्मदिरा मुदितै
भृंग कुलैरूपगीत वने वन मालिन मालिकला निलयं
कुञ्ज गृहोदर पल्लवकल्पित तल्पमनल्प मनोजरसं
तमभज माधविका मृदुनर्तन यामुन वात कृतोपमगम्

अर्थ—हे सखि चैत्र मास में फूले केसर वाले फूलों के रस रूपी मदिरा से प्रसन्न भ्रमर समूह के गीत से गुञ्जित वन के कुञ्जगृहों के मध्य नए पत्रों की शय्या पर शयन करने वाले अत्यधिक कामरस का अनुभव करने वाले माधवीलता के स्पर्श से मृदु हुई यमुना की हवाओं से शीतल शरीर वाले वनमाली (श्री कृष्ण) का भजन कर।

इति श्री कविवर मिहर सिंहेन विरचिते भाषा पिंगल प्रस्तार छन्द दिवाकरे द्वितीय भागे संस्कृत मिश्रित वृत्त वर्णनं नाम प्रकाशः

अथ अलङ्कार प्रकरण

संगीत प्रभावोत्पादक हैं किन्तु शब्द चयन एवं भावपूर्णता भी कम प्रभाव वाले नहीं। सब का सम्मिश्रण लेखक की योग्यता का सूचक होने के साथ साथ पाठक एवं श्रोता के मर्मस्थल पर पहुंच कर स्थायी प्रभाव छोड़ता है। इसी तरह छन्दो बद्ध विचारों की महत्ता अलङ्कारों के सहयोग से और भी बढ़ जाती है। इसीलिए छन्दों के साथ साथ अलङ्कारों का वर्णन भी आवश्यक प्रतीत होता है। अतः अब हम कुछ विशेष अलङ्कारों को पाठकों के हितार्थ संस्कृत तथा युगभाषा में वर्णन करेंगे।

अलङ्कार का लक्षण

शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः
रसादीनुपकुर्वन्तो ऽलङ्कारास्तेऽङ्गदादिवत्।

अर्थ–जो शब्दार्थ रुप शरीर की शोभा बढ़ाने वाले, एवं रस का उपकार करने वाले धर्म हैं इस प्रकार गहनों के सदृश धर्मों को अलङ्कार कहते हैं।

अलङ्कारों के दो भेद है। शब्दालङ्कार, अर्थालङ्कार।

शब्दालङ्कार

वक्रोक्ति

सं–अन्यस्यान्यार्थकं वाक्यमन्यथा योजयेद्यदि।
श्लेषेण काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततो द्विधा॥

हिं०–होयश्लेप सों काकु सों कल्पित औरे अर्थ
ताहि कहत वक्रोक्ति हैं सिगरे कवि समर्थ

उदा०–नाथ मयूरोनृत्यति, तुरग ननवक्षसः कुतोनृत्यम्
ननु कथयामि कलापिनमिह सुकलापि प्रिये! कोऽस्ति

अर्थ–नायिका– हे नाथ मोर नाच रहा है। नायक ने (मयूर का अर्थ घोड़े के मुख वाले किन्नर लगाकर) कहा, घोड़े के मुखवाले किन्नर की छाती कैसे नाच सकती है। पुनः नायिका ने कहा मैं कलापी को कहती हूं। फिर उसने कलापि का (मधुर बोलने वाला) अर्थ लगा कर कहा, यहां मीठा बोलने वाला कौन है।

भर्तुः पार्वति! नाम कीर्तय न चेत्त्वां ताड़यिष्याम्यहं
क्रीड़ाब्जेन, शिवेति, सत्यम! किं ते शृगालः पतिः

नो स्थाणुः किमकीलको, नहि पशुस्वामी, नु गोप्ता गवाम्
दोलाखेलन कर्मणीति विजया गौर्योगिरः पान्तुवः

(यह गौरी तथा उसकी सखी का संवाद है)

विजया—हे पार्वती अपने पति का नाम बताओ अन्यथा मैं तुम्हें खेलने वाले कमल से मारूंगी। गौरी—मेरे पति का नाम शिव है। विजया--क्या तेरा पति शृगाल है। पार्वती--नही मेरा पति स्थाणु (महादेव) है। विजया--क्या वह स्थाणु (ठूंठ) है। गौरी नहीं मेरा स्वामी पशुपति (महादेव) है। विजया--क्या तुम्हारा पति ग्वाला है?

इस प्रकार हिंडोले पर हुआ विजया और पार्वती का सम्वाद तुम्हारी रक्षा करे।

उदा०--को तुम? माधव हौं प्रिये? न हि वसन्त सो काज
भामिनी! हरि हौं, तो बसौ सुरपुरमधि सुरराज

यह राधिका और कृष्ण का वार्तालाप है।

राधा-- तुम कौन हो। कृष्णा--मैं माधव हूं। (राधा माधव का अर्थ वसन्त लगा कर) यहां वसन्त की आवश्यकता नहीं है। कृष्ण--मैं हरि हूं। राधा--(हरि का अर्थ इन्द्र लगा कर) तो आप स्वर्ग में पधारिए।

अनुप्रास

सं०—अनुप्रासः शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्ययत्

हिं०—वर्ण पदन को वजन सम धरेवारहि वार
अनुप्रास ताको कहे सो पुन पंच प्रकार
छेकावृत्ति श्रुति लाट पुन अन्त पंचमो जान
अनुप्रास की योजना पंचन के अवमान

१ छेकोव्यञ्जन संङ्घस्य सकृत साम्यमनेकधा
२ अनेकस्यैकधा साम्यंमसकृद्साम्यमनेकधा
एकस्य सकृदप्येप, वृत्यनुप्रास उच्यते
३ उच्चार्यत्वाद्यदेकत्र स्थाने तालुरादिके
सादृश्यं व्यञ्जनस्यैव श्रुत्यनुप्रास उच्यते
४ व्यञ्जनं चेद्यथावस्थं सहाद्येन स्वरेणतु
आवर्त्यतेऽन्त्ययोज्यत्वादन्त्यानुप्राम एव तत्
५ शब्दार्थयोः पौनरुक्त्यं भेदे तात्पर्य मात्रतः
लाटानुप्रास इत्युक्तो

अच्चर जो आवे आदि मध्य में अनेक वार
अनुप्रास आख ताको छेका नाम ठाने हैं
पदान को समान जान अन्त अवसान अङ्क
जान सो सुजान वृत्यनुप्रास माने हैं
स्वेस्थानी साथ पावे अङ्क को पदन बीच
तिसे श्रुत्यनुप्रास वुद्धजन माने हैं
सोई पद अन्वय करन वदलाए भाव
लाटानुप्रास एम विधी कर जाने हैं
छन्दपाद के अन्त में परा वरण जो एक
सोई अन्त्यानुप्रास है यह कवि कीन्ह विवेक।

क्रमशः उदाहरणः—

अलं कलङ्क शृङ्गार! कर प्रसर हेलया
चन्द्र! चण्डीश निर्माल्यमासि न स्पर्शमर्हसि

अर्थ–गुरु पत्नी गमन से कलङ्कित चन्द्र! तूं अपनी किरणें मत फैला। क्योंकि तु शिव का उपभुक्त शेष है इसलिए अस्पृश्य है।

अपसारय घन सारं कुरुहारं दूर एव किं कमलैः
अललमालि मृणालैरिति वदति दिवा निशं बाला

कपूर हटा दो, माला उतार दो, कमलों से क्या लाभ, बिसों से कोई साध्य सिद्ध नहीं होता, ऐ सखी बस करो। इस प्रकार विरहातुरा दिन रात कहती रहती है।

दृशा दग्धं मनसिजं जीवयन्ति दृशैव यः
विरुपाक्षस्य जयनीस्ताः स्तुमो वामलोचनः

नेत्र से जलाए हुए कामदेव को पुनः कृपादृष्टि से जिन्होंने जिला दिया उस भगवान शिव के बाएँ नेत्र की हम स्तुति करते है।

यस्यन सविधे दयिता दव दहनतुहिन दीधितिस्तस्य
यस्य च सविधे दयिता दव दहन तुहिन दीधितिस्तस्य

कामी पुरुष की उक्ति

कान्ता वियोग में चन्द्र भी अग्नि तुल्य है और संयोग में अग्नि भी चन्द्र तुल्य।

केशः काशस्तवक विलासः कायः प्रकटित करभ विलासः
चक्षुर्दग्ध वराटक कल्पं त्यजति न चेतः काममनल्पम्

भाव—वृद्धावस्था में जब केश फूलों की तरह सुफेद हो गए हैं शरीर ढ़ीला होगया है और आंखें भी बेकार होगई हैं तब भी कामवासना से मुक्ति नहीं मिलती है।

हिन्दी में अन्त्यानुप्रास को छोड़ कर शेष उदाहरण तो लक्षण पद्य ही है। अब हिन्दी में स्वलिखित अन्त्यनुप्रास के भेद कहते है।

दोहा

तांको कहें तुकान्त भी सो है षट परकार
नाम सुनो सर अर्थ के, जो कवि कीन्ह विचार

(१) सर्वन्त्यानुप्रास, (२) समान्त विषमान्त्यानुप्रास, (३) समान्त्यानुप्रास, (४) विषमान्त्यानुप्रास, (५) सम विषमान्त्यानुप्रास, (६) भिन्न तुकान्त अनुप्रास।

क्रमशः उदाहरण व लक्षण उन्ही पद्यों में।

सर्वान्त्यानुप्रास

अन्त पाद पद वजन समान, अन्त अङ्क सब एक बखान
सर्वान्त्यानुप्रास पधान, उदाहरण भी यह विधान।

समान्त विषमान्त्यानुप्रास

पदन वजन है एक अन्त पाद के जो धरन
अङ्क लखो भी एक अन्त चरण को जो परन

ताक ताक पद जोग जुस्त मिले जुस्तन सों
अनुप्रास कवि लोग सान्त्य विषमान्त्य सों

समान्त्यानुप्रास (निसानी छन्द)

अन्त पदन का वजन सम जो जुस्तहिं होई
वरण जुस्त पद अन्त में इक लखिए सोई
ताय अङ्क पद वजन जो विषमान्त वखानो
सो समान्त्यानुप्रास है अदोष लखानो

विषमान्त्यनुप्रास

ताक पदन का वजन समान, अङ्क अन्त भी एक वखान
जुस्त वजन नहीं मिल है अङ्क, सो है अनुप्रास विषमन्त

सम विषमान्त अनुप्रास (अड़िल)

दो दो चरण पदन्त मेल जब होवई
अन्त पदन के वजन अङ्क इक जोवई
अनुप्रास सो नाम जो सम विषमान्त है
हो और नहीं देख यही दृष्टान्त है।

भिन्न तुकान्तानुप्रास

अन्ते पदन का वजन मेल न होवई
अङ्क भिन्न भिन्न लगन सो मेल नहीं
ऐसे जब विषमान्त तब ही देखिए
सो कहिए भिन्न तुकान्त जो अनुप्रास है।

चित्रम्

। पद्मद्याकार हेतुत्वे वर्णानाम् चित्रमुच्यते ।

जिस पद्य को पद्मनादि की शकल में रखा जा सके उसे चित्रालङ्कार कहते है ।

अधम काव्य कवि कहत हैं जो चित्रन की रीत
पञ्च भेद मुख कहत हूं सुन उचटो छिन चीत

भेद

वर्ण चित्र अस्थान पुन फेर अकारम् चीत
गत चित्र भाषा लखो सुन रचने की रीत

क्रमशः उदाहरण--

वर्ण चित्रः- एक अक्षर से छन्द रचना

शव के समीप काँएँ काँएँ करते हुए कवे को देखकर मोर बोला-

केकी कूके काक को काँ कूँ कूके काक
काक कूक को कूक के किकूँ कूके काक ।

अर्थ-केकी=मोर कूके=बोल क क कूँ=कवे को काक=हे कवे का कूँ=किसलिए कूके=बोलता है ।

कवा बोला मैं अपने सजातीय कवों को बुलाता हूं । तब बहुत कवे इकठ्ठे होकर शोर करने लगे । फिर मोर बोला-काक=हे कवे वाणी काँएँ काँएँ करके क्यों शोर करते हो । तब कवा बोला-

पादों को न खावें सत्सङ्ग गङ्गा जावे नहीं
खाने को न माने चीत दाने हीन पाने हैं
पाने हैं सो पेट बीचे, लोगों को दिखाने चीते
शीश को न नीचे कीन्हो काहूं वड़ो जाने हैं
जाने है न काहुं मीत वाणी से न गाने गीत
आँखों से न लाखे साधु गाथे ही न काने हैं
काने हैं न का हूँ हूँ की सूखे मारे जाने है सो
खाने है तो प.पा सङ्गे नीचे जोनी जाने है

पुनः काकोवाच

वचन सरस नह पवन अधिक यह
अधम नयन नह अहत परनं वर
करन वरन तल अहन घरन भल
सिरन धरन पर कड़व फलन वर
उदर खलन भल चरम खलन भल
करन चरन मल नभ पर धर नर
धरम करम नर हरन मरन मल
धरम करम कर सभन सरस नर

उपरोक्त पद्य के अर्थ का सवैया

भगवन्त व सन्त न नयन पिखे तव मोर के पंख से भेद है क्या
तव भेद है क्या घरनाग ते कान में जो जस ना सुन रामलया

जब राम लिया जप ना रसना तब मूक से भी अति नीच भया
अति नीचभया सिर तूम्बर से जो न देव गुरु पद बीच दिया

सत्यर्थे पृथगर्थाया: स्वर व्यञ्जन संहते:
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते
वहैशब्द फिर फिर परै अर्थ और ही और
सो यमक लङ्कार है भेद अनेकन ठौर

उदा०—दयां चक्रे दयाञ्चक्रे, सतां तस्माद् भवान वित्तम

अर्थ—आपने कृपा की, इसीलिए सज्जनों के लिए धन वितीर्ण किया।

सजनो सजनीले वसन भूषणभूष न त्र
रजनी रजनीकी चली अली अली लै सङ्ग

श्लेष

सं—श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते।

हिं०—दोय तीन अरु भांति बहु आवत जा में अर्थ
श्लेष नामता को कहत जिन की बुद्धि समर्थ

उदा०—अप्रगल्भाः पदंन्यासे जननीरागहेतवः
सन्त्येके बहुलालापाः कवयो बालका इव।

अर्थ—शब्दों के चयन में अप्रवीण, लोक निन्दा के कारण, बहुत बोलनेवाले कवि! सीधे कदम रखने में असमर्थ, माता के प्रेम के पात्र, बहुत लालों को पीने वाले) बालकों के समान हैं।

अथ स्थान चित्र सोरठा

एक छन्द मैं होए, ऐक स्थानी वरण सभ
दूसर अङ्क न कोए, स्थान चित्र ताको कहे

उदाहरण

सोरठा

शांध शोध सो दीन दन्तो से दन्ती धुने
सो स्थान दश दीन सात तीन साधे सुने ।इति।

वही अङ्क स्थान पूरब अनुप्रास के प्रसङ्ग में कह आए है। इसलिए वह अङ्क यहाँ नहीं लिखे ।

अथ गत चित्र उगाहा छन्द

सीधा वामा वा अरध उरध पाठ कर नसे और
अथवा सोई पाठ हो गत चित्र तिह ठौर

उदाहरण छन्द

दरशो नाशी होए सभ सो हिरह मानज दरद
दरद टेका मरम को है तभी को मुह जरद
दर न पाप तजी सब हम करन हर ही शरद
दरद मेहिर मर मिटे मुह लखे लेनी फरद

पुनः उल्टा छन्द

दरद जनमा हर हि सो बस हो सीना शरद
दरज हमको भीत हैं को मरम काटे दरद

दरश ही रह नरक मह वस जीत पी पा नरद
दर फनी लेखे लह मटे मरम रह मे दरद

अथ भापा चित्र उगाहा छन्द

भापा यहु देश सकेल कर करे छन्द निरमाण
भापा समता को कहे जो कवि राज़ सुजान

अर्थ स्पष्ट । इति ।

चित्रालङ्कार भो दो प्रकार का है।
अर्थालङ्कार और शव्दालङ्कार।
जो एक ही पद्य प्रश्न होवे पुनः सोई उत्तर होवे ।

यथा उदाहरण ।

दोहा—का महि है कामी सुखी का मन सुख परवीन ।
को कहिए रीव ते सुखी उतर वीच हैं कीन ।

यहाँ पद छेद से उतर है—जैसे कामहि है । और कामन को कीहए । उतर वीच है । इति ॥

जो पद के अर्थ को वतलाए के उतर वीच ही होवे तो उस चित्र का दूसरा रूप है । यथा उदाहरणः—

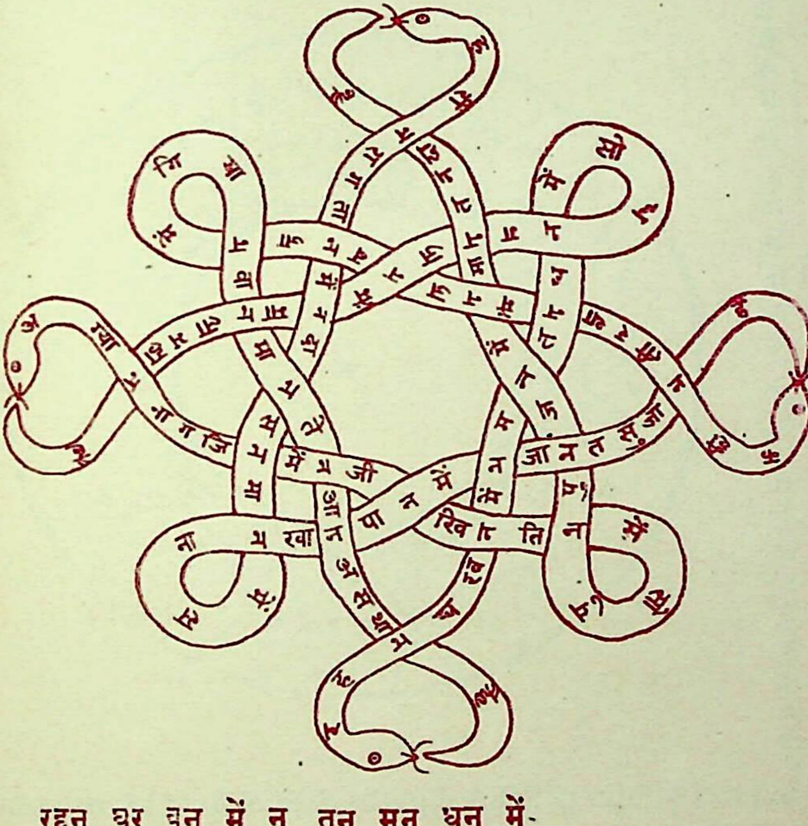
दोहा—खल हिरदा किमते सुखी किस विन खल दुख होत ।
सन्त रिदा किप ते सुखी किस विन सुखिए हौंत ॥

उतर में किस का अर्थ विरोध है । इति ॥

जो अनेक प्रश्नों के उतर एक पद से हीं देने नाम इसका सासनोत्र है अर्थ चित्र का तृतीय रूप है ।

नाग बन्ध

हरि न राग तान में न दान सनमान में
स्नान ध्यान थान में न जानत सुजान हैं
कहीं न तीर्थान में न जन वन जान में
ज्ञान ध्यान मानते न आन अस्थान हैं



रहन घर वन में न तन मन धन में
सो धन गने जन में न मान लाभहान है
अग्यान नाग जिन में न जीन खिन तिन में
सो पुन पुन जनमें न जानत नदान है

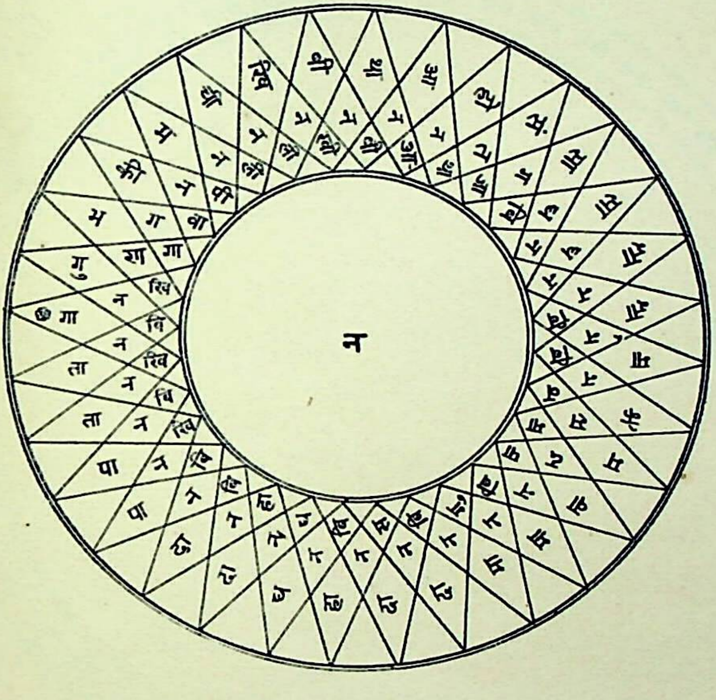
पद्म बन्ध (मनहर छन्द)

हान धन दानविन दान सनमान विनमान गुणवान विन मदपान के समान

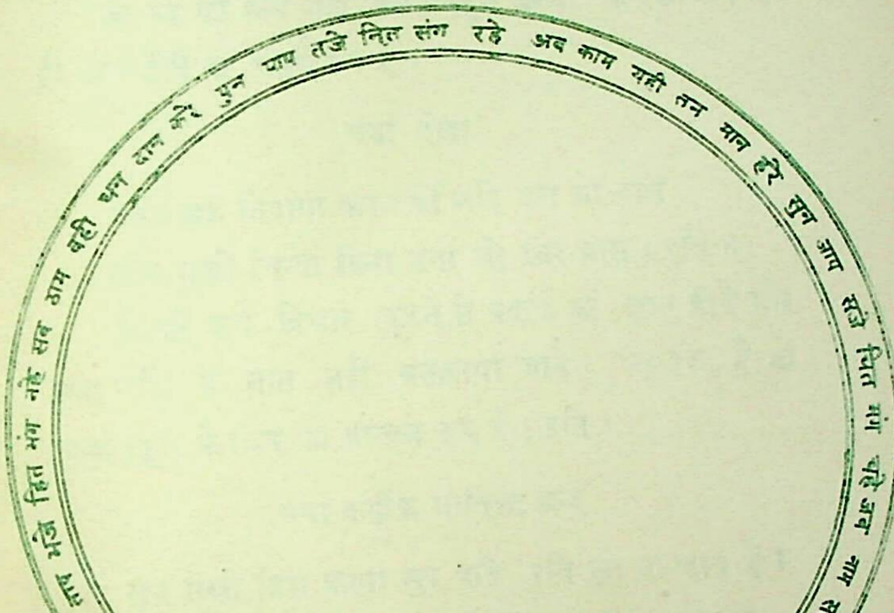
मानव गियान विन ज्ञान विनसाधन न साधन न संगविन होत जानध्यानथान

थानध्यान बीनबीन खिनखीन चीनलीन्ह मनलीन कीनकीन भगवानगुणगान

गान खिन तान विन तान खिन पानविन पानखिन दानविन दानविन धनहान



चक्र बन्ध



इस पद्य को जहां से शुरू करो पद्य पूरा होगा। इस तरह इस चक्र के ४८ पद्य बन सकते हैं।

यथा ददोाह

पुत्र वड़ा को जगत में कञ्ज वन्धु को नाम।
शिव मुनि अरि को नाम है उतर सुनो हरिनाम॥
क्रम से उतर—हरि। सूर्य। कामदेव। इति॥

जो पद का अर्थ नहीं पलटे वहुत प्रश्नों के एक अर्थ से ही उतर होवे वह चतुर्थ रूप है।

यथा दोहा

कवन मुक्त तियागी कवन को नहि जग का दास
कौन सुखी चिन्ता विना उतर जो निर वास। इति॥

जिसके अर्थ विचार करने से पदार्थ का ज्ञान होवे और स्पष्ट रीति से नाम नहीं वतलाया जावे। प्रहेलका है जो अर्थालङ्कार के चित्र का पञ्चम रूप हैं। इति।

यथा वर्णीक गीतिका छन्द

सुन सखी विश करमा सुप पति रति लो न रहात हैं।
दधि सुत नहीं हैं पुर विखे ते कह विधि जात है।
उत्तर--जो धरना धर को भख सुत पुन ता दरोदर तात है।
इस नगर में सो है नहि इह जोगी इस विधि जात है।
अर्थ—धरम

पुनः कवित

गङ्गा से सजाति पति ता सुता को पति जान
ताहि के वहन जा श्रोता जा खलाए हैं

ताकी माई आई डंडी काट के गवाई
नहि खाना कछु पाई जहि दोने सुन पाए हैं
जाने सुनी बात सोई जानत चलन नहीं
औ दोए आए ताको देत न दिखाए है
दोनो देखा आए सोई सकत उठाए नहीं
और दो उठाए ताँते जात हूँ न खाए है

अर्थ—कोई फल आम्रादि ।

पुनः सवैया

षट है चरने चले दो घर में जब मारग में नहि चार लगावे
जब त्याग मले तब षट ही चले कौन चार चले कीव दो चल जावे
जिन के सति श्रवण तीन मुख तिन मात जाए चिख एक लावे
अख दो जिनकी बड धरम किये जिन के जश को अचला जग गावे

अर्थ—श्रवण भक्त

अथ अन्तरालपका सङ्कर छन्द

मलाह तो नित आम की रिपु जोगी कौन विचार ।
जग जनम उतम कौन है किस भजन का अधिकार ।
सभ जगत मरता जास में सो सात्विकी संसार ।
रिपु से पुजीरी देख किस जु पूजमान नवार ।

अर्थ—वारस में अक्षर को अठारवें अक्षर से जो जना करो ऐसे ही कर्म ते कन्नेस अर्थ होवेगें–पुर–जार–मार–काम देव । नर । नर । वार दिन ।

पुनः सारे जोउ के पुजा मान निवार। इति ॥

पुना सवैया

कौन करे करनी रण में पुन चन्दर की ओर चुकोर करा को

कृतन्त उदन्त सुन्नत पुरा जिन्दडी पंछतंन्त से अन्त करा की

को दुर्वासा के पाछे लगा पुन जनम की हेतु है की करमा की

बुधिमान विचार लखो है क्या कहो सूर पिखा रोवती चक्रबाकी

अर्थ चतुर्थ पंक्ती के द्वितीय विश्राम में स्पष्ट है। इति

पुनः सवैया

वह की वस्तु जो घटे नित ही, जु वधे न घटे वह की जग सारे

एक बात जु होवत हैं सभको दिलजाद नहीं सभ नैन निहारे

एक बात न होत सदीव कभी पर उदम फेर करे नर हारे

बुधिमान कहो अवधं रवधं मरना जग जीवन उतर चारे

॥ अर्थ पूर्ववत ॥

पुनः प्रहेलिका

सवैया

दो भुज है पर पुरख नहीं सुग्रीव है बाली भगत न मानो।

शीश विना पर राहु लखो जिन चरन विना जिन कृष्ण पछानो

सीता हरे पर रावण ना बिन स्वास सराङ्क दली जिन जानो

ता करते कुल भगत भयो जिसका जग में जश होत महानो

अर्थ—कुडतादि जल का वस्त्र

अथ शब्दालङ्कार जो तस्वीर पर लिखे प्रश्न का तस्वीर में ही उतर देना वह चित्रोत्तरालङ्कार है कई कवि इसको सूक्ष्मालङ्कार भी कहते हैं यदि विचार कर के देखे तो चित्रालङ्कार से भिन्न नहीं है किन्तु उसके अन्तर भूत ही है।

अब कछुक चित्रालङ्कारों।—१ भक्तवेवदेव

जो पूतनामारण में सुदक्ष विपक्ष काकोदर को विलक्ष किया जिन्हों ने वह तापहारी, हरे हमारी प्रभु पीर सारी राम कृष्ण का शिलष्ट वर्णन है। राम पक्ष में पूतनामा=पवित्र नाम वाले रण में सुदक्ष=युद्ध में चतुर काकोदर = जयन्त विलक्ष=लज्जित। श्री कृष्ण पक्ष में पूतना=राक्षसी मारण में सुदक्ष=चतुर काकोदर=कालीनाग

अर्थालङ्कार

उपमा—उपमानेन सादृश्यमुपमेयस्य यत्र सा
प्रत्ययान्यय तुल्यार्थ समासैरुपमा मता

हि०—जहां दुहन को देखिये सोभा वरनि समान
उपमा भूषन ताहि को भूषण कहत सुजान

उदा०—चन्द्र वद्वदनं तस्याः नेत्रे नीलोत्पले इव
पक्व विम्ब हसत्योष्ठः पुष्पधन्वधनुर्भुवौ

उस का मुख चन्द्र के सामान, नेत्र नीले कमल के समान और होठ पक्के हुए विम्ब फल को तिरस्कृत करने वाले हैं, तथा उस की भौ हैं कामदेव के धनुप के तुल्य है

प्रणवौ प्रथम भरत के चरणा, जासु नेम व्रत जाय न वरणा
राम चरण पंङ्कज मन जासु, लुब्ध मधुप इव तजइ न पासु

रूपक

ल० तद्रूपकमभेदाय उपमानो पमेययोः

हि० जहां दुहन को भेद नहीं, वरनत सुकवि सुजान

रुपक भूषण ताहि को, भूषण करत बखान
कर्णान्धकारालक राज माना, निबद्ध तारास्थि मणिः कुतोऽपि
निशा पिशाची व्यचरद्धाना, महान्तयुलूक ध्वानि केत्कृतानि

अर्थः—चारों ओर फैले हुए अन्धेरे रुपी केशों से सुशोभित, तारे रुप हड्डियों की मणियों को गले में धारण किए हुए, तथा बहुत ऊंचे उठी हुई उल्लुओ के शब्द रुपी भाँय भाँय आवाज में युक्त, रात्रिरुपी राक्षसी कही से आ कर विचरण कर रही थी।

उदित उदय गिरि मंचपर रघुबरबाल पतङ्ग
विकसे सन्त सरोज सब हरषे लोचन भृङ्ग

आपह्नुति

प्रकृतं प्रतिषिध्यान्य स्थापनं स्यादपहुतिः
मिथ्या की जै सत्य को, सत्यजु मिथ्या होत
आपह्नति पटभेद को, बरनत हैं कवि गोत्

(उदा०) नेदंनभो मण्डलमम्बुराशि, नैतश्चतारा नव फेन भङ्गः
नायं शशिः कुण्डलितः फणीन्द्रो, नासौ कलङ्कः शयितोमुरारिः

अर्थ—यह आकाश नहीं सुमुद्र है यह तारे नहीं आपितु झाग हैं यह चाँद नहीं कुण्डली बना हुआ शेषनाग है यह कलङ्क का चिह्न नहीं अपितु भगवान शयन कर रहे हो

हि०--नहिं सखि राधा वदन यह है पूनो का चाँद

उत्प्रेक्षा

ल०— संभावनमथो त्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेनयत

हि०— आन बात का आन में जहँ सभावन होय
वस्तु हेतु फलयुत कहत उत्प्रेक्षा है सोय

उदा०—लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षत वाञ्जनं नभः
असत्पुरुष सेवेव दृष्टि त्रिफलतां गतः

अन्धेरा मानो अङ्गों परलेप कर रहा है आकाश मानो कज्जल की वर्षा कर रहा है इस लिये नजर दुर्जन पुरुष का सेवा की तरह निरर्थक हो गई है।

सोहत ओढे पीत पट स्याम सलौने गात
मनौ नील मणि शैल पर आतप परयो प्रभात

तुल्य योगिता

ला०—पदार्थानाम प्रस्तुतानामन्येषाँ वा यदा भवेत
एक धर्माभि सम्बन्धः स्यात्तदा तुल्ययोगिता

हि०—तुल्ययोगिता तहं धर्म जह वन्र्यन को एक
कहूँ अवन्र्यन को कहत भूषण वरान अनेक
तमसा लुप्य मानानां लोकेऽ स्मिन्माधु वर्त्मनाम्
प्रकाशनाय प्रभुता भानोस्तव च दृश्यते।
सिव सरजा भारी भुजन भुवभर धर्यो समाग
भूषण अब निहाचन्त हैं सेसनाग दिग्नाग

अप्रस्तुत प्रशंसा

प्रशंसा क्रियते पत्रा प्रस्तुतस्यापि वस्तुनः
अप्रस्तुत प्रशंसाँ तामाहुः कृतधियोयथा
प्रस्तुत लीन्है होत जहँ अप्रस्तुत परसंस
अप्रस्तुत प्रसंस सो कहत सुकवि अवतंस
स्वैरं विहरति स्वैरं शेते स्वैरं चजल्पति
भिक्षुरेकः सुखी लोके राज चोर भयोज्भितः

संसार में राजा एवं चोर के भय से मुक्त केवल भिक्षु ही सुखी है जो इच्छानुसार घूमता, सोता और बोलता है
कोई कहे विधि जब रीत मुखकीन्हाँ. मार भाग शशि कर हरलींन्ह।
छिद्र सा प्रकटइन्दु उरमाही, तिहिं मग देखिए नभ परछाँही

विभावना

विभावना विना हेतो कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते
ल०– भयौकाज विन हेतुही वरनत है जोहि ठौर
तहँ विभावान होत हैं कवि भूषण सिर मौर

उदा०–अनध्यनाद्विद्वांसो निर्द्रव्य परमेश्वरः
अनलंकार सुभगाः पान्तु युष्मान जिनेश्वरः
विना पढ़े विद्वान, विना धन ऐश्वर्य शाली और विना आभूषणों के प्रिय दर्शन जिनेश्वर आप की रक्षा करें
विनु पद चलै सुनै विनुकाना, कर विन कर्म करे विधिनाना
आनन रहित सकल रसभोगी, विनवाणी वक्ता बड़योगी

अतिशयोक्ति

वस्तूनां वक्तुमुत्कर्षमसंभाव्यम यदुच्यते
वदन्त्यतिशयाख्यं तमलङ्कारं बुधा तथा
जहां अत्यन्त सराहिबो, अतिशयोक्ति सुकहन्त
रुप भेद संबन्ध अरु आक्रम चयल अत्यन्त
त्वद्दारितारि तरुणी श्वमितानलेन
सम्मूर्छितोर्मिषु महोदधिषु क्षतीश
अन्तर्लुठ द्गिरिपरस्पर शुङ्ग सङ्ग
घोरारवैर्मुररिपोरपयाति निद्रा ।

हे राजन ! तुम्हारे द्वारानष्ट हुए शत्रु की स्त्रियों के उच्छ्वास वायु से बढ़ी हुई लहरों वाले समुद्र में जल के बीच इधर उधर हिलने के कारण परस्पर टकराए हुए शिखरों से उत्पन्न हुई घोर ध्वनियों के द्वारा विष्णु की निद्रा टूट जाती है
फबि फहरें अति उच्च निसाना, जिनमह अटकत विवध विमाना

एकावली

पूर्व पूर्वार्थ वै शिष्टयं निष्ठानामुत्तरोत्तरम
अर्थानां या विरचना बुधैरेकावली मता ।

अर्थ—जिस जगह पहले पहले कहे हुए उत्कृष्ट पदार्थों की उत्तरोत्तर पूर्वक रचना होती चली जाए उसे विद्वान एकावली अलङ्कार कहते हैं ।

उदाहरण—देशः समृद्धनगरो नगराणि च सप्त भूमि निलयानि

निलयः सलील ललना ललनाश्चात्यन्तकमनीयः

अर्थः--सम्पति शाली नगरों से युक्त देश ही उत्तम होता है नगर भी मत मंजले मकानों से युक्त हों, वे मकान भी विलास युक्त रमणियों से परिपूर्ण हों और रमणी भी अत्यन्त मनो हारिणी हों।

सवैया

भाषा उदाहरण--

विद्या वही जातै ज्ञान बढ़े अरु ज्ञान वही करतव्य सुझावै।
है करतव्य वही जग में दुख आपने बन्धुन को विनसावै।
बन्धु वही जो विपत्ति हरै और विपत्ति वही जोकि वीर बनावै
वीर वही अपने तन को धन को मन को पर हेत लगावै।

अर्थ स्पष्ट है इस लिये लिखा नहीं

सार

यत्र निर्धारितात् सारात सारं सारं सारं ततस्तत
निर्धार्यते यथ शक्तितत सारमिति कथ्यते

अर्थ–जिस रचना में, उस निश्चित उतम वस्तु से और अधिक उत्कृष्ट वस्तु का यथा शक्ति निर्धारण किया जाए उसे सार नामक अलङ्कार कहते हैं।

उदाहरण– संसारे मानुष्यं सारम् मानुष्य के तु कौलीन्यम
कौलीन्य धर्मित्वं धर्मित्वे चापि सदयत्वम्

अर्थ–संसार में मनुष्य योनि में जन्म होना उतम है और वहाँ भी श्रेष्ठ कुल का मिलना इस पर भी धर्मात्मा होना धर्मात्मा होने पर भी दयालु होना अति उतम है।

अन्योदाहरण— श्री कृष्ण के प्रति राधिका की उक्ति

दोहा— शिला कठोरी काठते, ताते लोहे कठोर
ताहू ते कीनो कठिन, मन तुम नन्दकिशोर ॥

अर्थ स्पष्ट है अतः हमने लिखा नहीं

समुच्चय

एकत्र यत्र वस्तूनामनेकेषां निबन्धनम् ।
अत्युत्कृष्टापकृष्टानां तं वदन्ति समुच्चयम् ॥

अर्थ—जिस रचना में अनेक उत्कृष्ट वा अपकृष्ट गुण क्रिया रूप अनेक वस्तुओं का एक साथ वर्णन पाया जाय वहाँ समुच्चय अलङ्कार होता है।

उदाहरण— ग्रामे वासोनायको: निर्विवेकः
कौटिल्यानामेकपात्रं कलत्रम् ।
नित्यं रोगः पारवश्यञ्च पुंसामेतत्सर्व
जीवतामेव मृत्युः ॥

अर्थ— गांव में रहना; वहां मूर्ख मालिक का होना अपनी भार्यां का कपटी होना, सदा व्याधि का रहना, तथा पराधीनता, ये सब जीवित पुरुषों का मरण ही है

उदाहरण—दोहा पावस के आवत भये श्याम मलिन नभ—थान
रक्त भये पथिकन हृदय, पीत कपोल तियान

अर्थ—वर्षा ऋतु के आते ही आकाश में मलिनता, पथिकों के हृदय में रक्ता (अनुराग) और स्त्रियों के कपोलों पर पतिता (पिलाई) आ गई। यहां अनेक गुणों का एक साथ होना वर्णित हे।

अब अन्तिम वस्तु निर्देशरूप मङ्गल कर ग्रन्थ को समाप्ति करते हैं ।

हरां हूँ जो कहते है ला है मकां पर उसके सिवा कोई घर ही नहीं
कुल दुनियाँ कहे वोह निर्गुण खुदा कोई ऐसा तो हुनर वर ही नहीं
पर शितम जो उसके कहें अकरे पर ऐसा कोई कारीगर ही नहीं
हरां हूँ जो कहते जुवाँ है विना विना हुक्म हिलता पत्र बी नहीं
शितम हैं जो कहते विना चशम के पर ऐसी किसी की नजर ही नहीं
विना दस्त कहे तो सगासर हैं खलत सिवा उस दीये तो सबर ही नहीं
अफसोस जो कहते विना गोस के जिसकी न सुने वोह बशर ही नहीं
है मन्दिर मसीतों में जलवा कुना पर पीरों सिवा तो खबर ही नहीं
वोह मालक हैं कुल आलम का पर उसको किसी का खतर ही नहीं
वोह मा हरदम है सब के हैं सिर पर रहे पर त्वजब हैं उसके तो सर ही नहीं
है हर वसर का वोह है एको पिदर पर त्वजब है उसके पिदर ही नहीं
मैं देखूं वो मक्के व गङ्गा रहे विना उसके खाली ठवर ही नहीं
अगर दिल का आईना सुफा ना हुआ है तो दिलमें खुदा तो खबर ही नहीं
जब दूई का पदा उठा ही दिया तो खुदा और बशर में कसर ही नहीं
अगर दिल सुफा तो खुदा हर जगह कहीं करना तो पड़ता सफर ही नहीं
अगर जिंदा बसर तो है कहना क्या मगर खाली खुदा से कबर ही नहीं
कुल भालो मुलक का वोह मालक वी है पर जेरों से करता जबर ही नहीं
कुल रैय्यत की रोजी राजक वी है पर करता बुरों से नफर ही नहीं
मेहर दिल सुफा तो खुदा हर जगह कहीं करना तो पड़ता सफर ही नहीं

दोहा

प्रबन्ध[१] रूप सु सिन्धु में छन्द अम्भ[२] सम जान
जान कविन्द सु कन्द[३] सम छन्द अम्ब वर्षान
खान किधों हम चीन कर लीन लून जिम बिन्द[४]
बिन्द[५] छन्द कछु भेद को मन में कीन आनन्द
नन्द[६] के नन्दन वन्द पद कीन सु विघन निकन्द[७]
कन्दानु[८] कम्पा अम्भ से उपजत अङ्कर छन्द
छन्द भेद जग वहु विधि वर्णन करन कविन्द
विन्द यथामति में कहे यथा सिन्धु में विन्द
विन्दु दोष गुण करत हैं खल उपहास अर निन्द
निन्दत इन्द दनिन्द शिव अज गुरु अरु गोविन्द

नहि पर यत्न संसारमे जहि परितोष संसार
बुरे बुराई को करे भले करें उपकार

---

१ छन्द ग्रन्थो २ जल छन्द रुपी। ३ कवि वाद ल ाम है। ४ क्रिण का। ५ जाग के। ६ बाबे नन्द के पुत्र क्रिष्ण जी। ७ नाश। ८ कृपा रूप बादल से छन्दों के सूक्ष्म रूप ही जलते स्थूल अङ्कर रूपी छन्द उपजते है।

स्वयं मन प्रति यह दुनियां

यह चलती फिरती दुनियां है इस रहने का इतवार ना कर ।
जरा गौर से आगे कदम उठा तूँ अपना गरम बाजार ना कर ।टेक।
यह मुलक सराय दी वसती है एथे सौदा दस्त वदस्ती है ।
किते महँगी ते किते मस्ती है घड़ी पल दा कुझ अधार ना कर ।
इक बन्दगी दी सिफत सी बन्दे में सो भूल गई लग गन्दे में ।
इस दुनियां गोरख धन्धे में तूँ अपना आप ख्वार ना कर ॥
यह दुनियां आवन जानी है दिल चशपी खुआब कहानी है
बस चारिक रोज महमानी है तूँ अपना आप बेजार ना कर ॥
तेरी सूरत तो इनसानी है करतूत ना कर हैवानी है
फिर आखिर होत हैरानी है कुछ नेकी कर वदकार ना कर ॥
कोई उजड़े ते कोई वसदे हैं कोई गेंदे ते कोई हसदे हैं
कोई छुटदे ते कोई फसदे हैं तूँ अपना आप फरार ना कर ॥
यह दुनियां मुलक सराय है कोई आए ते कोई जाए है
कोई कब्जे खूब जमाए है जरा होश में आ तकरार ना कर ॥
यह जितना कुड़म कबीला है खुद गरज परस्त बसीला है
तू अपना कर कुछ हीला है ऐसे नकली रिसतेदार ना कर ॥
तूँ दुई दा कर सैर वही सभ अपने है कोई गैर नहीं
सभ साजन हैं कोई वैर नहीं तू दिल से नफरत खार ना कर ॥
तूँ खटिया की तेरा मूल गया तेरा लाल गाँठ से खूल गया
तूँ असली भूल असूल गया ऐसे गली कोट उसार ना घर ॥

तुमे सुखन शिकम दे याद नहीं ऐसे जनम नूँ कर बरबाद नहीं
फिर सुननी किसे फ़ायाद नहीं हुन झूठे कौल इक़रार ना कर ॥
जरा जाग मुसाफिर भोर हुआ अब चिड़ीया का गुल शोर हुआ
तुम्हें घोर नींद का जोर हुआ उठ गाफिल नींद प्यार ना कर ॥
तू गाफिल सेज पिया मल के तेरे साथी दूर गये चल के ॥
पछतावेंगा उठ के मल के फिर मुश्कल जितना हार ना कर ॥
एथे जीवन की भखासा है ज्यों पानी वीच पतासा है
यह दुनियां अजब तमाशा है एथे रहने दा इजहार ना कर ॥
यह दुनियां मानिन्द शीसे है जैसी शकल करो वैसी दीखे है
वह भरने है जो कीते है तूँ अपनी वद रफ़तार ना कर ॥
यह दुनियां हक अदालत है कर अपनी आप वकालत है
तेरी बिगड़ी जांदी हालित है वद अमलों से गुफ्तार न कर ॥
तू भौर फुल ते जान ना खो और दीपक दा परवान न ही
एक तरफ प्रीतिवान है जो तूँ उसनूँ वी दिलदार ना कर ॥
खुद गरज परसती जारों से वद सोहवत मूढ़ गवारों से
वे कदर दान सुत नारों से तू प्यार वी वे मिकदार ना कर ॥
कर वन्दगी जे तू वन्दा हैं विन वन्दगी ते तू गन्दा हैं
तेरे गल विच पैंदा फन्दा है तू अपना आप लचार ना कर ॥
यह दुनियां एक नजारा है कोई दुश्मन ते कोई प्यारा है
कोई मिठा ते कोई खारा है तू दुई दिलों निवारन कर ॥
यह दुनियां जार दो सूही है किते वोह में है किते तू हीं है
सभ ताने पेटे रूई है जब देखा खूब विचारन कर ॥

यह दुनिया रङ्ग विरङ्गी है किते मन्दी ते किते चङ्गी है
किते सुखदाई किते तङ्गीं है तू सच्चिदानन्द उचारन कर
यह दुनियाँ क्या इक खेल बना किते विछुड़न ते किते मेल बना
किते खुशदिन है किते जेल बना सभ अपने २ कारन कर
यह जगत मुसाफिर खाना है किते आना किते जाना है
एथे हर दम नहीं ठिकाना है तूं आपना खेल खिलार ना धर
यह दुनियाँ बेड़ी पूर भरे कोई पार गए काई विच अड़े
पर तैनूं किससे मतलब की तू अपने अमल ते तारन कर
यह दुनिया मेहर खेल हुआ कदे विछुड़न ते कद मेल हुआ
कदे रूख सुद ते कदे जेल हुआ यह बाज जीत न हार न कर

यथा कवित

राजी न सुरान पर चोर साच बोल पर
काक जिम कोल पर कूकत कू काजी है।
काजी मन सूर पर सूर ज्यों कपूर पर
कूर कैयर सूर पर धावत कु पाजी है।
पाजी ज्यों विषणु पर कंस ज्यों कृष्ण पर
दैत्य ज्यों जिमन[१] पर भापत न लाजी है
लाज हीन मुनि पर पापी जिम पुन्नी पर
ओगणी त्यों गुणी पर देखत निराजी है

अब हम कृतघ्नता की निवृति के लिये अन्त में श्री रामचन्द्र जी का अन्तममङ्गल करते हैं।

---

१ इन्द्र

यथा सवैया

तारी है सूप नखा जिस ने, जिसनेम से कीरति न विस्तारी
तारी शिला ऋषि की पत्नी, पत्नी चनी भील सुता निरतारी
तारी करी निज को ति की, रति कीनत दासन पार उतारी
तारी बजी विस्मय सुन मो, सुनमो नहिं राम समान दतारी

पुनः दवैया

हे गुरु नानक मैं नहिं जानत जप तप योग विरागा ।
धर्म कर्म का मर्म न पूरा नहि मन नम अभागा ।
जाप पाप को नाश करते हैं मैं सुन्यों निज कानी
दास निराश रहे जे आपका मुझ को या तुम हानी

पुनः कवित

श्री गुरु गोविन्द सिंह हिन्द के बचान वाले
पाप के मिटान वाले पर उपकारी है
हिन्दु ते मुसलमान जान दे जहान सारे
जुलम हटान हारे उपमा न्यारी है
अजब नजारा मारा साज के जगत भारा
आप कर्तार रखदे खबर दारी है
और सभ छोड़ कर दोनों हथ जोड़ कर
शीश को निवाए कर वन्दना हमारी है

इति कविवर मेहरसिंहेन विरचि ते भाषा पिङ्गल प्रस्तार
॥ छन्द दिवाकरे समाप्तम् ॥

शुभ मस्तु

मुद्रक एवं प्रकाशक महन्त वरयाम सिंह जी ने यह ग्रन्थ
इन्डियन प्रिन्टिङ्ग प्रैस पानीपत से छपवा कर
ऋषि आश्रम जगराँव से प्रकाशित
किया ।

प्राप्ति स्थान :--
श्री ईसरदास दरबारासिंह गजसिंह पुर जिला गंगानगर
(राजस्थान)